12
इस्लाही
ख़ुतबात
Maktab_e_Ashraf
जस्टिस मोलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

इस्लाही ख़ुतबात

जिल्द - 12

तक़रीरें

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तकी साहिब उस्मानी

हिन्दी अनुवादः मुहम्मद इमरान कासमी

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद

देहली-110006

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	इस्लाही ख़ुतबात जिल्द- 12
तक़रीरें	मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	मई 2004
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-2442408)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, उर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली-110006

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

पेश लफ़्ज़

हज़रत मौलाना मुहम्मद तकी साहिब उसमानी

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد للہ و کفیٰ وسلام علی عبادہ الذین اصطفیٰ، امابعد:

अपने बाज़ बुज़ुर्गों के इरशाद की तामील में नाचीज़ कई साल से जुमे के दिन अस्र के बाद जामा मस्जिद बैतुल मुकर्रम गुलशन इक़बाल कराची में अपने और सुनने वालों के फ़ायदे के लिए कुछ दीन की बातें किया करता है। इस मज्लिस में हर तब्क़ा-ए-ख़्याल के हज़रात और औरतें शरीक होते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! अह्क़र को ज़ाती तौर पर भी इसका फ़ायदा होता है और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से सुनने वाले भी फ़ायदा महसूस करते हैं। अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले को हम सब की इस्लाह का ज़रिया बनाएँ। आमीन।

अह्क़र के ख़ुसूसी मददगार मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल-महू ने कुछ मुद्दत से अह्क़र के उन बयानात को टेप रिकार्डर के ज़रिये महफ़ूज़ करके उनके कैसेट तैयार करने और उनको शाया करने का एहतिमाम किया, जिसके बारे में दोस्तों से मालूम हुआ कि अल्लाह के फ़ज़्ल से उनसे भी मुसलमानों को फ़ायदा पहुँच रहा है।

उन कैसेटों की तायदाद अब कई सौ हो गयी है। उन्हीं में से कुछ कैसेटों की तक़रीरें मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल-महू ने लिख भी लीं और उनको छोटे छोटे रिसालों की शक्ल में शाया किया। अब वह उन तक़रीरों का मजमूआ़ "इस्लाही ख़ुतबात" के नाम से शाया कर रहे हैं।

उनमें से बाज़ तक़रीरों पर नाचीज़ ने नज़रे-सानी भी की है, और मौसूफ़ ने उन पर एक मुफ़ीद काम भी किया है, कि तक़रीरों में जो हदीसें आती हैं उनको असल किताबों से निकाल करके उनके हवाले भी दर्ज कर

दिए हैं, और इस तरह उनका फ़ायदा और ज़्यादा बढ़ गया है।

इस किताब के मुताले (अध्ययन) के वक़्त यह बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि यह कोई बाक़ायदा तसनीफ़ नहीं है, बल्कि तक़रीरों का ख़ुलासा है जो कैसेटों की मदद से तैयार किया गया है। इसलिये इसका अन्दाज़ तहरीरी नहीं बल्कि ख़िताबी है। अगर किसी मुसलमान को इन बातों से फ़ायदा पहुँचे तो यह महज़ अल्लाह तआ़ला का करम है, जिस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए। और अगर कोई बात ग़ैर मोहतात या ग़ैर-मुफ़ीद है तो वह यक़ीनन अह्क़र की किसी ग़लती या कोताही की वजह से है। लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! इन बयानात का मक़सद तक़रीर बराय तक़रीर नहीं, बल्कि सब से पहले अपने आपको और फिर सुनने वालों को अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह करना है।

अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इन ख़ुतबात को ख़ुद अह्क़र की और तमाम पढ़ने वालों की इस्लाह (सुधार) का ज़रिया बनायें, और ये हम सब के लिए ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत साबित हों। अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ भी है कि वह इन ख़ुतबात के मुरत्तिब और नाशिर (प्रकाशक) को भी इस ख़िदमत का बेहतरीन सिला अ़ता फ़रमाएँ। आमीन।

मुहम्मद तक़ी उस्मानी
दारुल उलूम कराची 14

بسم الله الرحمن الرحيم

प्रकाशक की ओर से

अल्हम्दु लिल्लाह "इस्लाही खुतबात" की बारहवीं जिल्द आप तक पहुँचाने की हम सआदत हासिल कर रहे हैं। ग्यारहवीं जिल्द की मकबूलियत और फ़ायदेमन्द होने के बाद मुख़्तलिफ़ हज़रात की तरफ़ से बारहवीं जिल्द को जल्द से जल्द शाया करने का शदीद तक़ाज़ा हुआ, और अब अल्हम्दु लिल्लाह, दिन रात की मेहनत और कोशिश के नतीजे में सिर्फ़ चन्द माह के अन्दर यह जिल्द तैयार होकर सामने आ गयी। इस जिल्द की तैयारी में बिरादरे मुकर्रम मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब ने अपनी मसरूफ़ियात के साथ-साथ इस काम के लिए अपना क़ीमती वक़्त निकाला, और दिन रात की मेहनत और कोशिश करके बारहवीं जिल्द के लिए मवाद तैयार किया। अल्लाह तआ़ला उनकी सेहत और उम्र में बरकत अ़ता फ़रमाए, और मज़ीद आगे काम जारी रखने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

हम जामिया दारुल उलूम कराची के उस्तादे हदीस जनाब मौलाना महमूद अशरफ़ उस्मानी साहिब मद्दज़िल्लहुम और मौलाना अ़ज़ीज़ुर्रहमान साहिब मद्दज़िल्लहुम के भी शुक्र गुज़ार हैं, जिन्होंने अपना क़ीमती वक़्त निकाल कर इस पर नज़रे-सानी फ़रमाई, और मुफ़ीद मश्विरे दिए, अल्लाह तआ़ला दुनिया व आख़िरत में उन हज़रात को बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाए। आमीन।

तमाम पढ़ने वालों से दुआ़ की दरख़्वास्त है कि अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले को और आगे जारी रखने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, और इसके लिए साधनों और असबाब में आसानी पैदा फ़रमाए। और इस काम को इख़्लास के साथ जारी रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

......प्रकाशक

ख़ुतबात की मुख़्तसर फ़ेहरिस्त

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(127) जनाज़े के आदाब और छींकने के आदाब

(129) हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें

(130) यह दुनिया खेल-तमाशा है

(131) दुनिया की हक़ीक़त

क्र.स.	क्या?	कहाँ?

(132) सच्ची तलब पैदा करें

(133) कुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़ और दुआ

खुशनसीबी की तीन निशानियाँ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

हदीसः हज़रत नाफ़ेअ़ बिन अ़ब्दुल हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः मुसलमान की खुशनसीबी में तीन चीज़ें ख़ास महत्तव रखती हैं। यानी ये तीन चीज़ें मुसलमान की खुशनसीबी का हिस्सा हैं। पहली चीज़- बड़ा-सा (खुला हुआ) मकान। दूसरी चीज़- नेक पड़ोसी। तीसरी चीज़- खुशगवार सवारी। ये तीन चीज़ें मुसलमान की खुशनसीबी का हिस्सा हैं। यानी अगर इनसान को ये तीन चीज़ें हासिल हो जाएँ तो ये दुनिया की नेमतों में बड़ी अज़ीम नेमत हैं। (मुस्नद अहमद जिल्द 3 पेज 407)

पहली चीज़ः बड़ा और खुला हुआ घर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने घर के सिलसिले में जिस चीज़ की तारीफ़ बयान की वह उसकी कुशादगी यानी बड़ा और खुला होना है। घर की ख़ूबसूरती, उसकी साज सज्जा, और उसकी टीप-टॉप एक बेकार की चीज़ है। असल चीज़ मकान का बड़ा यानी कुशादा होना है जिसकी वजह से इनसान तंगी महसूस न करे और आराम व सुकून के साथ उसमें ज़िन्दगी गुज़ार सके।

वुज़ू के बाद की दुआ

इसलिए वुज़ू के बाद जो दुआ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है, वह यह है:

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी व वस्सिअ् ली फ़ी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी" (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 3633)

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा दीजिए और मेरे घर में वुस्अ़त अ़ता फ़रमाइये और मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमाइये।

गोया कि वुज़ू के बाद आप तीन चीज़ें माँगा करते थे। उनमें से एक गुनाहों की माफ़ी है। यह ऐसी चीज़ है कि अल्लाह तआ़ला अ़ता फ़रमा दें तो बस आख़िरत संवर गयी। इसलिए पहला सवाला आख़िरत की दुरुस्तगी का फ़रमाया और दुनिया में अल्लाह तआ़ला से दो चीज़ें माँगीं, एक घर की कुशादगी, दूसरे रिज़्क़ में बरकत। इससे मालूम हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कुशादा यानी बड़ा और खुला हुआ मकान पसन्द था।

इनसान का अपना घर हो

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि लोग दुनिया की बहुत-सी चीज़ों के पीछे दौड़ते हैं और लोगों की इच्छा यह होती है कि अगर पैसा मिल जाए तो फ़लाँ चीज़ हासिल कर लें और फ़लाँ चीज़ हासिल कर लें। लेकिन दुनिया की ज़रूरियात में जिस चीज़ की ख़ास अहमियत (विशेष महत्तव) है और जिस चीज़ की इनसान को फ़िक्र करनी चाहिए, वह यह है कि इनसान का अपना घर हो और रिहाईश के सिलसिले में वह किसी का मोहताज न हो। इसकी कोशिश इनसान को करनी चाहिये और इस खाते में जो पैसा लगा वह ठिकाने लग गया और बाक़ी बेकार की चीज़ों में इनसान जो कुछ ख़र्च करता है उसका कुछ हासिल नहीं। बहरहाल! घर की वुस्अ़त एक नेमत और सआ़दत है जिसकी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वुज़ू के वक़्त दुआ फ़रमाई।

हर अंग धोने की अलग दुआ

यहाँ यह बात अ़र्ज़ कर दूँ कि वुज़ू के वक़्त आ़म तौर पर कुछ दुआ़एँ मशहूर हैं कि फ़लाँ अंग धोते समय फ़लाँ दुआ़ माँगी जाए। ये दुआ़एँ बड़ी अच्छी हैं। मसलन जब कुल्ली करे तो यह दुआ़ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म अ-इन्नी अ़ला तिला-वति ज़िक्रि-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! अपने ज़िक्र की तिलावत करने पर मेरी मदद फ़रमा। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब नाक में पानी डाले तो यह दुआ़ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म ला तहरिम्नी राईहतल् जन्नति"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे जन्नत की ख़ुशबू से मेहरूम न फ़रमाइये।

और जब चेहरा धोए तो यह दुआ़ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म बय्यिज़् वज्ही यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व तस्वद्दु वुजूहुन्'

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा चेहरा उस दिन सफ़ेद कर दीजिए जिस दिन बहुत-से चेहरे सफ़ेद होंगे और बहुत-से स्याह होंगे, यानी आख़िरत में।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब दाहिना हाथ धोए तो यह दुआ़ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म अअ्तिनी किताबी बि-यमीनी व हासिब्नी हिसाबंय्-यसीरा"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरा आमालनामा मेरे दाहिने हाथ में अ़ता फ़रमाइये। क्योंकि जो नेक बन्दे हैं उनको आमालनामा दाएँ हाथ में दिया जाएगा। और मेरा हिसाब आसान फ़रमा दीजिए।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब बायाँ हाथ धोए तो यह दुआ़ करे:

'अल्लाहुम्-म ला तुअ्तिनी किताबी बिशिमाली व ला मिंव्वरा-इ ज़हूरी'

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आख़िरत में मेरा आमालनामा मुझे बाएँ हाथ में न दीजिए और न मुझे मेरी पीठ की तरफ़ से दीजिए। क्योंकि काफ़िरों और जहन्नमियों को उनका आमालनामा पीछे से बाएँ हाथ में दिया

जाएगा। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और सर का मसह करे तो यह दुआ करे:

"अल्लाहुम्-म अज़िल्लिनी तह्-त ज़िल्लि अ़र्शि-क यौ-म ला ज़िल्-ल इल्ला ज़िल्लु अ़र्शि-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे उस दिन अपने अ़र्श का साया अ़ता फ़रमाइये जिस दिन आपके अ़र्श के साए के अ़लावा कोई साया नहीं होगा। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

जब कानों का मसह करे तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनल्लज़ी-न यस्तमिऊनल् क़ौ-ल फ़-यत्तबिऊ-न अह्स-नहू"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे उन लोगों में से कीजिए जो सुनी हुई बातों में से अच्छी बातों की पैरवी करते हैं। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस 26991)

जब गर्दन का मसह करे तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म ग़श्शिनी बि-रह्मति-क"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! आप मुझे अपनी रहमत में ढाँप लीजिए।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26990)

और जब दाहिना पाँव धोए तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्-म सब्बित् क़-दमय्-य अ़लस्सिराति यौ-म तज़िल्लु फ़ीहिल् अक़्दामु"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे क़दम पुलसिरात पर जमाये रखिये उस दिन जिस दिन बहुत-से क़दम डगमगा जाएँगे। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस 26990)

और जब बायाँ पाँव धोए तो यह दुआ पढ़े:

"अल्लाहुम्मज्अ़ल् ली सअ्यम्-मश्कूरंव् व ज़म्बम्-मग़्फ़ूरंव् व तिजारतल् लन् तबूर"

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मेरे अ़मल को क़बूल फ़रमा लीजिए और मेरी मग़फ़िरत फ़रमाइये और मेरी तिजारत को नफ़ा देने वाली बना दीजिए।

(कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26991)

ये अच्छी दुआएँ हैं

ये दुआएँ बुज़ुर्गों ने वुज़ू करते वक़्त पढ़ने के लिए बतायी हैं और बड़ी अच्छी दुआएँ हैं। अगर अल्लाह तआला इन दुआओं को हमारे हक़ में क़बूल फ़रमा ले तो बेड़ा पार हो जाए। लेकिन इन मौक़ों पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन दुआओं को पढ़ना या पढ़ने के लिए कहना साबित नहीं इसलिए ये दुआएँ पढ़ना इस एतिबार से सुन्नत नहीं हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हाथ धोते वक़्त यह दुआ पढ़ी, चेहरा धोते वक़्त यह दुआ पढ़ी वग़ैरह। इसलिए सुन्नत समझकर इन दुआओं को नहीं पढ़ना चाहिये लेकिन वैसे ही पढ़ना बड़ी अच्छी बात है। ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दूसरे मौक़ों पर इन दुआओं का पढ़ना साबित है। बड़ी अच्छी दुआएँ हैं इनको ज़रूर पढ़ें लेकिन सुन्नत समझकर नहीं पढ़ना चाहिये।

वे दुआएँ जो सुन्नत हैं

लेकिन वह मसनून दुआ जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वुज़ू के दौरान पढ़ी वह दुआ यह है:

"अल्लाहुम्मग़्फ़िर् ली ज़म्बी व वस्सिअ् ली फ़ी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी"

और दूसरी दुआ यह पढ़ा करते थे:

"अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू"

और जब वुज़ू ख़त्म फ़रमाते तो यह दुआ फ़रमाते:

"अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी मिनत्तव्वाबी-न वज्अ़ल्नी मिनल् मु-ततह्हिरीन"

और दूसरी दुआ यह पढ़ा करते थे:

"सुब्हानकल्लाहुम्-म अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त वह्द-क ला शरी-क ल-क अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै-क"

दोनों दुआओं में फ़र्क़ करना चाहिये

ये दुआएँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पढ़ना साबित हैं इसलिए जो दुआएँ आप से पढ़ना साबित हैं उनका तो ख़ास ध्यान रखें और जो दुआएँ हर अंग को धोते वक़्त बुज़ुर्गों से पढ़ना नक़ल की गयी हैं ये दुआएँ भी बहुत अच्छी हैं, उनको भी याद कर लेना चाहिये, उनको भी पढ़ लेना चाहिये। लेकिन दोनों तरह की दुआओं में फ़र्क़ रखना चाहिये कि जो दुआएँ आप से सीधे इन मौक़ों पर पढ़ना साबित हैं उनका ख़्याल ज़्यादा रखना चाहिये और जो दुआएँ आप से साबित नहीं उनका इस दर्जे एहतिमाम नहीं होना चाहिये बल्कि उनको दूसरे दर्जे पर रखना चाहिये।

असल चीज़ "बरकत" है

बहरहाल! वुज़ू के वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो दुआ माँगी उसमें घर के बड़े होने की दुआ माँगी और रिज़्क़ में बरकत की दुआ माँगी। ज़रा इसमें ग़ौर करें कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रिज़्क़ की कसरत (अधिकता) की दुआ नहीं फ़रमाई कि या अल्लाह! मुझे रिज़्क़ बहुत ज़्यादा दीजिए बल्कि यह फ़रमाया कि या अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमाइये। यानी गिनती के एतिबार से चाहे रिज़्क़ में अधिकता न हो, पैसे बहुत ज़्यादा न हों, माल व दौलत बहुत ज़्यादा न हो लेकिन उस रिज़्क़ में बरकत हो।

आज की दुनिया गिनती की दुनिया है। हर चीज़ में गिनती की फ़िक्र है कि गिनती में मेरा माल बढ़ जाए। मेरा बैंक बैलेंस बढ़ जाए और इस फ़िक्र के नतीजे में हर वक़्त इनसान अपने पैसे गिनता रहता है कि मेरे पास कितने पैसे हो गये। इसके बारे में क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

"अल्लज़ी ज-म-अ़ मालंव्-व अ़द्द-दहू। यह्सबु अन्-न मालहू अख़्ल-दहू"

तर्जुमाः यानी यह वह आदमी है जो माल जमा करता है और हर

समय गिनता रहता है और ख़ुश हो रहा है कि हज़ार के लाख हो गये और लाख के करोड़ हो गये लेकिन उसको यह मालूम नहीं कि उसकी गिनती के ज़रिये राहत हासिल नहीं हो सकती।

पैसा अपने आप में राहत की चीज़ नहीं

"पैसा" अपनी ज़ात से राहत की चीज़ नहीं। ख़ुद इनसान को आराम नहीं पहुँचा सकता। अगर इनसान के पास पैसा हो लेकिन उसमें अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकत न हो तो वह पैसा राहत का सबब बनने के बजाए उल्टा अज़ाब का सबब बन जाता है।

इब्रतनाक वाक़िआ

जनाब मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने अपनी तक़रीर में एक वाक़िआ बयान फ़रमाया है कि एक शख़्स के पास सोने-चाँदी के बड़े ख़ज़ाने थे और वह हर हफ़्ते उन ख़ज़ानों का मुआयना करने जाया करता था। उसका एक चौकीदार भी रखा हुआ था और उस ख़ज़ाने के ताले ऐसे थे कि कोई आदमी अन्दर से वे ताले नहीं खोल सकता था। एक दिन वह उन ख़ज़ानों की गिनती करने के लिए और उनका मुआयना करने के लिए अन्दर गया तो वह दरवाज़ा बन्द हो गया। अब वह अन्दर से उस दरवाज़े को खोलने की हज़ार कोशिश करता है, मगर नहीं खुलता, और वह सारे ख़ज़ानों के बीच बैठा है। वहाँ सोना है, चाँदी है, रुपया-पैसा है, ज़मीन से लेकर छत तक सोना भरा हुआ है, लेकिन वह न तो उसकी भूख मिटा सकता है और न उसकी प्यास बुझा सकता है, यहाँ तक कि उसको बाहर निकलने के लिए रास्ता भी उपलब्ध नहीं करा सकता। वह सारा ख़ज़ाना वैसे ही धरा रह गया और उसी ख़ज़ाने के अन्दर भूख और प्यास की वजह से उसकी मौत आ गयी।

रुपये से राहत नहीं ख़रीदी जा सकती

बहरहाल! यह रुपया-पैसा न भूख मिटा सकता है और न प्यास बुझा सकता है और न राहत पहुँचा सकता है। यह राहत पहुँचाना तो किसी

और ही की अता है। वह अगर राहत पहुँचाना चाहे तो दस रुपये में पहुँचा दे और अगर न पहुँचाना चाहे तो दस करोड़ में न पहुँचाए। कितने बड़े-बड़े अमीर व कबीर हैं, दौलतमन्द हैं, पूँजीपति हैं, ख़ज़ाना रखने वाले हैं, लेकिन रात को जब सोने के लिए बिस्तर पर लेटते हैं तो नींद नहीं आती। करवटें बदलते रहते हैं। बावजूद यह कि ख़ज़ाने मौजूद हैं, बैंक बैलेंस मौजूद है, कोठियाँ खड़ी हैं, कारख़ाने चल रहे हैं, लेकिन रात को नींद नहीं आती। रात की नींद के मज़े से मेहरूम हैं। और कितने मज़दूर ऐसे हैं जिन्होंने सुबह से लेकर शाम तक पचास रुपये कमाए और फिर शाम को ख़ूब भूख की हालत में डटकर रोटी खाई और रात को जो सोए तो आठ घण्टे की भरपूर नींद लेकर सुबह ताज़ा-दम होकर जागे। अब बताइये कि वह लाख रुपये ज़्यादा फ़ायदेमन्द हैं या यह पचास रुपये ज़्यादा फ़ायदेमन्द हैं। इस पचास रुपये ने उसको फ़ायदा और आराम व राहत तो पहुँचाया, और वह लाख रुपये कमाने के बाद बिस्तर पर करवटें बदल रहा है।

ख़राब पैसा काम नहीं आता

इसलिए अल्लाह तआला से जो चीज़ माँगने की है वह पैसे की ज़्यादती नहीं है बल्कि पैसे की बरकत माँगने की चीज़ है। आज यह ख़्याल हमारे ज़ेहनों से ओझल हो गया है। आज तो यह फ़िक्र है कि किसी तरह पैसे बढ़ जाएँ। इधर से उधर से, हलाल व हराम से, जायज़ नाजायज़ तरीक़े से, सच बोलकर या झूठ बोलकर। किसी तरह पैसे ज़्यादा हो जाएँ। जैसे किसी से हज़ार रुपये रिश्वत के ले लिए और बहुत ख़ुश हैं कि आज हज़ार रुपये कमाकर घर लेजा रहा हूँ लेकिन जब घर पहुँचे तो मालूम हुआ कि फ़लाँ बच्चा बीमार है उसको लेकर डाक्टर के पास गये। डाक्टर ने टेस्ट लिख दिये। उसके टेस्ट कराने में ही हज़ार रुपये ख़र्च हो गये। अब देखिए कि उसको हज़ार रुपये तो मिले लेकिन उसको उनका फ़ायदा हासिल नहीं हुआ।

एक आदमी हलाल कमाने वाला शाम को सौ रुपये कमाकर घर लाया

उसका एक-एक रुपया उसकी जान को लगा और उसका एक-एक रुपया उसको राहत पहुँचाने का सबब बना। और अल्लाह तआ़ला ने उसको अनगिनत मुसीबतों से बचा लिया। इसलिए अल्लाह तआ़ला से जो चीज़ माँगने की है वह रिज़्क़ में बरकत है। अल्लाह तआ़ला हम सब को अ़ता फ़रमा दें। आमीन।

मालदार तबक़ा ज़्यादा परेशान है

जब अल्लाह तआ़ला यह बरकत अ़ता फ़रमाते हैं तो रूखी-सूखी रोटी में भी अ़ता फ़रमा देते हैं। उसी में ज़िन्दगी का ऐश दे देते हैं। और अगर बरकत नहीं मिलती तो फिर करोड़ों में नहीं मिलती। लोग मेरे पास आकर अपने हालात बताते हैं और मश्विरा करते हैं। इससे मालूम होता है कि लोग किन हालात में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।

मैं आपको यक़ीन से कहता हूँ कि कुछ ऐसे लोग जिनकी ज़ाहिरी हालत देखकर लोग उन पर रश्क करते हैं कि उनके पास कितनी बड़ी दौलत है। कैसे उनके कोठी-बंगले हैं। कितने उनके नौकर-चाकर हैं। कैसी उनकी गाड़ियाँ और कारें हैं। लेकिन जब वे अन्दर की ज़िन्दगी का हाल आकर बयान करते हैं और अपनी बेचैनी और बेताबी का इज़हार करते हैं तो उस समय पता चलता है कि यह ज़ाहिर में जो कुछ नज़र आ रहा है वह उन मुसीबतों के सामने कुछ भी नहीं जिनका ये लोग शिकार हैं।

उनके बारे में कोई सोच नहीं सकता कि इतना माल व दौलत रखने वाला आदमी परेशान होगा और इतनी मुसीबत में होगा, लेकिन ऐसे लोग मौजूद हैं। और दूसरी तरफ़ ऐसे लोग भी हैं जो थोड़ा कमाते हैं लेकिन उनको अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल और मेहरबानी से राहत व आराम अ़ता फ़रमा रखा है।

बरकत नहीं तो माल बेकार है

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला हमारे ज़ेहनों में यह बात बिठा दें कि गिनती कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ बरकत है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ नहीं फ़रमाई कि या अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बढ़ौतरी कर दीजिए। बल्कि यह दुआ़ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! मेरे रिज़्क़ में बरकत अ़ता फ़रमाइये। यह बरकत उनकी अ़ता है, वहीं से यह बरकत हासिल होती है। अगर तुम दुनिया का माल व दौलत ख़ूब कमा लो लेकिन अगर उसमें अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बरकत नहीं है तो वह सब बेकार है। और अगर उनकी तरफ़ से बरकत हासिल है तो फिर थोड़ी चीज़ में भी राहत हासिल हो जाती है।

घर की कुशादगी माँगने की चीज़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कैसी-कैसी दुआ़एँ हमें सिखा दी हैं। अगर इनसान अपनी सारी ज़रूरतों का तसव्वुर भी करे कि मुझे इस दुनिया में क्या-क्या चीज़ें चाहियें और तसव्वुर (ख़्याल और ध्यान) करके माँगना चाहे तब भी वह चीज़ नहीं माँग सकता जिसका माँगना हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सिखा गए। बहरहाल! दुनिया की चीज़ों में घर की कुशादगी यानी बड़ा होना ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआ़ला से माँगने की चीज़ है और हासिल करने की चीज़ है और इनसान की नेकबख़्ती का हिस्सा है।

'नेक पड़ोसी' बड़ी नेमत है

दूसरी चीज़ जो मुसलमान की सआ़दत और ख़ुशनसीबी का हिस्सा है वह "नेक पड़ोसी" है। अगर किसी को नेक पड़ोसी मिल जाए तो यह बहुत बड़ी नेमत है। आज के दौर में लोगों ने इस नेमत को भुला दिया है। आज के कोठी-बंगलों में पड़ोस का तसव्वुर ही नहीं। सालों से एक जगह पर रहते हैं मगर यह पता नहीं कि दाहिनी तरफ़ कौन रहता है और बाईं तरफ़ किसका मकान है। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि पड़ोस के इतने हुक़ूक़ हैं और हज़रत जिब्राईल अमीन अ़लैहिस्सलाम मुझे इसकी इतनी ताकीद फ़रमाते रहे कि मुझे ख़्याल होने लगा कि शायद पड़ोसी को इनसान की मीरास में वारिस ही बना

दिया जाएगा। पड़ोस की इतनी अहमियत है।

लिहाज़ा जब मकान तलाश करो तो जहाँ उसमें और चीज़ें देखो वहाँ यह भी देख लो कि उसका पड़ोस कैसा है? अगर शरीफ़ और नेक लोगों का पड़ोस है तो समझो कि यह नेमत है। इसलिए कि इनसान का सुबह शाम पड़ोस से वास्ता पड़ता है और उसकी सोहबत इनसान को उठानी पड़ती है। अब जैसा पड़ोस होगा वैसी सोहबत होगी, और सोहबत का इनसान की ज़िन्दगी पर बहुत ज़्यादा असर पड़ता है। अच्छी सोहबत इनसान को अच्छा बना देती है और बुरी सोहबत इनसान को बुरा बना देती है। इसलिए फ़रमाया कि नेक पड़ोसी बहुत बड़ी नेमत है।

हज़रत अबू हमज़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि का वाक़िआ़

मुहद्दिसीन में एक बुज़ुर्ग हैं जिनकी कुन्नियत "अबू हमज़ा" है। उनको "सुकरी" या "सुक्करी" भी कहा जाता है। अ़रबी में "सुक्र" नशे को कहते हैं और "सुक्कर" चीनी को कहते हैं। कहते हैं कि उनका नाम "अबू हमज़ा सुकरी" इसलिए पड़ गया था कि उनकी बातों में इतना नशा था कि जब यह लोगों से बातें करते थे तो उनकी बातें इतनी मज़ेदार होती थीं कि सुनने वालों को लज़्ज़त का नशा आ जाता था। और "सुक्करी" इसलिए कहा जाता है कि उनकी बातें चीनी की तरह मीठी होती थीं। उनकी बातों में मिठास थी।

एक बार उनको पैसों की ज़रूरत पेश आई। उनके पास एक बड़ा मकान था। मकान के अ़लावा कोई और चीज़ नहीं थी जिसको बेचकर पैसा हासिल करें। उन्होंने इरादा किया कि उस बड़े मकान को बेचकर किसी और जगह पर छोटा मकान ख़रीद लूँ और जो पैसा बचे उससे अपनी ज़रूरत पूरी कर लूँ। इसलिए उन्होंने एक ख़रीदार से मकान का सौदा कर लिया और एक-दो दिन के अन्दर मकान ख़ाली करके उसके हवाले करने का वायदा कर लिया।

पड़ोसियों को जब मालूम हुआ कि "अबू हमज़ा सुकरी" मकान बेच कर कहीं और जा रहे हैं तो सारे पड़ोसी मिलकर उनके पास हाज़िर हुए

और उनसे कहा कि आप हमारा मौहल्ला छोड़कर जा रहे हैं। हमारी दरख़्वास्त यह है कि आप हमारा मौहल्ला न छोड़ें और जितने पैसे ख़रीदार इस मकान के दे रहा है हम सब मिलकर उतने पैसे आपको देने के लिए तैयार हैं। लेकिन आपका यहाँ से हमारा पड़ोस छोड़कर जाना हमें गवारा नहीं, इसलिए कि आपके पड़ोस की बदौलत हमें बहुत-सी नेमतें मिली हुई हैं। हमें ऐसा पड़ोस मिलना मुश्किल है।

बहरहाल! अगर नेक, अच्छे अख़्लाक़ वाला और अल्लाह वाला पड़ोस मिल जाए तो यह इतनी बड़ी नेमत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसको इनसान की खुशनसीबी की निशानी क़रार दिया है।

'खुशगवार सवारी' बड़ी नेमत है

तीसरी चीज़ जो एक मुसलमान की सआ़दत और खुशनसीबी की अ़लामत (निशानी) है, वह है "खुशगवार सवारी" यानी अगर इनसान को अच्छी सवारी मिल जाए तो यह भी अल्लाह तआ़ला की बड़ी नेमत और इनसान की खुशनसीबी है। और खुशगवार होने का मतलब यह है कि जिसमें इनसान आराम से सफ़र कर सके।

तीन चीज़ों में नहूसत

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसके बिल्कुल उलट बात बयान फ़रमायी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में नहूसत तीन चीज़ों में है। यानी अगर नहूसत होती तो इन तीन चीज़ों में होती- एक घर, दूसरी सवारी, तीसरी औ़रत। वैसे तो बदशगूनी लेने को और किसी चीज़ को मनहूस क़रार देने को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सख़्ती से मना फ़रमाया है। जैसे यह सोचना कि फ़लाँ चीज़ की वजह से मुझ पर आफ़तें आ रही हैं, या फ़लाँ चीज़ की वजह से मुसीबतें और बीमारियाँ आ रही हैं। यह गुमान करना कि मेरी बीवी में बदशगूनी है या मेरे घर में बदशगूनी है या मेरी सवारी में बदशगूनी है, हदीस शरीफ की रू से यह सब मना है।

मकान में नहूसत का मतलब

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान करने का मक़सद यह है कि अगर नहूसत होती तो इन तीन चीज़ों में होती क्योंकि नहूसत का मतलब यह है कि उसकी वजह से इनसान हर वक़्त मुश्किलों का शिकार रहे। मान लो अगर किसी इनसान को ख़राब घर मिल गया। अब चूँकि घर ऐसी चीज़ नहीं है जिसको इनसान सुबह व शाम बदलता रहे बल्कि एक अर्से तक उसके अन्दर इनसान को रहना पड़ता है इसलिए जब तक वह घर मौजूद है उस समय तक उसकी तकलीफ़ें उठानी पड़ेंगी और जितने दिन वह उस में रहेगा वह जान को आ जाएगा। इस एतिबार से मकान के अन्दर नहूसत है।

सवारी में नहूसत

दूसरी चीज़ "सवारी" है। अगर इनसान को सवारी ख़राब मिल गयी तो सवारी ऐसी चीज़ नहीं है कि इनसान रोज़-रोज़ उसको बदलता रहे। अगर ग़लत सवारी मिल गयी तो वह रोज़ जान खाएगी जैसे आजकल लोगों के पास गाड़ियाँ हैं। अगर किसी इनसान को ख़राब गाड़ी मिल गयी तो उसके लिए मुसीबत बन जाएगी। कभी रास्ते में रुक जाएगी कभी उसको धक्के मार कर स्टार्ट करना पड़ेगा।

हमारे पड़ोस में एक साहिब रहते थे। उनके बारे में सारे मौहल्ले में यह बात मशहूर थी कि अगर उनको शाम के पाँच बजे कहीं जाना होता तो सुबह नौ बजे से वह गाड़ी को ठीक करने में लग जाते। कभी उसके ऊपर लेटे हैं और कभी नीचे लेटे हैं, कभी दाहिनी तरफ़ लेटे हैं और कभी बाईं तरफ़ लेटे हैं, और सारा दिन उसकी मरम्मत में लगे रहते हैं। इसलिए अगर इनसान को गाड़ी ख़राब मिल जाए तो उसकी वजह से इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करनी पड़ती है कि अगर इनसान उस पर सवारी करने के बजाए पैदल चला जाए तो अच्छा है। इसलिए फ़रमाया कि सवारी में नहूसत है यानी उसकी तकलीफ़ मुस्तक़िल है। इसलिए अगर

अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ दे तो उसको बदल डालो और अच्छी सवारी ख़रीद लो।

अच्छी बीवी दुनिया की जन्नत

तीसरी चीज़ "बीवी" है। अगर शौहर को बीवी ख़राब मिल जाए या बीवी को शौहर ख़राब मिल जाए तो फिर ज़िन्दगी भर का अ़ज़ाब है। अगर शौहर को अच्छी बीवी मिल जाए और बीवी को अच्छा शौहर मिल जाए तो अल्लाह तआ़ला की नेमत है और दुनिया की जन्नत है। हज़रत अ़ल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि बड़ा ख़ूबसूरत जुमला इरशाद फ़रमाते थे:

"दुनिया की जन्नत यह है कि मियाँ-बीवी एक हों और नेक हों।"

मतलब यह है कि दोनों के मिज़ाज मिले हुए हों और दोनों नेक हों तो यह दुनिया की जन्नत है। लेकिन अगर इसका उल्टा हो तो ज़िन्दगी भर का अ़ज़ाब है। रोज़ाना सुबह से शाम तक झक-झक होती है। कोई राहत नहीं बल्कि हर समय एक मुसीबत है।

बहरहाल! हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन तीन चीज़ों में नहूसत है। इसलिए इनके शर (बुराई) से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगनी चाहिये कि या अल्लाह! इनके शर से महफ़ूज़ (सुरक्षित) रखिये और अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करें कि या अल्लाह! घर दीजिए तो राहत का घर अ़ता फ़रमाइये। सवारी दीजिए तो राहत की सवारी अ़ता फ़रमाइये और ज़िन्दगी का साथी दीजिए तो राहत का साथी अ़ता फ़रमाइये। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से वे तमाम सआ़दतें अ़ता फ़रमाए जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई हैं।

बुरे पड़ोसी से पनाह माँगना

अगली हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बुरे पड़ोसी से अल्लाह तआ़ला की पनाह माँगी है इसलिए हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो दुआ़एँ माँगा

करते थे उनमें एक दुआ यह भी थी कि ऐ अल्लाह! मैं आपकी बुरे पड़ोसी से पनाह माँगता हूँ लेकिन साथ ही यह भी फ़रमा दिया कि ऐसी जगह जहाँ पर मुझे काफ़ी वक़्त रहना हो वहाँ मुझे बुरा पड़ोसी न मिले। इसलिए कि ऐसा पड़ोसी जो रास्ते में सफ़र के दौरान साथ हो गया वह तो थोड़ी देर का पड़ोसी है, वह तो मुझ से जुदा हो जाएगा लेकिन मैं ऐसे पड़ोसी से पनाह माँगता हूँ जिसके साथ मुस्तक़िल रहना हो।

इससे मालूम हुआ कि बुरा पड़ोसी भी पनाह माँगने की चीज़ है। अल्लाह तआला हम सबको बुरे पड़ोसी से पनाह अता फ़रमाए। आमीन।

यह औरत जहन्नमी है

एक और हदीस जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की गयी है वह फ़रमाते हैं कि:

तर्जुमाः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! दो औरतें हैं उनमें से एक औरत ऐसी है जो रात भर तहज्जुद पढ़ती है और दिन में रोज़ा रखती है और बहुत-से नेक अमल करती है। जैसे तिलावत करती है, तस्बीह पढ़ती है, अल्लाह तआला का ज़िक्र करती है और सदका भी करती है, यानी अल्लाह के रास्ते में पैसे भी ख़र्च करती है लेकिन साथ-साथ अपने पड़ोसियों को अपनी ज़बान से तकलीफ़ पहुँचाती है। ये सिफ़तें ज़िक्र करने के बाद आपसे पूछा कि उस औरत का क्या हुक्म है? सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस औरत में कोई भलाई नहीं, यह औरत जहन्नमी है।

अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि वह औरत रात को तहज्जुद पढ़ती है और दिन में रोज़ा रखती है। इसके अलावा तिलावत, ज़िक्र, सदका ख़ैरात सब कुछ कर रही है लेकिन इन सब चीज़ों के बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह औरत जहन्नमी है क्योंकि यह औरत अपनी ज़बान से अपने पड़ोसियों को तकलीफ़ पहुँचा रही है।

यह औरत जन्नती है

फिर एक दूसरी औरत के बारे में सवाल किया: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! एक और औरत है जो सिर्फ फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती है नफ़िल नमाज़ वग़ैरह नहीं पढ़ती यानी तहज्जुद वग़ैरह की पाबन्द नहीं है सिर्फ़ फ़राईज़ और सुन्नतों पर ही बस कर लेती है और अगर सदक़ा भी करती है तो बस पनीर के चन्द टुकड़े सदक़ा कर देती है, क़ीमती चीज़ भी सदक़ा नहीं करती। लेकिन यह औरत किसी को तकलीफ़ भी नहीं पहुँचाती। ये सिफ़तें ज़िक्र करने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि उस औरत का क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया कि यह ख़ातून (औरत) जन्नती है, यानी जन्नत वालों में से है।

जहन्नमी होने की वजह

अब आप ज़रा इन दोनों औरतों में मुक़ाबला करके देखें कि एक औरत तो इबादत में लगी हुई है और अल्लाह के ज़िक्र व फ़िक्र में लगी हुई है। तहज्जुद पढ़ती है, इश्राक़ पढ़ती है, चाश्त पढ़ती है और सदक़ा-ख़ैरात बहुत करती है लेकिन उसकी ज़बान में डंक है। जब किसी से बात करती है तो उसको डंक मारती है और उससे लोगों को तकलीफ़ पहुँचती है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस औरत को जहन्नम वालों में से क़रार दिया। क्यों? इसलिए कि तहज्जुद, इश्राक़, चाश्त, तस्बीहात वग़ैरह ये सब नफ़्ली इबादतें हैं। अगर कोई करे तो उस पर सवाब है अगर कोई न करे तो उस पर उसका कोई गुनाह नहीं, लेकिन दूसरे को अपनी ज़बान से तकलीफ़ पहुँचाना क़तई हराम है और दूसरे को अपनी ज़बान की तकलीफ़ से बचाना फ़र्ज़े-ऐन है, और ज़बान से कोई ऐसी बात निकालना जिससे दूसरे का दिल टूट जाए या ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार करना जिससे दूसरे का दिल टूट जाए यह बड़ा ख़तरनाक अमल है।

यह ज़बान जहन्नम में डालने वाली है

एक और हदीस है जो बड़े डरने की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि लोगों को सबसे ज़्यादा जहन्नम में औंधे मुँह गिराने वाली चीज़ इनसान की ज़बान है। इनसान की ज़बान ऐसी चीज़ है कि उसके ग़लत इस्तेमाल करने के नतीजे में इनसान को जहन्नम के अन्दर औंधे मुँह गिराया जाएगा। अल्लाह तआ़ला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

दूसरी औरत के बारे में लोगों ने बताया कि वह नफ़्ली इबादत तो ज़्यादा नहीं करती लेकिन वक़्त पर अपने फ़राईज़ अदा कर लेती है और थोड़ा-बहुत नफ़्ली सदक़ा भी कर देती है लेकिन किसी को तकलीफ़ नहीं पहुँचाती, ऐसी औरत के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह जन्नतियों में से है।

नफ़्ली इबादतें गुनाहों के अ़ज़ाब से नहीं बचा सकतीं

इसके ज़रिये यह बतलाना मन्ज़ूर है कि अल्लाह तआ़ला नफ़्ली इबादतों को बड़ा पसन्द फ़रमाते हैं और नफ़्ली इबादत करना अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का हक़ है, लेकिन नफ़्ली इबादतों पर भरोसा करके खुले तौर पर गुनाह करना या यह समझना मैं तो बहुत ज़्यादा नफ़्ली इबादतें करती या करता हूँ इसलिए मैं तो बड़ा आ़बिद व ज़ाहिद हूँ और फिर उसके नतीजे में मख़्लूक़ को हक़ीर समझना और उनके साथ हिक़ारत का बर्ताव करना और उनके साथ ऐसा बर्ताव करना जिससे उनका दिल टूटे यह अ़मल अल्लाह तआ़ला को बहुत ही नापसन्द है। और इस सूरत में उसकी नफ़्ली इबादतें उसको उन गुनाहों के अ़ज़ाब से नहीं बचा सकतीं जिनका ताल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से है, इसलिए कि उसने बन्दों के हक़ को पामाल (ज़ाया) किया और बन्दों का दिल तोड़ा।

ज़बान की हिफ़ाज़त करें

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस हदीस में ये अलफ़ाज़ आए हैं कि वह औरत ज़बान से तकलीफ़ पहुँचाती है। कुछ लोगों की तबीयत ऐसी होती है कि जब भी वे किसी से बात करेंगे तो टेढ़ी बात

करेंगे। या कोई एतिराज़ कर देंगे या कोई शिकायत कर देंगे। कोई ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार करेंगे जिससे दूसरे का दिल टूट जाएगा। यह बड़ा ख़तरनाक मामला है। जिन लोगों को इस तरह की आदत हो वे अपने गिरेबान मे मुँह डालकर देखें और अपनी आख़िरत और अन्जाम की फ़िक्र करते हुए अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करें इसलिए कि यह अमल इनसान को जहन्नम में ले जाने वाला है।

मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहिब का बेवाओं की ख़िदमत करना

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि अपने एक उस्ताद हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहिब का ज़िक्र फ़रमाया करते थे, जो दारुल उलूम देवबन्द के सब से बड़े मुफ़्ती थे और मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि के उस्ताद थे। उनके इल्म और मसाइल में उनकी महारत का सारे मुल्क में डंका बजा हुआ था। उनकी हालत यह थी कि जब वह सुबह दारुल उलूम देवबन्द में सबक़ पढ़ाने के लिए जाते तो मदरसे के आस-पास मौहल्ले में जो बेवा औरतें रहती थीं पहले उनके पास जाते और उनसे कहते कि बीबी! अगर बाज़ार से तुम्हें कोई सौदा मंगाना है तो बता दो मैं ला देता हूँ।

अब एक औरत ने कहा कि मेरे लिए आलू ले आएँ। दूसरी ने कहा मेरे लिए दाल ले आएँ। किसी ने कहा मेरे लिए धनिया पोदीना ले आएँ। फिर बाज़ार जाते वहाँ से सौदा ख़रीदते और उनकी पोटलियाँ बनाकर घर घर बाँटते। कभी-कभार ऐसा भी होता कि कोई औरत कहतीं कि मौलवी साहिब! मैंने तो टमाटर मंगवाए थे आप आलू ले आए। कोई औरत कहती मैंने इतना मंगवाया था आप इतना ले आए। वह जवाब में फ़रमाते कि अच्छा बीबी! कोई बात नहीं मैं दोबारा बाज़ार जाकर बदल कर ले आता हूँ। चुनाँचे दोबारा बाज़ार जाकर वह चीज़ बदलवाते और दोबारा पहुँचाते। यह आपका रोज़ाना का मामूल था कि दारुल उलूम देवबन्द में मुफ़्ती-ए-आज़म (सब से बड़े मुफ़्ती) बनकर बैठने से पहले अपने मौहल्ले की बेवाओं का यह काम करते थे।

किसी को मुँह पर नहीं झुठलाना चाहिये

आपकी एक आदत यह थी कि कोई शख़्स आपके सामने चाहे कितनी ही ग़लत बात कह रहा हो लेकिन आपसे उसके मुँह पर यह नहीं कहा जाता था कि तुम ग़लत बात कह रहे हो, कि कहीं उसका दिल न टूट जाए। लेकिन ज़ाहिर है कि ग़लत बात को सही तो नहीं कह सकते इसलिए आप उस शख़्स की बात की कोई तावील करके उससे फ़रमाते कि अच्छा शायद आपकी बात का यह मतलब है। ख़ुद ही उसकी कोई तावील करके उसकी बात को सही कर देते थे लेकिन किसी के मुहँ पर उसको झुठलाने से हमेशा परहेज़ किया करते थे।

यह कौन थे? यह हिन्दुस्तान के "सब से बड़े मुफ़्ती" थे। जिनके फ़तवे पर हिन्दुस्तान के तमाम उलमा सर झुका देते थे। आज उनके फ़तावा दस मोटी जिल्दों में छपने के बावजूद भी पूरे नहीं हुए। जिन्होंने अपने फ़तवों से सारी दुनिया को सैराब किया उनकी सादगी का यह आलम था कि कोई देखकर पहचान नहीं सकता था कि यह इतना बड़ा आलिम होगा। इसलिए अगर कोई दूसरा बात कर रहा हो अगरचे वह बात ग़लत हो उसकी बात को काटने के बजाए ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिये जिससे उसका दिल न टूटे।

असली मुसलमान कौन है?

यह बड़े काँटे की बात है कि आदमी हर समय इसकी फ़िक्र करे कि मेरी ज़बान से किसी को तकलीफ़ न हो। हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है:

तर्जुमाः मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।

यह है मुसलमान की तारीफ़। हमारे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि एक शे'र पढ़ा करते थे:

तमाम उम्र इसी एहतिमाम में गुज़री
कि आशियाँ किसी शाख़े-चमन पे बार न हो

यानी मेरी वजह से किसी को तकलीफ़ न पहुँचे यही समाजी ज़िन्दगी के सारे आदाब का ख़ुलासा है।

पड़ोसन की बकरी का रोटी खा जाना

एक हदीस में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपना एक वाक़िआ बयान फ़रमाया कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे घर तशरीफ़ लाए। आपने अपनी पाक बीवियों के पास जाने के लिए नम्बर मुक़र्रर फ़रमा रखे थे। एक दिन एक के पास और दूसरे दिन दूसरी के पास।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि उस रोज़ मेरी बारी थी। वैसे तो हर बीवी की ख़्वाहिश होती है कि अपने शौहर की ख़ूब ख़िदमत करे, उसको अच्छे से अच्छा खाना खिलाए। और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से जितनी मुहब्बत करती थीं ऐसी मुहब्बत तो दुनिया में कोई बीवी कर ही नहीं सकती। इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की यह इच्छा हुई कि आज हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे घर तशरीफ़ ला रहे हैं तो आपके लिए अच्छा खाना बना लूँ। लेकिन अच्छा खाना किस तरह बनाएँ इसलिए कि जो कुछ आता था वह तो अल्लाह की राह में ख़र्च हो जाता था। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि घर में कुछ जौ पड़े थे मैंने उनको चक्की में पीसकर उनका आटा बनाया और फिर उसकी एक रोटी बनाई। ख़्याल यह था कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ लाएँगे तो उनकी ख़िदमत में पेश करूँगी।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर में तशरीफ़ लाए तो चूँकि सर्दी का मौसम था और आपको सर्दी लग रही थी इसलिए आपने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि मुझे सर्दी लग रही है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने गर्म बिस्तर का इन्तिज़ाम कर दिया। आप लेट गये और आपकी आँख लग गई। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैं इस इन्तिज़ार में थी कि जब आप जागें तो जो रोटी

मैंने आपके लिए पकाई है वह आपकी ख़िदमत में पेश करूँ।

इतने में पड़ोस के घर की बकरी हमारे घर में आई और वह रोटी जो मैंने इतनी मेहनत और चाहत से पकाई थी वह बकरी उठाकर ले गयी। मैं उस बकरी को अपनी आँखों से रोटी ले जाते हुए देख रही थी लेकिन चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सो रहे थे इसलिए मैंने उस बकरी को नहीं रोका ताकि कहीं शोर की वजह से आपकी आँख न खुल जाए यहाँ तक कि वह बकरी रोटी उठाकर घर से बाहर चली गयी। उसके रोटी ले जाने से मुझे बहुत सख़्त सदमा हुआ। उसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जाग गए। जैसे ही आप जागे तो मैं दरवाज़े की तरफ़ भागी कि शायद वह बकरी कहीं नज़र आ जाए।

रोटी की वजह से पड़ोसी को तकलीफ़ मत देना

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को घबराहट की हालत में देखा तो उनसे पूछा कि क्या बात है? मैंने सारा क़िस्सा सुना दिया कि मैंने इतनी मेहनत से रोटी आपके लिए पकाई थी मगर बकरी वह रोटी लेकर भाग गई इसलिए मुझे बड़ा सदमा हो रहा है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उस रोटी का जो कुछ बचा हुआ हिस्सा तुम्हें मिल जाए वह ले आओ और उस बकरी की वजह से अपने पड़ोसी को कोई तकलीफ़ मत देना और उसको बुरा-भला मत कहना कि तुम्हारी बकरी मेरी रोटी खा गई और मेरा नुक़सान कर गयी।

अब देखिए कि इस मौक़े पर भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हिदायत की कि अपने पड़ोसी को बुरा-भला मत कहना। इसलिए कि उसमें उस पड़ोसी का क़सूर नहीं है। और अगर उसका क़सूर भी हो तब भी अगर तुम्हारी एक रोटी चली गयी तो क्या हुआ, उसके साथ तुम्हें उम्र भर निबाह करना है। अगर तुम उसके साथ लड़ाई मोल लोगी तो उससे हमेशा के लिए ताल्लुक़ात ख़राब होंगे और ये ताल्लुक़ात उस रोटी के मुक़ाबले में ज़्यादा क़ीमती हैं।

हम उस रोटी की क़द्र क्या जानें

आज हम लोग उस ज़माने का ज़रा तसव्वुर करें तो हम लोग उस रोटी की क़द्र व क़ीमत नहीं पहचान सकते जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पकाई थी। इसलिए कि आज तो अल्लाह तआला ने रिज़्क़ की बोहतात कर दी है, रोटी की कोई क़द्र व क़ीमत हमारे दिलों में नहीं है। अगर आज एक रोटी चली जाए तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन उस वक़्त तो यह आलम था कि ज़रा-सा जौ पड़ा हुआ था उसको पीस कर मुश्किल से एक रोटी तैयार की। वह रोटी भी बकरी उठा ले गयी लेकिन इसके बावजूद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहतिमाम के साथ फ़रमाया कि उस बकरी की वजह से अपने पड़ोसी को तकलीफ़ मत देना।

ऐसा पड़ोसी जन्नत में नहीं जाएगा

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

तर्जुमाः वह शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं होगा जिसका पड़ोसी उसके तकलीफ़ देने से महफ़ूज़ न हो। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 26908)

यानी कि जन्नत में दाख़िल होने की एक बुनियादी शर्त यह है कि अपनी ज़ात से पड़ोसी को तकलीफ़ न पहुँचे।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः अपने घर के सामने वाली जगह साफ़ किया करो।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ किताबुल् अदब)

यह न हो कि घर के सामने और आस-पास कूड़े-करकट के ढेर लगा दो जिसके नतीजे में पड़ोसियों को भी उससे तकलीफ़ पहुँचे और आने-जाने वालों को भी तकलीफ़ पहुँचे। कुछ लोग अपने घर के अन्दर झाड़ू देकर सारा कूड़ा दूसरे के घर के दरवाज़े पर फेंक देते हैं, यह पड़ौसी को सताना है जिसके नतीजे में वह जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।

अगर सब लोग इस हदीस पर अ़मल कर लें और हर आदमी अपने घर के आस-पास का इलाक़ा साफ़-सुथरा रखने की कोशिश करे तो फिर शहर में सफ़ाई करने वालों की ज़रूरत न रहे।

एक नौ-मुस्लिम अंग्रेज़ का वाक़िआ

चूँकि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है इसलिए सफ़ाई-सुथराई भी दीन का हिस्सा है। आज लोग यह समझते हैं कि यह सफ़ाई-सुथराई दुनियादारी का काम है इसका दीन से कोई लेना-देना नहीं। मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि एक क़िस्सा सुनाया करते कि जामा मस्जिद देहली के पास एक अंग्रेज़ रहता था। वह मुसलमान हो गया अब वह मस्जिद में नमाज़ के लिए आने लगा। जब उसको वुज़ू करने की ज़रूरत होती तो वह वुज़ूख़ाने में वुज़ू करता। उसने देखा कि यह वुज़ूख़ाना भी गंदा हो रहा है, उसकी नालियाँ बहुत ख़राब हो रही हैं। कहीं काई जम रही है, कहीं नाक की गन्दगी पड़ी हुई है, कहीं कुछ पड़ा है, कहीं कुछ। कुछ दिन तक तो देखता रहा, एक दिन उसने सोचा कि जब कोई और आदमी इसकी सफ़ाई नहीं कर रहा है तो चलो मैं ही इसकी सफ़ाई कर दूँ। इसलिए उसने झाड़ू लेकर वुज़ूख़ाने की नालियों को साफ़ करना शुरू कर दिया। किसी शख़्स ने देखा कि यह अंग्रेज़ नालियाँ साफ़ कर रहा है तो उसने दूसरे लोगों से कहा कि यह अंग्रेज़ मुसलमान तो हो गया है लेकिन अंग्रेज़ियत की ख़ू-बू इसके दिमाग़ से अब तक नहीं गयी।

मतलब यह था कि यह सफ़ाई-सुथराई अंग्रेज़ियत की ख़ू-बू है। इस सफ़ाई का दीन से कोई ताल्लुक़ नहीं है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तो यह इरशाद है कि अपने घर के आस-पास की जगहों को भी साफ़ करो यह भी पड़ोसियों के हुक़ूक़ में दाख़िल है।

पड़ोस की भेजी हुई चीज़ की क़द्र करनी चाहिये

एक रिवायत में हज़रत अ़मर बिन मुआ़ज़ अश्हली रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी दादी से रिवायत करते हैं। वह फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम ने मुझ से फ़रमायाः

तर्जुमाः ऐ मुसलमान औ़रतो! तुम में से कोई औ़रत अपनी पड़ोसन को हक़ीर (ज़लील और कम दर्जे की) न समझे। और अगर कोई पड़ोसन तुम्हें हदिया (तोहफ़े में कोई चीज़) भेज रही है तो उसके हदिये (भेजी हुई चीज़) को हक़ीर न समझे। (कन्ज़ुल उम्माल हदीस न० 24937)

चाहे वह हदिया बकरी का एक जला हुआ पाया ही क्यों न हो। और यह न कहो कि इस पड़ोसन ने कैसी मामूली चीज़ भेज दी। अरे तुम इसको मत देखो कि उसने क्या चीज़ भेजी। वह छोटी है या बड़ी। असल चीज़ देखने की यह है कि उसने किस मुहब्बत और ख़ुलूस के साथ वह हदिया भेजा है। इसलिए उस हदिये की क़द्र करो और उसका हक़ अदा करने की कोशिश करो।

यहूदी पड़ोसी को गोश्त का हदिया

हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़ास शागिर्द हैं। वह फ़रमाते हैं कि एक बार मैं उनके पास बैठा हुआ था। उनका ग़ुलाम एक बकरी की खाल उतार रहा था। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उस ग़ुलाम से फ़रमाया ऐ लड़के! जब तुम खाल उतार चुको तो सबसे पहले उसका गोश्त हमारे यहूदी पड़ोसी को भेजना। एक साहिब जो क़रीब में बैठे हुए थे उन्होंने ताज्जुब से कहा "क्या यहूदी को गोश्त भेजना, अल्लाह तआ़ला आपकी इस्लाह करे" मतलब यह था कि यहूदी जो ख़ुदा का दुश्मन है आप उसको हदिया (तोहफ़ा) भेज रहे हैं। आपका यह अ़मल क़ाबिले इस्लाह है। इस पर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया किः

तर्जुमाः मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुना है। आप पड़ोसी के बारे में वसीयत फ़रमाते थे कि पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करो यहाँ तक कि हमें यह अन्देशा हुआ कि आप उसको हमारा वारिस बना देंगे।

पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करना

इस हदीस के ज़रिये हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह बतला दिया कि पड़ोसी के साथ अच्छा सुलूक करने की जो तालीम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दी है उसका ताल्लुक़ ईमान और कुफ़्र से नहीं है। इसलिए अगर पड़ोसी काफ़िर भी है तब भी पड़ोसी की हैसियत से उसके साथ अच्छा सुलूक करना है। उसके कुफ़्र से नफ़रत करो। उसकी बुराई और बदकारी से नफ़रत करो लेकिन उसके साथ अच्छा सुलूक करो। इसलिए कि यही अच्छा सुलूक आख़िरकार दावत का ज़रिया बनता है। क्योंकि जब तुम उसके साथ अच्छा सुलूक करोगे और उसके साथ अच्छे अख़्लाक़ का मामला करोगे तो उसकी बरकत से हो सकता है कि अल्लाह तआ़ला उसके दिल में ईमान डाल दें।

इस्लाम के शुरुआ़ती दौर में जो इस्लाम फैला वह दर असल इसी अच्छे अख़्लाक़ से फैला। इसी अच्छे सुलूक से फैला। इसलिए अगर कोई काफ़िर है तो उसके कुफ़्र से और उसकी बद-आमालियों से नफ़रत करो और उसके क़रीब मत फटको लेकिन जहाँ तक उसके हुक़ूक़ अदा करने का ताल्लुक़ है, वे तुम्हारे ज़िम्मे ज़रूरी हैं। अगर वह पड़ोसी है तो पड़ोस होने का हक़ अदा करना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

जुमा अल्-विदा
की शरई हैसियत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○

(سورۃ البقرۃ آیت ۱۸۵)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

मुबारक महीना

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! अल्लाह तआला का बड़ा इनाम है कि उसने हमें और आपको एक रमज़ान का महीना और अता फ़रमाया। यह वह महीना है जिसमें अल्लाह तआला की रहमत की घटाएँ बन्दों पर झूम-झूमकर बरसती हैं। जिसमें अल्लाह तआला की रहमत बन्दों की मग़फ़िरत के लिए बहाने ढूँढती है। छोटे-छोटे अमल पर अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमतों और मग़फ़िरतों के वायदे हैं। यह मुबारक महीना हमें

अल्लाह ने अता फ़रमाया और आज इस मुबारक महीने का आख़िरी जुमा है और इस मुबारक महीने के ख़त्म होने में चन्द दिन बाक़ी हैं।

आख़िरी जुमा और ख़ास तसव्वुरात

इस आख़िरी जुमे के बारे में कुछ लोगों के ज़ेहनों में कुछ ख़ास तसव्वुरात हैं जिनकी इस्लाह ज़रूरी है। आम तौर पर हमारे समाज में यह समझा जाता है कि यह आख़िरी जुमा जिसको "जुमअ़तुल् विदा" भी कहते हैं, यह कोई मुस्तक़िल त्यौहार है और इसके कुछ ख़ास अहकाम हैं, इसकी कुछ ख़ास इबादतें हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तजवीज़ फ़रमाई हैं। और लोगों ने इस दिन इबादत करने के अलग-अलग तरीक़े घड़ रखे हैं जैसे जुमअ़तुल्-विदा के दिन इतनी रक्अ़तें, नवाफ़िल पढ़नी चाहियें और उन रक्अ़तों में फ़लाँ-फ़लाँ सूरतें पढ़नी चाहियें।

जुमअ़तुल्-विदा कोई त्यौहार नहीं

ख़ूब समझ लीजिए कि इस तरह की कोई हिदायत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं दी। जुमअ़तुल्-विदा कोई त्यौहार नहीं, न इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोई अहकाम अलग से अ़ता फ़रमाए। न इस दिन में इबादत का कोई ख़ास तरीक़ा बतलाया। न इस दिन में किसी ख़ास अ़मल की तलक़ीन फ़रमाई जो आ़म दिनों में न किया जाता हो, बल्कि यह आ़म जुमों की तरह एक जुमा है। अलबत्ता इतनी बात ज़रूर है कि वैसे रमज़ान मुबारक का हर लम्हा ही क़द्र के क़ाबिल है लेकिन रमज़ान का जुमा बड़ा क़ाबिले क़द्र है। हदीस शरीफ़ के बयान के अनुसार रमज़ान "तमाम महीनों का सरदार" है। और जुमा "तमाम दिनों का सरदार" है। इसलिए जब रमज़ान मुबारक में जुमे का दिन आता है तो उस दिन में दो फ़ज़ीलतें जमा हो जाती हैं- एक रमज़ान की फ़ज़ीलत और दूसरी जुमे की फ़ज़ीलत। इस लिहाज़ से रमज़ान का हर जुमा बड़ा क़ाबिले क़द्र है।

यह आख़िरी जुमा ज़्यादा क़ाबिले क़द्र है

और आख़िरी जुमा इस लिहाज़ से ज़्यादा क़ाबिले क़द्र है कि इस

साल यह मुबारक दिन दोबारा नहीं मिलेगा। सारे रमज़ान में चार या पाँच जुमे होते हैं। तीन जुमे गुज़र चुके हैं और यह अब आख़िरी जुमा है। अब इस साल यह नेमत नहीं मिलने वाली। अल्लाह तआ़ला ने अगर ज़िन्दगी दी तो शायद आईन्दा साल यह नेमत दोबारा मिल जाए। इसलिए यह एक नेमत है जो हाथ से जा रही है। इसकी क़द्र व मर्तबा पहचान कर इनसान जितना भी अ़मल कर ले वह कम है। बस इस जुमअ़तुल् विदा की यह हक़ीक़त है वरना यह न तो कोई त्यौहार है न इसके अन्दर कोई ख़ास इबादत और ख़ास अ़मल मुक़र्रर है।

अल्-विदाई जुमा और शुक्र का जज़्बा

अलबत्ता जब आख़िरी जुमे का दिन आता है तो दिल में दो तरह के जज़्बात पैदा होते हैं। हर मोमिन के दिल में ये जज़्बात पैदा होने चाहियें। एक ख़ुशी और शुक्र का जज़्बा कि अल्लाह तआ़ला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें रमज़ान मुबारक अ़ता फ़रमाया और रमज़ान मुबारक में रोज़े रखने की, तरावीह पढ़ने की और तिलावत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। यह बात क़ाबिले शुक्र और ख़ुशी वाली है। इस पर जितना शुक्र अदा किया जाए कम है। इसलिए कि न जाने अल्लाह के कितने बन्दे ऐसे हैं जो पिछले साल हमारे साथ रोज़ों में तरावीह में शरीक थे लेकिन इस साल वे ज़मीन के नीचे जा चुके। उन जाने वालों से इस रमज़ान के एक एक लम्हे की क़द्र व क़ीमत पूछिये कि वे यह हसरत कर रहे हैं कि काश! उनको रमज़ान के कुछ लम्हात और मिल जाते तो वे अपने आमाल में बढ़ौतरी कर लेते। लेकिन उनका वक़्त ख़त्म हो चुका अब हसरत के सिवा कोई चारा नहीं। अल्लाह तआ़ला ने हमें रमज़ान मुबारक के ये लम्हात अ़ता फ़रमा रखे हैं।

ग़ाफ़िल बन्दों का हाल

और इस लिहाज़ से अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिये कि बहुत-से बन्दे ऐसे हैं कि जिनको यह भी पता नहीं चलता कि कब

रमज़ान आया था और कब चला गया। न उनको रोज़े रखने से कोई लेना देना, न तरावीह पढ़ने से कोई मतलब। अल्लाह बचाए! आँखों पर ग़फ़लत के पर्दे पड़े हुए हैं। रमज़ान के आने पर उनके वक़्तों के निज़ाम में, उनके खाने-पीने के वक़्तों में और उनके सोने और जागने के वक़्तों में कोई तब्दीली पैदा नहीं होती। अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने हमें ऐसे ग़ाफ़िल लोगों में शामिल नहीं फ़रमाया और इस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो कि ऐ अल्लाह! आपने हमें रोज़ा रखने की तौफ़ीक़ बख़्शी, तरावीह पढ़ने की तौफ़ीक़ बख़्शी। अगर हम भी उनमें शामिल हो जाते तो न जाने हमारा क्या हश्र होता, इसलिए शुक्र अदा करने और ख़ुश होने का मौक़ा है।

नमाज़-रोज़े की नाक़द्री मत करो

हमारे ज़ेहनों में कभी जो ये ख़्यालात आते हैं कि हमने रोज़ा तो रख लिया लेकिन रोज़े का हक़ अदा नहीं किया। तरावीह तो पढ़ ली लेकिन उसका सही हक़ अदा नहीं हो सका। तरावीह में न आजिज़ी व गिड़गिड़ाना था। दिल कहीं था दिमाग़ कहीं था। इसी हालत में हमने तरावीह अदा कर ली। यह ख़्याल लाकर कुछ लोग इस रोज़े की और तरावीह की नाक़द्री करते हैं। अरे भाई! यह नाक़द्री की चीज़ नहीं, यह नमाज़ कैसी भी हो लेकिन अल्लाह तआला ने अपने दरबार में हाज़िरी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। यह तौफ़ीक़ ख़ुद एक नेमत है। पहले इस तौफ़ीक़ पर शुक्र अदा करो। इस हाज़िरी की नाक़द्री मत करो। यह न कहो कि हमने नमाज़ क्या पढ़ी, हमने तो टक्करें मार लीं और उठक-बैठक कर ली। अरे अल्लाह तआला को तुम्हारे साथ कुछ ख़ैर ही का मामला करना था इसलिए तुम्हें मस्जिद के दरवाज़े पर ले आए। अगर अल्लाह तआला को तुम्हारे साथ ख़ैर न करनी होती तो तुम्हें उन लोगों में शामिल कर देते जिन्होंने कभी मस्जिद की शक्ल तक नहीं देखी। इसलिए इन इबादतों की नाक़द्री मत करो बल्कि इन पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो।

सज्दे की तौफ़ीक़ बड़ी नेमत है

हमने जैसी-तैसी नमाज़ पढ़ ली, न उसमें ख़ुशूअ् था और न उसमें ख़ुज़ूअ् था (यानी नमाज़ की शान के मुताबिक़ न थी)। वह नमाज़ बेजान और बेरूह सही लेकिनः

कबूल हो कि न हो फिर भी एक नेमत है
वह सज्दा जिसे तेरे आस्ताँ से निस्बत है

यह सज्दा जिसे अल्लाह तआ़ला के आस्ताने पर करने की तौफ़ीक़ हो गयी यह भी एक नेमत है। पहले इसका शुक्र अदा कर लो। बेशक हम उसका हक़ अदा नहीं कर पाए। बेशक हमारी तरफ़ से उसमें कोताहियाँ रहीं लेकिन उन कोताहियों का इलाज यह नहीं कि इन इबादतों की नाक़द्री शुरू कर दो। बल्कि उन कोताहियों का इलाज यह है कि अल्लाह तआ़ला से तौबा करो, इस्तिग़फ़ार करो और यह कहो कि ऐ अल्लाह! आपने मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई, इस पर आपका शुक्र है लेकिन मुझसे इस इबादत में कोताही हुई। ऐ अल्लाह! मैं इस पर इस्तिग़फ़ार करता हूँ:

अस्तग़फ़िरुल्ला-ह रब्बी मिन् कुल्लि ज़म्बिंव् व अतूबु इलैहि

इस इस्तिग़फ़ार के ज़रिये अल्लाह तआ़ला उन कोताहियों को दूर फ़रमा देंगे।

आज का दिन डरने का दिन भी है

इसलिए आज का दिन एक तरफ़ तो ख़ुशी का और शुक्र अदा करने का दिन है दूसरी तरफ़ यह डरने का दिन है। उस बात का डर जिसका बयान एक हदीस में आया है। वह हदीस यह है कि एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए ताकि जुमे का ख़ुतबा दें। आप अपने मिम्बर पर ख़ुतबा दिया करते थे। आपका मिम्बर तीन सीढ़ियों पर मुश्तमिल था। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर खड़े होकर ख़ुतबा दिया करते थे। जब हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ख़िलाफ़त का दौर आया तो उन्होंने सोचा कि सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर ख़ुतबा देना अदब के ख़िलाफ़ है

क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस पर खड़े होकर खुतबा देते थे। इसलिए उन्होंने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में दूसरी सीढ़ी पर खड़े होकर खुतबा देना शुरू कर दिया।

जब हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हो गयी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़माना आया तो उन्होंने सोचा कि मेरे लिए तो इस दूसरी सीढ़ी पर भी खड़े होकर खुतबा देना अदब के ख़िलाफ़ है जिस पर हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े होकर खुतबा दिया करते थे। इसलिए उन्होंने अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में तीसरी और आख़िरी सीढ़ी पर खुतबा देना शुरू कर दिया। उसके बाद से आज तक यह मामूल चला आ रहा है कि खुतबा पढ़ने वाले तीसरी सीढ़ी पर खुतबा देते चले आ रहे हैं।

तीन दुआओं पर तीन बार आमीन

बहरहाल! मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुतबा देने के लिए तशरीफ़ लाए। उस दिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने यह अजीब मन्ज़र देखा कि जब आपने पहली सीढ़ी पर क़दम रखा तो फ़रमाया "आमीन" जब दूसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया "आमीन"। जब तीसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो फिर फ़रमाया "आमीन" सहाबा किराम को ताज्जुब हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ तो कोई नहीं माँगी लेकिन तीनों सीढ़ियों पर क़दम रखते हुए "आमीन" फ़रमाया। बाद में सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि या रसूलल्लाह! आज आपने सीढ़ियों पर क़दम रखते हुए तीन बार "आमीन" फ़रमाया, इसकी क्या वजह है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि जब मैं मिम्बर पर चढ़ने के लिए आया और पहली सीढ़ी पर क़दम रखा तो हज़रत जिब्राईल अमीन अलैहिस्सलाम मेरे सामने आए। उन्होंने एक दुआ की और मैंने उस दुआ पर "आमीन" कही। जब मैंने दूसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो उस वक़्त उन्होंने दूसरी दुआ की। मैंने उस पर "आमीन" कही। जब मैंने

तीसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो उन्होंने तीसरी दुआ की, मैंने उस पर "आमीन" कही।

इन दुआओं की अहमियत के असबाब

आप इन दुआओं की अहमियत का अन्दाज़ा इससे लगाएँ कि दुआ माँगने वाले हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम और उस पर "आमीन" कहने वाले हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो सारे नबियों के सरदार हैं। और जुमे का दिन, ख़ुतबे का वक़्त, मुक़ाम भी मस्जिदे नबवी, इस दुआ की कबूलियत में किसी भी इनसान को शक नहीं हो सकता बल्कि यह दुआ ज़रूर कबूल होगी। मगर डरने की बात यह है कि यह दुआ दर हक़ीक़त "बद्-दुआ" थी। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बद्-दुआ माँगी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर "आमीन" कही। वे बद्-दुआएँ क्या थीं?

माँ-बाप की ख़िदमत करके जन्नत हासिल न करना

जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली सीढ़ी पर क़दम रखा उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ की कि उसकी नाक मिट्टी में भर जाए, यानी वह शख़्स तबाह हो जाए जिसने अपने माँ-बाप को बुढ़ापे की हालत में पाया फिर भी अपनी मग़फ़िरत न करा सका। यानी जिस शख़्स के माँ-बाप बुढ़ापे की हालत में पहुँच चुके हों उसके लिए जन्नत हासिल करना आसान है क्योंकि अगर वह एक क़दम भी माँ-बाप की ख़िदमत में उठा लेगा और उनके दिल को खुश कर देगा तो अल्लाह तआला की रहमतें नाज़िल होना शुरू हो जाएँगी। हदीस शरीफ़ में आता है कि अगर कोई शख़्स एक बार मुहब्बत की निगाह से माँ-बाप को देख ले तो उसके लिए एक हज और एक उमरे का सवाब लिखा जाएगा। इसलिए जब एक निगाह डालने का यह सवाब है तो उनकी ख़िदमत और इताअत (हुक्म का पालन) करने का क्या अज्र व सवाब होगा, इसका अन्दाज़ा आप लगाएँ। और माँ-बाप इनसान की दुनिया व आख़िरत की कामयाबी और बेहतराई के ज़ामिन हैं। और

माँ-बाप का मामला यह है कि उनको ज़रा ख़ुश कर दो तो वे तुम्हें ढेरों दुआएँ देते हैं। इसलिए माँ-बाप की ख़िदमत और फ़रमाँबरदारी करके जन्नत हासिल करना बहुत आसान है। लेकिन जिस शख़्स ने माँ-बाप को उनके बुढ़ापे की हालत में पाने के बावजूद अपनी मग़फ़िरत का सामान नहीं किया, वह शख़्स बरबाद हो जाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम सुनकर दुरूद शरीफ़ न पढ़ना

फिर जिस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दूसरी सीढ़ी पर क़दम रखा तो उस वक़्त हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ फ़रमाई कि उस शख़्स की नाक मिट्टी से भर जाए, यानी वह शख़्स तबाह हो जाए जिसके सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र किया गया मगर उसने आप पर दुरूद नहीं भेजा। ज़ाहिर बात है कि इस कायनात में एक ईमान वाले के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बड़ा मोहसिन और कोई नहीं हो सकता। पूरी इनसानियत के लिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बड़ा मोहसिन (एहसान करने वाला) कोई पैदा नहीं हुआ। आप क़ुरबानियाँ देकर, तंगदस्ती और फ़ाक़े उठाकर, तंगियाँ और मुसीबतें झेलकर, लड़ाई लड़कर तुम्हारे लिए ईमान की दौलत छोड़ गये। अब तुम्हारे दिल में इस एहसान का इतना भी एहसास न हो कि जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र आने पर आप पर दुरूद भी न भेजे, यह कितनी बड़ी नाशुक्री और एहसान फ़रामोशी है। जिस पर जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने बद्-दुआ दी और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने "आमीन" कही।

दुरूद पढ़ने में कन्जूसी न करें

दूरूद शरीफ़ का कोई भी जुमला पढ़ लेने से यह फ़रीज़ा अदा हो जाता है और **"सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम"** भी उनमें से एक दुरूद है। इसलिए मुसलमानों का यह मामूल रहा है कि जब भी नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िक्र आता है तो उस पर "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" ज़रूर कहते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! अब भी यह मामूल जारी है इसलिए सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहने से भी यह फ़रीज़ा अदा हो जाता है। अलबत्ता हमारे यहाँ जो यह रिवाज चल पड़ा है कि लिखते वक़्त पूरा "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" लिखने के बजाए सिर्फ़ "सल्अम" लिख दिया या सिर्फ़ "स०/ सल्ल०" लिख दिया, इस तरीक़े से यह फ़रीज़ा अदा नहीं होता। यह सारा बुख़्ल (कन्जूसी) क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ करना है? यह छोड़ने देने के क़ाबिल है इसके बजाए बोलने में भी और लिखने में भी पूरा "सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम" अदा करना चाहिये वरना इस बात का ख़तरा है कि कहीं हम इस बद्-दुआ के मुस्तहिक़ न बन जाएँ।

रमज़ान गुज़र जाने के बावजूद मग़फ़िरत न होना

जब तीसरी सीढ़ी पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़दम रखा तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ फ़रमाई कि उस शख़्स की नाक मिट्टी से भर जाए यानी वह शख़्स तबाह हो जाए जिस पर पूरा रमज़ान मुबारक का महीना गुज़र जाए और वह अपनी मग़फ़िरत न करा ले। इसलिए आज का दिन डरने का है इस बात से कि ख़ुदा न करे कहीं हम इस हदीस की वईद (डाँट और धमकी) के मिस्दाक़ न बन जाएँ कि सारा रमज़ान गुज़र जाए और हम अपनी मग़फ़िरत न करा लें। इसलिए कि अल्लाह तआला ने रमज़ान मुबारक का महीना तुम्हारे गुनाह धोने के लिए और तुम्हारा मैल-कुचैल साफ़ करने के लिए अता फ़रमाया था और तुम्हारे गुनाहों को मग़फ़िरत के तालाब में डुबो कर साफ़ करने के लिए दिया था। इस महीने में मग़फ़िरत कराना कोई मुश्किल नहीं था। सारी रात अल्लाह का मुनादी आवाज़ लगा रहा था कि है कोई मग़फ़िरत माँगने वाला जिसकी मैं मग़फ़िरत करूँ? है कोई रिज़्क़ माँगने वाला जिसको मैं रिज़्क़ दूँ? है कोई मुसीबत में गिरफ़्तार जिसकी तकलीफ़ों और मुसीबतों को मैं दूर करूँ? रात भर अल्लाह का मुनादी यह आवाज़ें लगा रहा था।

मग़फ़िरत के बहाने

और अल्लाह तआ़ला ने वायदा किया था कि अगर तुम रोज़े रख लोगे तो तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ कर देंगे। तरावीह की पाबन्दी कर लोगे तो तुम्हारे पिछले गुनाह माफ़ कर देंगे। किसी अल्लाह के बन्दे को इफ़्तार करा दोगे तो इस पर तुम्हारी मग़फ़िरत कर देंगे। जो रोज़ा तुमने रखा है उसके लम्हे-लम्हे पर इबादत लिखी जा रही है और तुम्हारे गुनाहों की मग़फ़िरत हो रही है।

बहरहाल! अल्लाह तआ़ला ने तो तुम्हारी मग़फ़िरत के लिए इतने बहाने बना रखे थे इसलिए मग़फ़िरत हासिल करने का इससे ज़्यादा अच्छा मौक़ा नहीं था। जिसने यह मौक़ा भी गंवा दिया उसके लिए जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने यह बद्-दुआ़ फ़रमाई। इसलिए यह डरने का दिन है।

अल्लाह तआ़ला से अच्छी उम्मीद रखो

लेकिन अल्लाह तआ़ला की रहमत से यह उम्मीद रखो कि इन्शा-अल्लाह! हम इस बद्-दुआ़ में शामिल नहीं। जब उस ज़ात ने रोज़े रखने की तौफ़ीक़ बख़्शी और यह वायदा फ़रमाया कि जो शख़्स ईमान के साथ सवाब की नीयत से रोज़े रखेगा, मैं उसके सारे पिछले गुनाह बख़्श दूँगा तो अल्लाह तआ़ला की रहमत से यही उम्मीद रखनी चाहिये कि इन्शा-अल्लाह! हमारी भी मग़फ़िरत फ़रमा देंगे। अलबत्ता अपनी ग़लतियों और कोताहियों की वजह से ज़रूर डरते रहो, इसी का नाम ईमान है। ईमान ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान है।

ईदगाह में सब की मग़फ़िरत फ़रमाना

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब मुसलमान सारे महीने रोज़ा रखने और तरावीह पढ़ने के बाद ईद की नमाज़ अदा करने के लिए ईदगाह में जमा होते हैं तो अल्लाह तआ़ला उस वक़्त अपने फ़रिश्तों पर फ़ख़्र (गर्व) फ़रमाते हैं कि ऐ फ़रिश्तो! तुम तो कहते थे कि आदम की औलाद ज़मीन पर जाकर फ़साद मचाएगी आज उस आदम की औलाद को ईदगाह के

मैदान में देखो और मुझे बताओ कि एक मज़दूर जिसने अपनी मज़दूरी पूरी कर ली हो, उसको क्या सिला मिलना चाहिये?

जवाब में फ़रिश्ते फ़रमाते हैं कि ऐ अल्लाह! जिस मज़दूर ने अपना काम पूरा कर लिया हो, उसका बदला यह है कि उसकी पूरी-पूरी मज़दूरी दे दी जाए। उसमें कोई कमी न की जाए। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाकर कहता हूँ ये बन्दे जो मेरे सामने हैं, इन पर रमज़ान में जो फ़रीज़ा आयद किया गया था वह इन्होंने पूरा कर दिया अब ये मुझे पुकारने के लिए ईदगाह में जमा हुए हैं और मुझ से दुआ करने के लिए आए हैं। मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की, अपनी बादशाहत और अपने करम की क़सम खाकर कहता हूँ कि आज के दिन मैं इन सब की दुआएँ कबूल करूँगा और इनको ईदगाह के मैदान से इस तरह वापस भेजूँगा कि इन सब की मग़फ़िरत हो चुकी होगी और इनकी बुराईयों को भी भलाईयों से बदल दूँगा।

वरना तौफ़ीक़ क्यों देते?

अगर ईदगाह के मैदान में बुलाकर नवाज़ना मक़सद न होता, हमारी और आपकी मग़फ़िरत करना मक़सद न होता तो फिर रमज़ान में रोज़े रखने और तरावीह पढ़ने की तौफ़ीक़ ही क्यों देते? मस्जिद में आने की और तिलावत करने की तौफ़ीक़ ही क्यों देते? जब उन्होंने इन इबादतों की तौफ़ीक़ दी है तो उनकी रहमत से उम्मीद है कि उन्होंने हमारे साथ ख़ैर का इरादा फ़रमाया है। मग़फ़िरत का इरादा फ़रमाया है। लेकिन कहीं ऐसा न हो कि वह तो हमारी मग़फ़िरत का इरादा फ़रमा रहे हैं और हम इस फ़िक्र में लगे हुए हों कि किसी तरह और गुनाहों को बढ़ा लें। इसलिए कि हम तो गुनाह पर लगे हुए हैं और अपने आमाल के ज़रिये इस बात का इज़हार कर रहे हैं कि हमें मग़फ़िरत नहीं चाहिये।

ईद के दिन गुनाहों में बढ़ोतरी

इसलिए जैसे ही ईद का दिन आया, बस गुनाहों का सैलाब उमड़

आया। न अल्लाह का कोई ख़्याल, न अल्लाह के रसूल की कोई फ़िक्र, न अल्लाह तआ़ला के सामने जवाबदेही का कोई एहसास। इस ईद के दिन गुनाहों पर गुनाह हो रहे हैं। अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानियाँ की जा रही हैं। गाना बजाना जो काफ़िरों का खुशियाँ मनाने का तरीक़ा था वह हमने इख़्तियार कर लिया। औरतों ने बेपर्दगी और बेहिजाबी इख़्तियार कर ली और अल्लाह तआ़ला के एक-एक हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करके ईद का दिन मनाया जा रहा है। यह कैसी ईद हुई? वह तो मग़फ़िरत का इरादा फ़रमा रहे हैं लेकिन हमने गुनाह करके जहन्नम में जाने का इरादा कर रखा है। अल्लाह पाक हम सबको इस अन्जाम से महफ़ूज़ रखे। आमीन।

मुसलमानों की ईद दुनिया की दूसरी क़ौमों से निराली है

अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को जो ईद अ़ता फ़रमाई है वह दुनिया की सारी क़ौमों की ईदों से निराली है। सारी दुनिया में जो ईदें मनायी जाती हैं वे किसी तारीख़ी (ऐतिहासिक) घटना की याद में मनायी जाती हैं। जैसे ईसाई लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के जन्म दिन पर "क्रिसमस" का दिन मनाते हैं। यह पैदाईश एक वाक़िआ (घटना) है। यक़ीनी तौर पर यह साबित नहीं कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम 25 दिसम्बर को पैदा हुए थे बल्कि उनके जाने के तीन सौ साल बाद लोगों ने यह तारीख़ मुक़र्रर कर ली। इसी तरह दुनिया भर के जितने धर्म हैं उनके त्यौहार पिछले ज़माने की किसी न किसी घटना से जुड़े हुए होते हैं लेकिन अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों को जो त्यौहार अ़ता फ़रमाए हैं वे पिछले ज़माने की किसी घटना या बात से जुड़े हुए नहीं हैं बल्कि ये त्यौहार अल्लाह तआ़ला ने उस मौक़े पर अ़ता फ़रमाए जिस मौक़े पर हर साल मुसलमानों के लिए ख़ुशी का मौक़ा पेश आता है। चुनाँचे ईदुल-फ़ित्र उस मौक़े पर अ़ता फ़रमाई जब मुसलमान रोज़े की शानदार इबादत पूरी करते हैं। इस तरह हर साल यह नेमत मिल रही है और ख़ुशी हासिल हो रही है। और इस पर शुक्र के तौर पर ईद आ रही है। और ईदुल-अज़्हा उस मौक़े पर अ़ता फ़रमाई जब मुसलमान दूसरी अ़ज़ीमुश्शान इबादत यानी हज को पूरा

करते हैं।

ईद की ख़ुशी का हक़दार कौन?

लिहाज़ा तुमने चूँकि रमज़ान मुबारक के रोज़े रखे हैं और तुमने तरावीह पढ़ी हैं, इसलिए तुम इस ईदुल-फ़ित्र के इनाम के हक़दार हो। और तुमने चूँकि हज की इबादत अन्जाम दी है इसलिए इस ईदुल-अज़्हा के इनाम के हक़दार हो। अल्लाह तआ़ला ने मुसलमानों के ख़ुशी मनाने का जो तरीक़ा अ़ता फ़रमाया है वह भी दुनिया की सारी क़ौमों से निराला है। वह यह कि ईद की नमाज़ के लिए मैदान में आ जाओ। दूसरे दिनों में तो मस्जिद में नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है लिहाज़ा ईद के दिन नवाज़िश और रहमत की बारिश करने के लिए मैदान में बुलाया और मैदान में आने से पहले सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा कर दो ताकि जो लोग ग़रीब हैं, जिनके चूल्हे ठंडे हैं, उनको कम-से-कम उस दिन यह फ़िक्र न हो कि खाना कहाँ से आएगा? ख़ुशी मनाने का यह निराला अन्दाज़ अ़ता फ़रमाया। लेकिन हमने यह तरीक़ा छोड़कर काफ़िरों का तरीक़ा इख़्तियार कर लिया। जिस तरह वे लोग गाने बजाते हैं, और बुरी बातों और अश्लील हरकतों में अपने त्यौहारों के वक़्त को ख़र्च करते हैं हमने भी उसी तरह शुरू कर दिया।

अल्लाह तआ़ला तो मग़फ़िरत फ़रमाना चाहते हैं लेकिन हमने गुनाह के काम करने शुरू कर दिये, यह बिल्कुल मुनासिब नहीं। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से हम सबको सही सोच अ़ता फ़रमाए और रमज़ान की बरकतें अ़ता फ़रमाए और ईद की सही ख़ुशियाँ अ़ता फ़रमाए और गुनाहों, नाफ़रमानियों और बुराईयों से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

ईदुल्-फ़ित्र
एक इस्लामी त्यौहार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا ○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○

(سورة البقرة آیت ۱۸۵)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○

रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ

मोहतरम बुज़ुर्गो और अज़ीज़ भाईयो! अल्लाह तआला का इस पर जितना शुक्र अदा किया जाए कम है कि उसने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें रमज़ान मुबारक अता फ़रमाया और इस महीने की बरकतों से हमें नवाज़ा और इसमें रोज़े रखने और तरावीह पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और फिर इस मुबारक महीने की समाप्ति पर इस महीने के अनवार व बरकतों से लाभान्वित होने की ख़ुशी में "ईदुल-फ़ित्र" अता फ़रमाई। हदीस शरीफ़ में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी अल्लाह तआला ने रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ रखी हैं। एक खुशी वह है जो इफ़्तार के वक़्त हासिल होती है और दूसरी खुशी उस वक़्त हासिल होगी जब वह क़ियामत के रोज़ अपने परवर्दिगार से जाकर मुलाक़ात करेगा। असल खुशी तो वही है जो आख़िरत में अल्लाह तआला से मुलाक़ात के वक़्त नसीब होगी, इन्शा-अल्लाह। अल्लाह तआला हर ईमान वाले को यह खुशी अ़ता फ़रमाए। आमीन।

इफ़्तार के वक़्त खुशी

लेकिन इस आख़िरत की खुशी की थोड़ी-सी झलक अल्लाह तआला ने इस दुनिया में भी रख दी है। यह वह खुशी है जो इफ़्तार के समय हासिल होती है। फिर ये इफ़्तार दो क़िस्म के हैं- एक इफ़्तार वह है जो रोज़ाना रोज़ा खोलते वक़्त होता है। इस इफ़्तार के वक़्त हर रोज़ेदार को खुशी हासिल होती है। देखिए! सारे साल खाने-पीने में इतना मज़ा और इतनी खुशी हासिल नहीं होती जो मज़ा और खुशी रमज़ान मुबारक के इफ़्तार के वक़्त हासिल होती है। हर शख़्स इसका तजुर्बा करता है। उलमा-ए-किराम रोज़ाना के इस इफ़्तार को "इफ़्तारे असग़र" (छोटा इफ़्तार) का नाम देते हैं और दूसरा इफ़्तार वह है जो रमज़ान मुबारक की समाप्ति पर होता है जिसके बाद ईदुल-फ़ित्र की खुशी होती है। उसको "इफ़्तारे अकबर" (बड़ा इफ़्तार) कहा जाता है। इसलिए कि सारे महीने अल्लाह तआला के हुक्म की तामील में रोज़े रखने और उसकी बन्दगी और इबादत करने के बाद अल्लाह तआला ईद के दिन खुशी और मसर्रत अ़ता फ़रमाते हैं। यह खुशी आख़िरत में अल्लाह तआला से मुलाक़ात के वक़्त हासिल होने वाली खुशी की एक छोटी-सी झलक है जो अल्लाह तआला ने ईद की शक्ल में बन्दों को अ़ता फ़रमाई है।

इस्लामी त्यौहार दूसरे मज़हबों के त्यौहारों से अलग तरह के हैं

और यह भी इस्लाम का निराला अन्दाज़ है कि पूरे साल में सिर्फ़ दो

त्यौहार और दो ईदें मुकर्रर की गयी हैं जबकि दुनिया के दूसरे मज़हबों और कौमों में साल के दौरान बहुत-से त्यौहार मनाए जाते हैं। ईसाइयों के त्यौहार अलग हैं, यहूदियों के त्यौहार अलग हैं, हिन्दुओं के त्यौहार अलग हैं लेकिन इस्लाम ने सिर्फ़ दो त्यौहार मुकर्रर किये हैं- एक ईदुल-फ़ित्र और दूसरा ईदुल-अज़्हा। और इन दोनों त्यौहारों को मनाने के लिए जिन दिनों को चुना गया है, वे भी दुनिया से निराले हैं। अगर आप दूसरे मज़हबों के त्यौहारों पर ग़ौर करेंगे तो यह नज़र आएगा कि वे लोग पिछले समय में पेश आने वाली किसी महत्तवपूर्ण घटना की यादगार में त्यौहार मनाते हैं। जैसे ईसाई 25 दिसम्बर को "क्रिसमस" का त्यौहार मनाते हैं और उनके कहने के अनुसार यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाईश का दिन है। हालाँकि ऐतिहासिक तौर पर यह बात ठीक नहीं। लेकिन उन्होंने अपने तौर पर यह समझ लिया कि 25 दिसम्बर को हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए थे। इसलिए आपकी पैदाईश की याद में उन्होंने "क्रिसमस" के दिन को त्यौहार के लिए मुकर्रर किया।

जिस दिन हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को और बनी इस्राईल को फ़िरऔन से नजात मिली और फ़िरऔन ग़र्क़ हो गया और मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इस्राईल को लेकर चले गये, उस दिन की याद में यहूदी अपना त्यौहार मनाते हैं। हिन्दुओं के यहाँ भी जो त्यौहार हैं वे भी गुज़रे हुए ज़माने की किसी न किसी घटना या वाक़िए की याद में मनाए जाते हैं।

इस्लामी त्यौहार गुज़रे ज़माने की किसी घटना से जुड़े हुए नहीं

जबकि इस्लाम ने जो दो त्यौहार "ईदुल-फ़ित्र" और "ईदुल-अज़्हा" मुकर्रर किये हैं, गुज़िश्ता ज़माने की कोई घटना या कोई वाक़िआ उस दिन के साथ जुड़ा हुआ नहीं। एक (प्रथम) शव्वाल को ईदुल-फ़ित्र मनायी जाती है और दस ज़िलहिज्जा को ईदुल-अज़्हा मनायी जाती है। इन दोनों

तारीख़ों में कोई बात पेश नहीं आई। इस्लाम ने न तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैदाईश के दिन को ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़्हा क़रार दिया न ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मक्का मुकर्रमा से मदीना तय्यिबा की हिजरत करने की घटना को "ईद" का दिन मुक़र्रर किया, न ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बद्र के मैदान में फ़तह (विजय) हासिल करने को "ईद" का दिन क़रार दिया, न ही जंगे-उहुद और जंगे-अहज़ाब के दिन को "ईद" का दिन मुक़र्रर किया। और जिस दिन मक्का मुकर्रमा पर जीत हुई और बैतुल्लाह की छत से हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अज़ान पहली बार गूँजी, उस दिन को भी "ईद" का दिन क़रार नहीं दिया। इस्लाम की पूरी तारीख़ और ख़ास तौर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी ऐसी बातों से मालामाल है, लेकिन इस्लाम ने इनमें से किसी वाक़िए को ईद का दिन क़रार नहीं दिया।

"ईदुल-फ़ित्र" रोज़ों के पूरा होने पर इनाम

जिन दिनों को इस्लाम ने त्यौहार के लिए मुक़र्रर किया, उनके साथ कोई ऐसा वाक़िआ़ जुड़ा नहीं जो पिछले ज़माने में एक बार पेश आकर ख़त्म हो चुका हो। बल्कि इसके बजाए ऐसे ख़ुशी के वाक़िआ़त को त्यौहार की बुनियाद क़रार दिया जो हर साल पेश आते हैं और उनकी ख़ुशी में ईद मनायी जाती है। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने दोनों ईदें ऐसे मौक़े पर मुक़र्रर फ़रमाई हैं जब मुसलमान किसी इबादत को मुकम्मल करते हैं। इसलिए ईदुल-फ़ित्र रमज़ान के गुज़रने के बाद रखी है कि मेरे बन्दे पूरे महीने इबादत के अन्दर लगे रहे, पूरे महीने उन्होंने मेरी ख़ातिर खाना पीना छोड़े रखा, नफ़्सानी ख़्वाहिशों को छोड़े रखा और पूरा महीना इबादत के अन्दर गुज़ारा, उसकी ख़ुशी और इनाम में यह ईदुल-फ़ित्र मुक़र्रर फ़रमाई।

"ईदुल-अज़्हा" हज के पूरा होने पर इनाम

और ईदुल-अज़्हा ऐसे मौक़े पर मुक़र्रर फ़रमाई। जब मुसलमान एक

दूसरी अ़ज़ीम इबादत यानी हज को पूरा करते हैं। इसलिए कि हज का सबसे बड़ा रुक्न "वुक़ूफ़े अ़र्फ़ा" (यानी अ़रफ़ात में ठहरना) नौ (9) ज़िलहिज्जा को अदा किया जाता है। इस तारीख़ को पूरी दुनिया से आए लाखों मुसलमान मैदाने अ़रफ़ात में जमा होकर अल्लाह तआ़ला की अ़ज़ीम इबादत को पूरा करते हैं। इस इबादत को पूरे करने के अगले दिन यानी दस ज़िलहिज्जा को अल्लाह तआ़ला ने दूसरी ईद मुक़र्रर की। इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने यह सबक़ दे दिया कि गुज़रे हुए ज़माने के वे वाक़िआ़त जो एक बार पेश आए और ख़त्म हो गये वे वाक़िआ़त तुम्हारे लिए ईद की बुनियाद नहीं, बेशक तुम्हारा इतिहास उन घटनाओं से जगमगा रहा है और तुम्हें उन पर गर्व करने का भी हक़ पहुँचता है कि तुम्हारे बड़ों (पूर्वजों) ने ये कारनामे अन्जाम दिये थे लेकिन तुम्हारे लिए उनका अ़मल काफ़ी नहीं। तुम्हारे लिए तुम्हारा अपना अ़मल होना ज़रूरी है। कोई शख़्स आख़िरत में सिर्फ़ इस बुनियाद पर नजात नहीं पाएगा कि मेरे बड़ों (बाप-दादा) ने इतने बड़े कारनामे अन्जाम दिये थे, बल्कि वहाँ पर हर आदमी को अपने अ़मल का जवाब देना होगा। अ़ल्लामा इक़बाल मरहूम ने ख़ूब कहा किः

थे तो वह आबा तुम्हारे मगर तुम क्या हो
हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िरे फ़र्दा हो

इसलिए सिर्फ़ पुरानी घटनाओं पर ख़ुशी मनाते रहना ईमान वाले के लिए यह काफ़ी नहीं बल्कि ख़ुद तुम्हें अपने अ़मल को देखना है। अगर तुम्हारे अपने अ़मल के अन्दर अच्छाई है तो ख़ुशी मनानी है और अगर बुराई है तो रंज करना है और शर्मिन्दगी का इज़हार करना है।

ईद का दिन "इनाम का दिन" है

बहरहाल! यह ईदुल-फ़ित्र ख़ुशी मनाने का और इस्लामी त्यौहार का पहला दिन है। हदीस में इसको "इनाम का दिन" भी क़रार दिया गया है। यानी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पूरे महीने की इबादतों पर इनाम दिये जाने का दिन है जो "मग़फ़िरत" की शक्ल में दिया जाता है। चूँकि एक

हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इरशाद फ़रमाते हैं कि जब रमज़ान मुबारक का महीना गुज़र जाने के बाद ईद का दिन आता है तो अल्लाह तआ़ला ईमान वालों की तरफ़ इशारा करके फ़रिश्तों पर फ़ख़्र (गर्व) फ़रमाते हैं।

इनसान की पैदाईश पर फ़रिश्तों के एतिराज़ का जवाब

इसलिए गर्व फ़रमाते हैं कि जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया जा रहा था तो इन फ़रिश्तों ने एतिराज़ किया था और अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ किया था किः

"आप मिट्टी के इस पुतले को पैदा कर रहे हैं जो ज़मीन पर जाकर फ़साद फैलाएगा और ख़ून बहायेगा और एक-दूसरे के गले काटेगा और हम आपकी पाकी और तारीफ़ बयान करने के लिए काफ़ी हैं"।

(सूरः ब-क़रह् आयत 30)

जवाब में अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

"मैं इस मख़्लूक़ के बारे में वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

(सूरः ब-क़रह् आयत 30)

मैं जानता हूँ कि इस मख़्लूक़ के अन्दर हालाँकि मैंने फ़साद का माद्दा भी रखा है, फ़साद फैलाने की भी सलाहियत इसके अन्दर मौजूद है लेकिन इसके बावजूद जब यह मख़्लूक़ मेरे हुक्म की तामील करेगी और इबादत और बन्दगी करेगी तो यह तुमसे भी आगे बढ़ जाएगी। क्योंकि तुम्हारे अन्दर मैंने फ़साद का माद्दा ही नहीं रखा। चुनाँचे अगर तुम गुनाह करना भी चाहो तो गुनाह नहीं कर सकते। न तुमको भूख लगती है न तुमको प्यास लगती है। न तुम्हारे दिल में जिस्मानी और नफ़्सानी ख़्वाहिशें पैदा होती हैं। तुम्हें तो सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया है कि बस "अल्लाह अल्लाह" करते रहो और अल्लाह तआ़ला के हुक्म की तामील करते रहो। लेकिन इस इनसान को भूख भी लगेगी, प्यास भी लगेगी, जिस्मानी इच्छाएँ भी पैदा होंगी, और जब मैं इस मख़्लूक़ से यह कह दूँगा कि मत खाना जब मैं उससे कह दूँगा कि मत पीना तो इस हुक्म के नतीजे में इनसान

सारा दिन इस तरह गुज़ार देगा। अन्दर से प्यास लग रही होगी, फ्रिज में ठंडा पानी मौजूद होगा, कमरे में कोई दूसरा इनसान देखने वाला नहीं होगा लेकिन इसके बावजूद सिर्फ़ वह मेरे डर से और मेरी बड़ाई के ख़्याल से और मेरे हुक्म के पालन में अपने होंठों को ख़ुश्क किये हुए होगा। इस सिफ़त की वजह से यह इनसान तुमसे भी आगे बढ़ जाएगा।

आज मैं इन सब की मग़फ़िरत कर दूँगा

बहरहाल! ईदुल-फ़ित्र के दिन जब मुसलमान ईदगाह में जमा होते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हीं फ़रिश्तों के सामने जिन्होंने एतिराज़ किया था, फ़ख़्र (गर्व) करते हुए फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे फ़रिश्तो! ये हैं मेरे बन्दे जो इबादत में लगे हुए हैं और बताओ कि जो मज़दूर अपना काम पूरा कर ले उसको क्या सिला मिलना चाहिये? जवाब में फ़रिश्ते फ़रमाते हैं कि जो मज़दूर अपना काम पूरा कर ले उसका सिला यह है कि उसको उसकी पूरी-पूरी मज़दूरी दे दी जाए उसमें कोई कमी न की जाए। अल्लाह तआ़ला फिर फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि ये मेरे बन्दे हैं। मैंने रमज़ान के महीने में इनके ज़िम्मे एक काम लगाया था कि रोज़े रखें और मेरी ख़ातिर खाना-पीना छोड़ दें और अपनी ख़्वाहिशों को छोड़ दें। आज इन्होंने यह फ़रीज़ा पूरा कर लिया और अब ये इस मैदान के अन्दर जमा हुए हैं और मुझसे दुआएँ माँगने के लिए आए हैं। अपनी मुरादें माँग रहे हैं। मैं अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम खाता हूँ कि आज में सबकी दुआएँ क़बूल करूँगा और मैं इनके गुनाहों की मग़फ़िरत करूँगा और इनकी बुराइयों को भी नेकियों में बदल दूँगा।

चुनाँचे हदीस शरीफ़ में आता है कि जब रोज़ेदार ईदगाह से वापस जाते हैं तो इस हालत में जाते हैं कि उनकी मग़फ़िरत हो चुकी होती है।

ईदगाह में नमाज़ अदा की जाए

यह कोई मामूली इनाम नहीं है कि अल्लाह तआ़ला पूरे मजमे की मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं। इसी वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ईद की नमाज़ के लिए इस बात को सुन्नत क़रार दिया कि मुसलमान

बड़ी से बड़ी तायदाद में खुले मैदान में जमा हों और मजमा ख़ूब ज़्यादा हो क्योंकि मजमा जब बड़ा होगा तो उस मजमे में न जाने किस अल्लाह के बन्दे की बरकत से अल्लाह तआला पूरे मजमे पर फ़ज़्ल फ़रमा दे। अल्लाह तआला की शाने रहीमी तो ऐसी है कि अगरचे इनाम के हक़दार तो कुछ अफ़राद होते हैं जिन्होंने सही मायनों में अल्लाह तआला की बन्दगी की थी, लेकिन जब अल्लाह तआला अपने नेक बन्दों को अपनी रहमत से नवाज़ते हैं तो मुझ जैसे नाकारा भी अगर वहाँ मौजूद हों तो अल्लाह तआला यह फ़रमाते हैं कि इन कुछ अफ़राद की तो मग़फ़िरत कर दूँ और बाक़ी लोगों की न करूँ यह मेरी रहमत से बईद है। इसलिए सबको अपने फ़ज़्ल व करम से नवाज़ देते हैं।

अपने आमाल पर नज़र मत करो

इसलिए यह ईद का दिन जो अल्लाह तआला ने हमें अता फ़रमाया और इस दिन में ईद की नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई यह कोई मामूली बात नहीं है। यह ज़िन्दगी के अन्दर इन्क़िलाब लाने वाली बात है। इसके नतीजे में अल्लाह तआला ने इन्शा-अल्लाह सबकी मग़फ़िरत फ़रमा दी है और अल्लाह तआला की रहमत से यही उम्मीद रखनी चाहिये।

हमारे दिलों में ये जो ख़्यालात आते हैं कि हमने बेशक इबादत तो कर ली लेकिन इस इबादत का हक़ तो अदा न हो सका। क्या हमारे रोज़े क्या हमारी नमज़ें, क्या हमारी तिलावत, क्या हमारा ज़िक्र व तस्बीह, न उसमें आदाब की पूरी रियायत है न उसमें शर्तों की पूर्ती है, इसलिए इन इबादतों के नतीजे में कैसे यह उम्मीद बाँधें कि अल्लाह तआला ने इन इबादतों को क़बूल करके हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दी होगी।

उनके फ़ज़्ल से उम्मीद रखो

ख़ूब याद रखें! अपने आमाल के ज़रिये तो उम्मीद नहीं बाँधनी चाहिये क्योंकि हमारे आमाल तो इस लायक़ ही नहीं हैं कि वे अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करने के क़ाबिल हों। उनकी शान के मुताबिक़

हों। हाँ! उनकी रहमत से ज़रूर उम्मीद बाँधें। उनके फ़ज़्ल व करम से उम्मीद बाँधें। बेशक ये आमाल हमारी निस्बत से खोटी पूँजी है लेकिन उनकी रहमत से उम्मीद है कि इन टूटे-फूटे आमाल को भी कबूल फ़रमा लेंगे। जब उन्होंने यह कह दिया है कि मैं तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दूँगा यानी ये आमाल जो तुम हमारी बारगाह में पेश कर रहे हो इनमें बहुत-सी ख़ामियाँ हैं और बहुत-सी बुराइयाँ हैं, लेकिन जब तुम मेरी ख़ातिर यहाँ आए हो तो मैं तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दूँगा। इसलिए हर मोमिन को यह उम्मीद रखनी चाहिये कि इस रमज़ान में मेरी मग़फ़िरत हो गयी। इसलिए कि जब उन्होंने मग़फ़िरत का वायदा किया है तो ज़रूर कर दी है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का इरशाद

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अ़मल किये बग़ैर अल्लाह तआ़ला से उम्मीद बाँध रहा है कि अल्लाह तआ़ला मेरी मग़फ़िरत फ़रमा देंगे और मुझे जन्नत में दाख़िल कर देंगे। ऐसा शख़्स अपने आप को धोखा दे रहा है। और जो शख़्स अपने अ़मल पर भरोसा कर रहा है कि मैंने चूँकि अच्छा अ़मल किया है इसलिए मैं ज़रूर जन्नत में जाऊँगा, ऐसा शख़्स भी अपने आप को धोखा दे रहा है। सही तरीक़ा यह है कि अमल भी किये जाओ लेकिन अपने अ़मल पर भरोसा मत करो। अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद बाँधो और अल्लाह तआ़ला की रहमत पर भरोसा करो।

अ़मल किये बग़ैर उम्मीद बाँधना ग़लती है

अ़मल किये बग़ैर अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीदें बाँधना इसलिए ग़लत है कि अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद फ़रमा दिया है कि मेरी रहमत उसी के लिए है जो अ़मल करता है। अगर कोई शख़्स अ़मल ही कुछ नहीं करता बल्कि ग़फ़लत में वक़्त गुज़ार रहा है तो ऐसे शख़्स को यह जान लेना चाहिये कि जिस तरह अल्लाह तआ़ला ग़फ़ूरुर्रहीम (यानी माफ़ करने वाले और रहम करने वाले) हैं इसी तरह सख़्त सज़ा देने वाले

भी हैं। इसलिए जो शख़्स अमल किये बग़ैर अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद बाँध रहा है वह दर असल अपने को धोखा दे रहा है। लेकिन अगर किसी शख़्स ने अमल कर लिया और क़दम आगे बढ़ा दिया लेकिन उसमें नुक़्स और कोताहियाँ रह गईं तो चूँकि उसने अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए क़दम बढ़ाया था इसलिए अल्लाह तआला उस पर रहमत फ़रमा देते हैं और उसकी कोताहियों को दरगुज़र फ़रमा कर उनको नेकियों से बदल देते हैं। इसलिए अमल भी करते रहो और भरोसा अल्लाह तआला की ज़ात पर करो।

यही मामला हमारा है। न हमारे रोज़े अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करने के लायक़ हैं, न तरावीह अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करने के लायक़ हैं, न तिलावत अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करने के लायक़ है, लेकिन अगर उनकी रहमत पर नज़र करें तो वह यह फ़रमा रहे हैं, मैं तुम्हारी बुराइयों को भी अच्छाइयों से बदल दूँगा। इसलिए उम्मीद यह रखनी चाहिये कि अल्लाह तआला ने अपने वायदे को पूरा फ़रमाया है और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा दी है।

आईन्दा भी इस दिल को साफ़ रखना

और मग़फ़िरत का मतलब यह है कि हमारे बातिन में (यानी अन्दर) गुनाहों का जो मैल-कुचैल था अल्लाह तआला ने उसको धोकर साफ़ कर दिया। अब तुम सब सफ़ेद साफ़-सुथरे धुले हुए कपड़े की तरह हो। अब साफ़ कपड़े की हिफ़ाज़त करना क्योंकि कपड़ा जितना सफ़ेद साफ़ और धुला होगा उतना ही उस पर धब्बा बुरा मालूम होगा। और अगर कपड़ा पहले से मैला है उस पर दाग़-धब्बे लगे हुए हैं उस पर एक दाग़ और लग जाए तो पता भी नहीं चलेगा। इसलिए जब अल्लाह तआला ने आज ईद के दिन हमें और आपको धोकर साफ़ और उजला कर दिया तो अब हमारा काम यह है कि उस कपड़े की हिफ़ाज़त करें और अब गुनाह का धब्बा न लगे। अब उस पर गुनाह और नाफ़रमानी का दाग़ न लगे और इस फ़िक्र में न रहो कि अगर दाग़ लग भी गये तो अगले रमज़ान में

दोबारा धुल जाएँगे। अरे किसको मालूम है कि अगला रमज़ान नसीब हो या न हो। किसको मालूम है कि आईन्दा गुनाह से तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी या नहीं। इसलिए आईन्दा आने वाली ज़िन्दगी में गुनाह के धब्बे से बचने की पूरी कोशिश करो।

खुलासा

बहरहाल जो आयत मैंने शुरू में पढ़ी थी कि:

"यानी मैंने यह ईद का दिन ऐसे मौक़े पर मुक़र्रर किया है कि जिसमें तुम रमज़ान के रोज़ों की गिनती पूरी करो और अल्लाह तआ़ला की तकबीर करो (यानी बड़ाई बयान करो) ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ। (सूरः ब-क़रह् आयत 185)

शुक्रगुज़ार बनने का रास्ता यही है कि जिस ज़ात ने तुम्हारी बुराईयों को भी अच्छाइयों से बदल दिया है, उसकी नाफ़रमानी से और गुनाहों से आईन्दा ज़िन्दगी को बचाने की फ़िक्र करो।

आज का दिन हमारे और आपके लिए अल्हम्दु लिल्लाह खुशी का दिन भी है। फ़रहत का दिन भी है। और अल्लाह की रहमत से मग़फ़िरत (बख़्शिश) की उम्मीद रखने का दिन भी है। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इस फ़रीज़े की अदायगी की तौफ़ीक़ भी अ़ता फ़रमाए और आईन्दा ज़िन्दगी को गुनाहों से और नाफ़रमानियों से बचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

जनाज़े के आदाब और छींकने के आदाब

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ٥

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ نَحۡمَدُهٗ وَنَسۡتَعِيۡنُهٗ وَنَسۡتَغۡفِرُهٗ وَنُؤۡمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيۡهِ وَنَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنۡ شُرُوۡرِ اَنۡفُسِنَا وَمِنۡ سَيِّاٰتِ اَعۡمَالِنَا، مَنۡ يَّهۡدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنۡ يُّضۡلِلۡهُ فَلَا هَادِىَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَنَشۡهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصۡحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسۡلِيۡمًا كَثِيۡرًا ٥ اَمَّا بَعۡدُ!

हदीसः हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें सात चीज़ों का हुक्म फ़रमाया। मरीज़ की इयादत (मिज़ाज पुर्सी) करना। जनाज़ों के पीछे जाना। छींकने वाला अगर अल्हम्दु लिल्लाहि कहे तो उसका जवाब देना। कमज़ोर की मदद करना। मज़लूम की मदद करना। सलाम को फैलाना। क़सम खाने वाले की मदद करना। (बुख़ारी शरीफ़)

जनाज़े के पीछे चलने का हुक्म मर्दों के लिए है

एक मुसलमान के ज़िम्मे दूसरे मुसलमानों के जो हुक़ूक़ हैं उनमें से दो का बयान पीछे हो चुका। नम्बर एक- सलाम का जवाब देना। नम्बर दो- मरीज़ की इयादत करना। तीसरा हक़ जो इस हदीस में बयान फ़रमाया

वह है "जनाज़ों के पीछे जाना"। यह भी बड़ी फ़ज़ीलत वाला काम है और मरने वाले का हक़ है। अलबत्ता यह हक़ मर्दों पर है औरतों पर यह हक़ नहीं है। और मरीज़ की बीमार-पुर्सी करने का अ़मल मर्द के लिए भी है और औरत के लिए भी है। और मरीज़ की इयादत का जो सवाब मर्द के लिए है वही सवाब औरत के लिए भी है। लेकिन जनाज़ों के पीछे जाना सिर्फ़ मर्दों के साथ ख़ास है। अलबत्ता औरतें ताज़ियत (यानी मरने वाले के प्रति उसके रिश्तेदारों और घर वालों से ग़म और अफ़सोस ज़ाहिर करने) के लिए जा सकती हैं और "इन्शा-अल्लाह" अल्लाह तआ़ला की ज़ात से उम्मीद है कि उनको ताज़ियत करने में भी वही अज्र व सवाब हासिल हो जाएगा जो मर्दों को जनाज़े के पीछे जाने से हासिल होता है।

जनाज़े के पीछे चलने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जनाज़े के पीछे चलने की बड़ी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। चुनाँचे एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

जो शख़्स जनाज़े के साथ उसकी नमाज़ पढ़े जाने तक हाज़िर रहे उसको एक 'क़ीरात' सवाब मिलेगा। और जो शख़्स दफ़न तक शरीक रहे उसको दो 'क़ीरात' सवाब मिलेगा। किसी सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सवाल किया या रसूलल्लाह! ये दो क़ीरात कैसे होंगे? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि ये दो क़ीरात दो बड़े पहाड़ों के बराबर होंगे। बहरहाल! नमाज़े जनाज़ा पढ़ने और दफ़न तक शरीक होने का बहुत बड़ा सवाब है।

जनाज़े में शिर्कत के वक़्त नीयत क्या हो?

जनाज़े के पीछे जाने का अ़मल ऐसा है जो हम सब करते हैं। शायद ही कोई शख़्स ऐसा होगा जो कभी भी जनाज़े के पीछे नहीं गया होगा बल्कि हर शख़्स को इस अ़मल से वास्ता पड़ता है। लेकिन सही तरीक़ा मालूम न होने की वजह से यह अ़मल भी एक रस्मी ख़ानापुरी होकर रह जात है। जैसे कभी-कभी जनाज़े में शिर्कत का मक़सद यह होता है कि

अगर शिर्कत न की तो लोग नाराज़ हो जाएँगे। यह नीयत और मक्सद ग़लत है। इसलिए जनाज़े में शिर्कत करते समय अपनी नीयत ठीक कर लो और यह नीयत कर लो कि मैं इस मुसलमान का हक़ अदा करने के लिए शिर्कत कर रहा हूँ। और जनाज़े के पीछे चलना चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है और आपका हुक्म है इसलिए मैं भी आपकी इत्तिबा और पैरवी में शरीक रहा हूँ। इस नीयत से जब शिर्कत करोगे तो इन्शा-अल्लाह तआला यह अमल बड़े अज्र व सवाब का ज़रिया बन जाएगा।

जनाज़े के साथ चलते वक़्त कलिमा-ए-शहादत पढ़ना

दूसरे यह कि जनाज़े में शिर्कत करने का तरीक़ा सुन्नत के मुताबिक़ होना चाहिये। जानकारी न होने और बेध्यानी की वजह से हम बहुत-सी सुन्नतों पर अमल करने से मेहरूम रह जाते हैं और बिना वजह अज्र व सवाब बेकार कर देते हैं। ज़रा-सा ध्यान अगर कर लेंगे तो एक ही अमल में बहुत सारे सवाब हासिल हो जाएँगे। जैसे जानकारी न होने की वजह से हमारे यहाँ एक तरीक़ा यह चल पड़ा है कि जब जनाज़े को कन्धा दिया जाता है तो एक आदमी बुलन्द आवाज़ से नारा लगाता है "कलिमा-ए-शहादत" और दूसरे लोग उसके जवाब में बुलन्द आवाज़ से "अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अब्दुहू व रसूलुहू" पढ़ते हैं। यह तरीक़ा बिल्कुल ग़लत है। इसकी शरीअत में कोई असल नहीं। यह अमल न तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किया न सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने किया, और न ही हमारे बुज़ुर्गाने दीन से यह अमल साबित है बल्कि दीन के आलिमों ने लिखा है कि जनाज़े के साथ जाते हुए किसी तरह का कोई ज़िक्र बुलन्द आवाज़ से करना मक्रूह है। और जनाज़े के साथ जाने का अदब यह है कि ख़ामोश चले, बिना ज़रूरत बातें करना भी अच्छा नहीं। इसलिए "कलिमा-ए-शहादत" का नारा लगाना या "कलिमा-ए-शहादत" बुलन्द आवाज़ से पढ़ना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। इससे परहेज़ करना चाहिये।

जनाज़ा उठाते वक़्त मौत का ध्यान करें

और ख़ामोश चलने में हिक्मत यह है कि ख़ामोश रहकर यह ग़ौर करो और सोचो कि जो वक़्त उस पर आया है, तुम पर भी आने वाला है। यह नहीं कि उस जनाज़े को तो तुम लेजा कर क़ब्र में दफ़न कर दोगे और तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे। इसलिए ख़ामोश रहकर उस मौत का ध्यान और फ़िक्र करो कि एक दिन इसी तरह मैं भी मर जाऊँगा और मेरा भी जनाज़ा इसी तरह उठाया जाएगा और मुझे भी क़ब्र में दफ़न कर दिया जाएगा। इस तरह मौत का ध्यान जमाने के नतीजे में दिल में कुछ नर्मी पैदा होगी और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करने का एहसास बढ़ेगा। इसलिए ख़ामोश रहकर मौत का मुराक़बा (ध्यान और फ़िक्र) करना चाहिये अलबत्ता कोई ज़रूरी बात करनी हो तो कर सकते हैं। कोई नाजायज़ और हराम नहीं है, अलबत्ता अदब के ख़िलाफ़ है।

जनाज़े के आगे न चलें

एक अदब यह है कि जब जनाज़ा लेजा रहे हों तो जनाज़ा आगे होना चाहिये और लोग उसके पीछे-पीछे चलें। दाएँ-बाएँ चलें तो भी ठीक है लेकिन जनाज़े के आगे-आगे चलना ठीक नहीं, अदब के ख़िलाफ़ है। अलबत्ता कन्धा देने की वजह से वक़्ती तौर पर आगे बढ़ जाएँ तो इसमें कोई हर्ज नहीं। लेकिन कन्धा देने के लिए कुछ लोग ऐसा करते हैं कि जनाज़े के आगे दो तरफ़ा लम्बी क़तार लगा लेते हैं जिसके नतीजे में जनाज़े के साथ चलने वाले तमाम लोग जनाज़े से आगे हो जाते हैं और जनाज़ा पीछे हो जाता है, यह तरीक़ा भी कुछ अच्छा नहीं है।

जनाज़े को कन्धा देने का तरीक़ा

इसी तरह जनाज़े को कन्धा देने का तरीक़ा यह है कि सबसे पहले मय्यित के दाएँ हाथ की तरफ़ वाला पाया अपने दाहिने कन्धे पर रखें और कम-से-कम दस क़दम चलें, यह अफ़ज़ल है बशर्तेकि दस क़दम चलने की ताक़त हो। इसलिए दूसरे लोगों को इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिये कि

अभी एक ने जनाज़ा कन्धे पर रखा और दूसरे शख़्स ने फ़ौरन आगे बढ़कर उसको ले लिया। ऐसा नहीं करना चाहिये। अलबत्ता अगर कोई कमज़ोर और बूढ़ा आदमी है तो उस हालत में दूसरे लोगों को चाहिये कि उससे जल्दी ले लें ताकि उसको तकलीफ़ न हो। फिर मय्यित के दाएँ पाँव की तरफ़ का पाया अपने दाहिने कन्धे पर उठाए और दस क़दम चले और फिर मय्यित के बाएँ हाथ की तरफ़ का पाया अपने बाएँ कन्धे पर उठाए और दस क़दम चले। फिर मय्यित के बाएँ पाँव की तरफ़ का पाया अपने बाएँ कन्धे पर उठाए और दस कदम चले। इस तरह हर शख़्स जनाज़े के चारों अतराफ़ में कन्धा दे और चालीस क़दम चले। यह तरीक़ा सुन्नत से ज़्यादा क़रीब है और अफ़ज़ल है, हालाँकि इसके ख़िलाफ़ करना नाजायज़ नहीं, लेकिन सुन्नत का सवाब ज़ाया हो जायेगा।

आजकल जनाज़ा लेजाते वक़्त धक्कम पेल होती है। कन्धा देने के शौक़ में दूसरे मुसलमान भाइयों को धक्का दे दिया जाता है और इस बात का ख़्याल ही नहीं होता कि हम मुसलमान को तकलीफ़ पहुँचा कर हराम काम कर रहे हैं। कन्धा देने का सवाब बेकार करके उल्टा गुनाह कमा रहे हैं। इसलिए ऐसा न करना चाहिये बल्कि इत्मीनान से कन्धा देना चाहिये और दूसरों को इसका मौक़ा देना चाहिये कि दूसरा मुसलमान भाई कन्धा देते हुए दस क़दम पूरे कर ले। उसके बाद आप उससे ले लें।

जनाज़े को तेज़ क़दम से लेकर चलना

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीस में जनाज़ा ले जाने का यह अदब भी बयान फ़रमाया कि जब जनाज़ा लेकर जाओ तो ज़रा तेज़-तेज़ क़दम बढ़ाओ, आहिस्ता मत चलो। और इसकी वजह भी बयान फ़रमा दी कि अगर वह जन्नती है तो उसको जन्नत में पहुँचाने में क्यों देर करते हो? उसको जल्दी उसके अच्छे ठिकाने पर पहुँचा दो। और अगर वह दोज़ख़ी है तो दोज़ख़ वाले को जल्दी उसके ठिकाने तक पहुँचा कर अपने कन्धे से उस बोझ को दूर कर दो। अलबत्ता इतनी तेज़ी भी नहीं करनी चाहिये जिससे जनाज़ा हरकत करने लगे, हिलने लगे, बल्कि

बीच की चाल से चलो और उसको जल्दी पहुँचा दो।

जनाज़ा ज़मीन पर रखने तक खड़े रहना

इसी तरह एक अदब और सुन्नत यह है कि क़ब्रिस्तान में जब तक जनाज़ा कन्धों से उतार कर नीचे न रख दिया जाए उस वक़्त तक लोग न बैठें बल्कि खड़े रहें। अलबत्ता जब जनाज़ा नीचे रख दिया जाए तो उस वक़्त बैठ सकते हैं। हाँ! अगर कोई शख़्स कमज़ोर और बूढ़ा है, वह बैठना चाहता है तो उसमें भी कोई हर्ज नहीं। इसलिए हर अमल सुन्नत की पैरवी की नीयत से और उसका एहतिमाम करके करे तो फिर हर-हर मौके पर किया जाने वाला हर अमल इबादत बन जाता है।

इस्लामी अलफ़ाज़ और परिभाषायें

चौथा हक़ जिसका इस हदीस में ज़िक्र है वह छींकने वाले के "अल्हम्दु लिल्लाह" कहने के जवाब में "यर्हमुकल्लाहु" कहना है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसको "तश्मीत" के लफ़्ज़ से ताबीर फ़रमाया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो अलफ़ाज़ हदीसों में रिवायत किए गये हैं या क़ुरआन करीम में जो अलफ़ाज़ आए हैं वे अलफ़ाज़ भी सीखने चाहियें। एक ज़माना वह था कि मुसलमान चाहे वह बाक़ायदा आलिम न हो और उसने किसी मदरसे से इल्मे दीन हासिल न किया हो लेकिन वह इस्लामी अलफ़ाज़ और इस्लामी इस्तिलाहात (परिभाषाओं) से इतना मानूस होता था कि बहुत-से इस्लामी अलफ़ाज़ और इस्लामी इस्तिलाहात लोगों की ज़बानों पर होते थे। इसका नतीजा यह था कि उलमा की किताबें, तक़रीरें और वअ़ज़ वग़ैरह को समझने में कोई मुश्किल नहीं होती थी। समाज में इन इस्लामी अलफ़ाज़ और इस्लामी इस्तिलाहात का आम रिवाज था, इसका बड़ा फ़ायदा था।

इस्लामी परिभाषाओं से जानकारी न होने का नतीजा

लेकिन अब इस्लामी इस्तिलाहात (परिभाषाओं) से धीरे-धीरे ना-वाक़फ़ियत इस दर्जे बढ़ गयी है और लोग इस दर्जे उनसे ग़ाफ़िल और

ला-इल्म हो गये हैं कि अगर आम लफ़्ज़ भी उनके सामने बोला जाए तो इस तरह हैरत से चेहरा तकने लगते हैं कि मालूम नहीं किस ज़बान का लफ़्ज़ बोल दिया। इस ना-जानकारी का नतीजा यह है कि अभी क़रीब ही ज़माने में लिखी हुई उलमा की किताबें, मलफ़ूज़ात और दीनी तक़रीरें पढ़ने में दुश्वारी होती है और शिकायत करते हैं कि हमारी समझ में नहीं आतीं। अब आज के दौर का आम आदमी हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की लिखी हुई किताबों, आपके बयानात, और मलफ़ूज़ात को नहीं समझता। इसलिए कि आम आदमी उन अलफ़ाज़ से और उन इस्लामी इस्तिलाहात से ना-वाक़िफ़ है, उनसे मानूस नहीं। और न ही उन अलफ़ाज़ के समझने की तरफ़ ध्यान और तवज्जोह है। इसका नतीजा यह है कि वह उन उलमा की लिखी हुई किताबों और दीनी बयानात और मलफ़ूज़ात से फ़ायदा उठाने से मेहरूम रह जाता है।

अंग्रेज़ी अलफ़ाज़ का रिवाज

लिहाज़ा यह वबा और बीमारी हमारे अन्दर फैल गयी है कि "इस्लामी इस्तिलाहात" हमारी बोलचाल से बाहर हो गई हैं और दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी ज़बान दाख़िल हो गयी। आज अगर कोई शख़्स थोड़ा-सा पढ़-लिख ले और मैट्रिक कर ले या इन्टर पास कर ले तो अब वह अपनी बातचीत में आधे अलफ़ाज़ अंग्रेज़ी के बोलेगा और आधे अलफ़ाज़ उर्दू के बोलेगा। हालाँकि न तो उसको उर्दू पूरी तरह आती है और न अंग्रेज़ी पूरी तरह आती है। तो अंग्रेज़ी के अलफ़ाज़ बोलने का इतना ख़्याल है लेकिन इस्लामी इस्तिलाहात से इतनी दूरी है कि उनका मतलब भी उसकी समझ में नहीं आता हालाँकि उनको भी सीखने की फ़िक्र करनी चाहिये।

आज "मआ़रिफ़ुल क़ुरआन" समझ में नहीं आती

मेरे वालिद माजिद मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने क़ुरआन करीम की तफ़सीर "मआ़रिफ़ुल क़ुरआन" लिखी है। उन्होंने लिखी ही इस मक़सद से थी कि एक आम आदमी को आसान अन्दाज़ में

क़ुरआन करीम की तफ़सीर समझ में आ जाए। लेकिन बहुत-से लोग आकर यह कहते हैं कि हमें तो "मआरिफ़ुल क़ुरआन" समझ में नहीं आती। अगर इससे भी कोई आसान तफ़सीर लिख दें तो कहेंगे कि वह भी हमारी समझ में नहीं आती। वजह उसकी यह है कि इस्लामी तालीमात को हासिल करने और उन अलफ़ाज़ से अपने आपको मानूस करने की फ़िक्र ही नहीं है। वरना आज से पचास साल पहले का एक आम आदमी जिसने बाक़ायदा इल्मे दीन हासिल नहीं किया था उसके ख़तों में ऐसे बहुत-से अलफ़ाज़ नज़र आएँगे कि आजकल का ग्रेजुएट और एम० ए० भी उस ख़त को नहीं समझ सकता। बहरहाल इसकी फ़िक्र करनी चाहिये इसलिए जब हदीस सुना करें तो उसके अलफ़ाज़ से भी अपने आप को मानूस किया करें।

छींकने के आदाब

बहरहाल! यह लफ़्ज़ "तश्मीत" है इस लफ़्ज़ को "सीन" से "तस्मीत" पढ़ना भी ठीक है। इसके मायने हैं कि जब किसी शख़्स को छींक आए तो उसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि छींकने वाले को "अल्हम्दु लिल्लाह" कहना चाहिये और जो शख़्स पास बैठा सुन रहा है उसको "यर्‌हमुकल्लाहु" कहना चाहिये। यानी अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम करे। ये "यर्‌हमुकल्लाहु" के अलफ़ाज़ कहना "तश्मीत" है। यह अ़रबी है और इसका मतलब यह है कि किसी को इस बात की दुआ़ देना कि वह सही रास्ते पर रहे।

जमाई सुस्ती की निशानी है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि छींकने वाला "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे और इसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे। वैसे तो हर काम में अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा होना चाहिये लेकिन हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद

फ़रमाया किः

तर्जुमाः यानी "जमाई" शैतानी असरात लिए हुए होती है और छींक अल्लाह तआला की रहमत का एक हिस्सा है।

वजह इसकी यह है कि जमाई सुस्ती के समय आती है और इस बात की निशानी होती है कि उसको सुस्ती आ रही है और सुस्ती शैतानी असरात लिये हुए होती है जो इनसान को भलाई से, नेक कामों से और अमल के सही तरीक़े से रोकती है। अगर इनसान इस सुस्ती पर अमल करता चला जाए तो आख़िरकार वह हर तरह की भलाई से मेहरूम हो जाता है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि इस सुस्ती को दूर करो, काहिली को दूर करो और जिस ख़ैर के काम में सुस्ती आ रही है, उस सुस्ती का मुक़ाबला करके वह ख़ैर का काम कर गुज़रो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का आ़जिज़ी और सुस्ती से पनाह माँगना

इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ़ फ़रमाई है किः

अल्लाहुम्-म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क मिनल् इज्ज़ि वल् कस्लि

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मैं आ़जिज़ी और सुस्ती से आपकी पनाह माँगता हूँ।

इसलिए कि यह सुस्ती बहुत ख़राब चीज़ है। इससे बचना चाहिये और अगर किसी को सुस्ती होती हो तो उसका इसके अ़लावा कोई इलाज नहीं कि उस सुस्ती का मुक़ाबला करे। जैसे सुस्ती की वजह से दिल चाह रहा है कि घर में पड़ा रहूँ और काम पर न जाऊँ तो उसका इलाज यह है कि ज़बरदस्ती करके खड़ा हो जाए और सुस्ती का मुक़ाबला करे। और "जमाई" इस सुस्ती की अ़लामत (निशानी) है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि "जमाई" शैतानी असरात को लिए हुए होती है।

छींक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है

और छींक के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह छींक "रहमान" की तरफ़ से है। यानी अल्लाह तआ़ला की रहमत का एक निशान और सबब है। एक छींक वह होती है जो नज़ले-ज़ुकाम की वजह से आनी शुरू हो जाती है और लगातार आती चली जाती है। यह तो बीमारी है। लेकिन अगर एक आदमी सेहतमन्द है और नज़ले-ज़ुकाम की कोई बीमारी नहीं है, इसके बावजूद उसको छींक आ रही है तो उसके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह रहमान की तरफ़ से रहमत की निशानी है। चुनाँचे डॉक्टरों ने लिखा है कि कभी-कभी इनसान के जिस्म पर किसी बीमारी का हमला होने वाला होता है तो छींक उस हमले को रोक देती है। इस तरह यह छींक अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत की एक निशानी है।

यह तो ज़ाहिरी रहमत है वरना इसके अन्दर जो बातिनी रहमतें हैं वे तो अल्लाह तआ़ला ही जानते हैं। चूँकि छींक अल्लाह तआ़ला की रहमत के उनवान में से एक उनवान है इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी को छींक आए तो "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे।

अल्लाह तआ़ला को मत भूलो

इन हुक्मों के ज़रिये क़दम-क़दम पर यह सिखाया जा रहा है कि अल्लाह तआ़ला को मत भूलो और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ हर मौक़े पर रुजू करो और हर-हर मौक़े पर यह कहा जा रहा है कि इस वक़्त यह पढ़ लो, इस वक़्त यह पढ़ लो। यह सब इसलिए कहा जा रहा है ताकि हमारी ज़िन्दगी का हर लम्हा अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से भरा हुआ हो जाए और हर बदलाव के वक़्त अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करने की आदत पड़ जाए। सारी इबादतों, सारी परहेज़गारी, सारे मुजाहदों, सारी रियाज़तों और सारे तसव्वुफ़ और सुलूक का हासिल यह है कि अल्लाह

तआला की तरफ़ रुजू करने की आदत पड़ जाए और जिससे अल्लाह तआला का ताल्लुक़ हासिल हो जाए। इस अल्लाह की तरफ रुजू करने की आदत डालने के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह तरह-तरह के तरीक़े तलक़ीन फ़रमाए (यानी सिखलाए) हैं जैसे यह कि छींक आए तो फ़ौरन कहो अल्हम्दु लिल्लाह।

यह सुन्नत छूटती जा रही है

एक ज़माना वह था जब यह बात मुसलमानों की तहज़ीब में दाख़िल थी और इसको सिखाने और बताने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी और उस वक़्त इस बात का तसव्वुर भी नहीं था कि अगर किसी मुसलमान को छींक आएगी तो वह अल्हम्दु लिल्लाह नहीं कहेगा। बचपन से तरबियत ऐसी की जाती थी कि उसके ख़िलाफ़ होता ही नहीं था। लेकिन अब हर चीज़ मिटती जा रही है तो इसके साथ-साथ यह सुन्नत भी मुर्दा होती जा रही है। इस सुन्नत को ज़िन्दा करने की ज़रूरत है इसलिए जब छींक आए तो फ़ौरन कहो "अल्हम्दु लिल्लाह"।

छींकने वाले का जवाब देना वाजिब है

फिर दूसरा मर्हला यह है कि जो शख़्स छींकने वाले के पास बैठा है और उसने यह सुना कि छींकने वाले ने अल्हम्दु लिल्लाह कहा तो उस सुनने वाले पर शरीअत की तरफ़ से वाजिब है कि जवाब में यर्‌हमुकल्लाहु कहे। इसी का नाम "तश्मीत" है और यह जवाब देना सिर्फ़ सुन्नत या मुस्तहब नहीं बल्कि वाजिब है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स "यर्‌हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब नहीं देगा तो उसको वाजिब के छोड़ने का गुनाह होगा। अलबत्ता यह उस समय वाजिब है कि छींकने वाले ने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा हो। और अगर छींकने वाले ने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा तो फिर सुनने वाले पर "यर्‌हमुकल्लाहु" कहना वाजिब नहीं।

अलबत्ता वाजिब अलल्-किफ़ाया है

अलबत्ता अल्लाह तआला ने इसमें इतनी आसानी फ़रमा दी है कि

इसको 'वाजिब अ़लल्-किफ़ाया' क़रार दिया है यानी 'वाजिब अ़लल्-ऐन' नहीं है कि हर सुनने वाले पर जवाब देना ज़रूरी हो, बल्कि अगर सुनने वाले दस लोग हैं और उनमें से एक ने "यर्हमुकल्लाहु" कह दिया तो सब की तरफ़ से वाजिब अदा हो गया। लेकिन सारी मजलिस में से किसी एक आदमी ने भी "यर्हमुकल्लाहु" नहीं कहा तो तमाम लोग वाजिब छोड़ देने की वजह से गुनाहगार होंगे।

'फ़र्ज़े-ऐन' और 'फ़र्ज़े-किफ़ाया' का मतलब

ये सब इस्तिलाहें (परिभाषायें) भी जानने की हैं और सीखनी चहियें। देखिए एक है "फ़र्ज़े-ऐन" इसका मतलब यह है कि वह काम हर एक आदमी पर फ़र्ज़ है जैसे नमाज़ हर आदमी पर अलग-अलग फ़र्ज़ है। एक की नमाज़ से दूसरे की नमाज़ अदा नहीं होती। इसको फ़र्ज़े-ऐन कहा जाता है। दूसरा है "फ़र्ज़े-किफ़ाया" इसका मतलब यह है कि अगर बहुत-से लोग हैं और एक दो लोगों ने भी वह काम कर लिया तो सब की तरफ़ से वह फ़रीज़ा अदा हो जाएगा जैसे नमाज़े जनाज़ा "फ़र्ज़े किफ़ाया" है। अगर कुछ लोग भी नमाज़े जनाज़ा अदा कर लें तो सबकी तरफ़ से वह फ़र्ज़ अदा हो जाएगा। लेकिन अगर कोई भी नहीं पढ़ेगा तो सब गुनाहगार होंगे।

सुन्नत अ़लल्-किफ़ाया

जैसे रमज़ान के आख़िरी अ़श्रे (दशक) में एतिकाफ़ करना "सुन्नते मुअक्कदा अ़लल्-किफ़ाया" है। यानी अगर मौहल्ले में से कोई एक शख़्स भी मस्जिद में जाकर एतिकाफ़ में बैठ गया तो तमाम मौहल्ले वालों की तरफ़ से वह सुन्नत अदा हो जाएगी। लेकिन अगर एक शख़्स भी एतिकाफ़ में नहीं बैठा तो सारे मौहल्ले वाले सुन्नते मुअक्कदा को छोड़ देने के गुनाहगार होंगे। इसी तरह छींकने वाले का जवाब देना "वाजिब अ़लल्-किफ़ाया" है। यानी अगर मजलिस में से एक शख़्स ने भी जवाब दे दिया तो सबकी तरफ़ से वाजिब अदा हो गया लेकिन अगर किसी ने भी जवाब न दिया तो सब के सब वाजिब के छोड़ देने के गुनाहगार होंगे।

यह मुसलमान का एक हक़ है

हम लोग ज़रा जायज़ा लें कि अपनी रोज़ाना की ज़िन्दगी में इस वाजिब से कितनी लापरवाही बरतते हैं। अव्वल तो छींकने वाला "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहता, और अगर वह अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो सुनने वाले पर "यर्‌हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब देने का इतना एहतिमाम नहीं करते जितना एहतिमाम करना चाहिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस हदीस के ज़रिये यह बता रहे हैं कि "तश्मीत" करना (यानी छींक का जवाब देना) एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर हक़ है और उसके ज़िम्मे वाजिब है।

कितनी बार जवाब देना चाहिये?

अलबत्ता जैसा कि अभी बतलाया कि इसमें अल्लाह तआ़ला ने आसानी यह फ़रमा दी है कि एक तो इस हक़ को "वाजिब अ़लल्-किफ़ाया" क़रार दिया, दूसरे यह कि कभी-कभी यह होता है कि एक आदमी को लगातार छींकें आ रही हैं और वह लगातार अल्हम्दु लिल्लाह कह रहा है और सुनने वाला लगातार "यर्‌हमुकल्लाहु" कहता जा रहा है। इसका मतलब यह है कि अब वह दूसरे सब काम छोड़कर बस यही करता रहे। तो इसके बारे में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह अदब बता दिया कि अगर एक बार छींक आए तो जवाब देना वाजिब है और दूसरी बार छींक आए तो जवाब देना सुन्नत है और तीसरी बार जवाब देना भी सुन्नत है और अज्र व सवाब का सबब है। उसके बाद अगर छींक आए तो जवाब न तो वाजिब है न सुन्नत है। अलबत्ता अगर कोई शख़्स जवाब देना चाहे तो जवाब दे दे। इन्शा-अल्लाह उस पर भी सवाब मिलेगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक मजलिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ रखते थे। एक सहाबी को छींक आई। उन्होंने अल्हम्दु

लिल्लाह कहा। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में "यरहमुकल्लाहु" फरमाया। दूसरी बार फिर छींक आई आपने फिर जवाब दिया "यरहमुकल्लाहु"। तीसरी बार फिर छींक आई आपने तीसरी बार जवाब दिया "यरहमुकल्लाहु"। जब चौथी बार उनको छींक आई तो आपने इरशाद फरमाया "रजुलुम् मज़कूम" यानी इन साहिब को जुकाम है, और इस बार आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब नहीं दिया। (तिर्मिज़ी)

इस हदीस के ज़रिये आपने यह मसला बता दिया कि तीसरी बार के बाद जवाब देने की ज़रूरत नहीं। देखिये! शरीअ़त ने हमारी और आपकी सहूलियत के लिए किन-किन बारीकियों की रियायत फ़रमाई है ताकि यह न हो कि आदमी बस उसी काम में लगा रहे और दूसरे ज़रूरी काम छोड़ बैठे।

यह जवाब देना कब वाजिब है?

दूसरा मसला यह है कि "यरहमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब देना उस वक़्त वाजिब है जब छींकने वाला "अल्हम्दु लिल्लाह" कहे। अगर छींकने वाले ने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा तो उसका जवाब देना वाजिब नहीं। लेकिन जवाब देना अच्छा है ताकि छींकने वाले को तंबीह हो जाए कि मुझे "अल्हम्दु लिल्लाह" कहना चाहिये था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जवाब न देना

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक सहाबी को छींक आई उन्होंने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहा। आपने जवाब में "यरहमुकल्लाहु" फ़रमाया। थोड़ी देर के बाद एक और सहाबी को छींक आई लेकिन उन्होंने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा, आप सल्ल० ने "यरहमुकल्लाह" भी नहीं कहा। उन सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! इन साहिब को थोड़ी देर पहले छींक आई थी तो आपने इनको "यरहमुकल्लाहु" के ज़रिये दुआ़ दे दी थी और अब मुझे

छींक आई तो आपने मुझे दुआ नहीं दी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब दिया कि इन सहाबी ने "अल्हम्दु लिल्लाह" कहकर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया था इसलिए मैंने इनको जवाब में "यर्‌हमुकल्लाहु" कहा, तुमने "अल्हम्दु लिल्लाह" नहीं कहा इसलिए मैंने जवाब में "यर्‌हमुकल्लाहु" नहीं कहा।

इस हदीस से मालूम हुआ कि "यर्‌हमुकल्लाहु" के ज़रिये जवाब देना उस समय ज़रूरी है जब छींकने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे। (तिर्मिज़ी)

छींकने वाला भी दुआ़ दे

फिर तीसरी बात यह है कि जब अल्हम्दु लिल्लाह के जवाब में सुनने वाले ने यर्‌हमुकल्लाहु कहा तो अब छींकने वाले को चाहिये कि वह "यहदीकुमुल्लाहु" कहे। और एक रिवायत में आता है कि वह "यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम" कहे। इसलिए कि जब सुनने वाले ने यह दुआ़ दी कि अल्लाह तआ़ला तुम पर रहम करे तो अब जवाब में छींकने वाला उसको यह दुआ़ दे कि अल्लाह तआ़ला तुमको हिदायत अ़ता फ़रमाए और तुम्हारे सब काम ठीक कर दे।

इन अहकाम के ज़रिये छोटी-छोटी बातों पर एक-दूसरे को दुआ़ देने की आ़दत डाली जा रही है। क्योंकि जब एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए दुआ़ करता है तो उस दुआ़ के क़बूल होने की बहुत उम्मीद होती है इसलिए फ़रमाया गया कि दूसरों के लिए दुआ़ किया करो। (तिर्मिज़ी)

एक छींक पर तीन बार ज़िक्र

देखिए! छींक एक बार आई लेकिन उसमें तीन बार अल्लाह का ज़िक्र हो गया। तीन बार अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू हो गया और तीन दुआएँ हो गईं और दो मुसलमानों के बीच आपस में दुआ़ओं का तबादला हुआ और इस तबादले के नतीजे में एक-दूसरे से हमदर्दी और ख़ैरख़्वाही करने का सवाब भी मिला और अल्लाह तआ़ला के साथ ताल्लुक़ भी क़ायम हो गया। यह वह नुस्ख़ा-ए-कीमिया है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि

व सल्लम बयान करके तशरीफ़ ले गये।

बहरहाल! "तश्मीत" करना (यानी अगर छींकने वाला अल्हम्दु लिल्लाह कहे तो सुनने वाले को यर्हमुकल्लाहु कहना) एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर हक़ है और वाजिब है।

कमज़ोर और मज़लूम की मदद करना

एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर पाँचवाँ हक़ यह बयान फ़रमाया "नस्रुज़्ज़ईफ़" यानी कमज़ोर की मदद करना। इसी के साथ छटा हक़ यह बयान फ़रमाया "औनुल् मज़लूम" यानी मज़लूम की मदद करना। यानी जो शख़्स किसी ज़ुल्म का शिकार है उससे ज़ुल्म दूर करने के लिए उसकी मदद करना भी एक मोमिन का दूसरे मोमिन पर हक़ है। और यह कि इनसान के अन्दर जितनी हिम्मत हो उस हिम्मत की हद तक दूसरे मुसलमान की मदद करना ज़रूरी है। अगर एक मोमिन ताक़त के बावजूद दूसरे मोमिन को ज़ुल्म से न बचाए या उसकी मदद न करे तो वह गुनाहगार होगा।

मज़लूम की मदद वाजिब है

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। न वह ख़ुद उस पर ज़ुल्म करता है और न उसको बेसहारा और बे-मददगार छोड़ता है। (अबू दाऊद, किताबुल अदब)

यानी अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान पर ज़ुल्म कर रहा है और तुम उसको रोक सकते हो तो ऐसे मौक़े पर उसको बेसहारा छोड़ना जायज़ नहीं, बल्कि उसकी मदद करना ज़रूरी है।

वरना अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आ जाएगा

बल्कि एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बड़ी सख़्त बात फ़रमाई कि अगर कुछ लोग यह देख रहे हों कि कोई शख़्स किसी मुसलमान पर ज़ुल्म कर रहा है, चाहे वह ज़ुल्म जानी हो या माली हो,

और उनको उस ज़ालिम का हाथ पकड़ने की और उस शख़्स को ज़ुल्म से बचाने की ताक़त हो, फिर भी वे उस ज़ालिम का हाथ न पकड़ें और उसको ज़ुल्म से न बचाएँ तो क़रीब है कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों पर अपना अज़ाब नाज़िल फ़रमा दे।

अज़ाब की मुख़्तलिफ़ शक्लें

फिर यह ज़रूरी नहीं कि वह अज़ाब उसी तरह का हो जैसे पिछली उम्मतों पर अज़ाब आए। जैसे आसमान से अंगारे बरसें या तूफ़ान आ जाए या हवा के झक्कड़ चल पड़ें, बल्कि अल्लाह तआला के अज़ाब की शक्लें मुख़्तलिफ़ होती हैं। अल्लाह तआला हमें अपने अज़ाब व ग़ुस्से से महफ़ूज़ रखे। आमीन।

हम दिन रात जो देख रहे हैं कि डाके पड़ रहे हैं, चोरियाँ हो रही हैं, बद-अमनी और बेचैनी का दौर-दौरा है। किसी शख़्स की जान किसी का माल किसी की इज़्ज़त और आबरू महफ़ूज़ नहीं। हर शख़्स बेचैनी और बेइत्मीनानी का शिकार है। ये सब अल्लाह के अज़ाब की निशानियाँ हैं। ये सब अज़ाब की मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) शक्लें हैं। अब तो यह दौर आ गया है कि अपनी आँखों से एक इनसान पर ज़ुल्म होता देख रहे हैं और उसको ज़ुल्म से बचाने की ताक़त भी है, लेकिन इसके बावजूद उसको ज़ुल्म से बचाने की तवज्जोह नहीं है।

उपकरण मुरव्वत के एहसास को कुचल देते हैं

ख़ास तौर पर जब से हमारे यहाँ पश्चिमी सभ्यता का सैलाब उमड़ आया है और लोगों के पास दौलत आ गई है तो इस दौलत ने लोगों को इस तरह अन्धा कर दिया है कि मुरव्वत, इनसानियत, शराफ़त सब कुचल कर रह गया है। अल्लामा इक़बाल मरहूम ने कहा था कि:

है दिल के लिए मौत मशीनों की हुकूमत
एहसासे मुरव्वत को कुचल देते हैं 'आलात'

लिहाज़ा इन जदीद आलात (नये उपकरणों) ने मुरव्वत के एहसास को

कुचल दिया है।

एक इब्रतनाक वाकिआ

एक बार मैंने ख़ुद अपनी आँखों से देखा कि एक बहुत शानदार कार सड़क पर गुज़री जिसमें कोई साहिब बहादुर बैठे थे और उस कार ने एक राहगीर को टक्कर मारी। वह सड़क पर गिरा और उसके जिस्म से ख़ून बहने लगा। मगर उन साहिब बहादुर को यह तौफ़ीक नहीं हुई कि कार रोक कर देख लें कि कितनी चोट आई। सिर्फ़ इतना हुआ कि उसने खिड़की से झाँक कर देखा कि एक शख़्स ज़मीन पर गिरा हुआ है, बस यह देखकर वह रवाना हो गया।

वजह यह है कि इस दौलत ने और पश्चिमी सभ्यता ने हमें इस दर्जे पर पहुँचा दिया कि किसी आदमी की जान मक्खी और मच्छर से ज़्यादा बे-वक्अत होकर रह गयी है। आज का इनसान, इनसान नहीं रहा।

मुसलमान की मदद करने की फ़ज़ीलत

हकीकत यह है कि इनसान उस समय तक इनसान नहीं बन सकता जब तक वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल न करे। आपकी सुन्नत यह है कि आदमी कमज़ोर की मदद करे और मज़लूम का साथ दे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी बड़ी फ़ज़ीलत भी इरशाद फ़रमाई है कि:

तर्जुमाः यानी जब तक मुसलमान किसी मामले में अपने भाई की मदद करता रहता है तो अल्लाह तआला भी उसकी मदद करता रहता है और उसके काम बनाता रहता है। (मुस्नद अहमद, जिल्द 2 पेज 274)

ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बड़ा अच्छा इरशाद फ़रमाया। इस हदीस के बारे में मुहद्दिसीन के यहाँ यह तरीक़ा चला आ रहा है कि जब भी कोई तालिब इल्म (दीन का इल्म हासिल

करने वाला) किसी मुहद्दिस (हदीस बयान करने वाले) के पास हदीस पढ़ने जाता है तो उस्ताद उस तालिब इल्म को सबसे पहले यह हदीस सुनाते हैं। वह हदीस यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः रहम करने वालों पर "रहमान" रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा। (अबू दाऊद)

और जो आदमी ज़मीन वालों पर रहम करना नहीं जानता उसको आसमान वाले से भी रहमत की उम्मीद मुश्किल है।

बहरहाल! कमज़ोर की मदद करना और मज़लूम का साथ देना इस्लामी तालीमात का शिआर और तरीक़ा है।

क़सम खाने वाले की मदद करना

एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर जो हुक़ूक़ हैं उनमें से सातवाँ हक़ जो हदीस में बयान फ़रमाया वह है "इब्रारुल् मुक़्सिमि"। इसका मतलब यह है कि अगर किसी मुसलमान ने कोई क़सम खा ली है और अब वह उस क़सम को पूरा करने की ताक़त नहीं रखता है तो ऐसे मुसलमान की मदद करना ताकि वह अपनी क़सम पूरी कर ले। यह भी मुसलमान के हुक़ूक़ में दाख़िल है।

अल्लाह तआला अपनी रहमत से इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

ख़ुश-मिज़ाजी से मिलना सुन्नत है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

عن عطاء بن يسار رحمه الله تعالىٰ قال: لقيت عبد الله بن عمرو بن العاص رضى الله عنه، فقلت اخبرنى عن صفة رسول الله صلى الله عليه وسلم فى التوراة. قال اجل والله انه لموصوف فى التوراة ببعض صفته فى القرآن يايها النبى انا ارسلنك شاهدًا ومبشرًا و نذيرًا و حرزًا للأميين أنت عبدى ورسولى سميتك المتوكل ليس بفظ ولا غليظ ولا سخاب فى الأسواق ولا يدفع السيئة بالسيئة ولكن يعفو و يصفح ولن يقبض الله تعالىٰ حتى يقيم به الملة العوجاء بان يقولوا لا اله الا الله فيفتح بها اعينًا عميا وآذانًا صمًا و قلوبًا غلفًا. (بخارى، كتاب التفسير)

खिले हुए चेहरे से पेश आना ख़ुदा की मख़्लूक़ का हक़ है

यह एक लम्बी हदीस है और इस पर इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने "बाबुल इम्बिसात इलन्नास" का उनवान क़ायम फ़रमाया है। यानी लोगों के साथ ख़ुश-मिज़ाजी और खिले हुए चेहरे से पेश आना और लोगों में घुले-मिले रहना।

यह किताब इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने "अल्-अदबुल् मुफ़्रद" के नाम से लिखी है और इसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वे हदीसें जमा की हैं जो ज़िन्दगी के विभिन्न शोबों (क्षेत्रों) में इस्लामी आदाब के बारे में हैं। और उन आदाब की आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी करनी और कथनी से तालीम फ़रमाई है। उनमें से एक अदब और एक सुन्नत यह है कि मख़्लूक़ के साथ घुले-मिले रहो और उनके साथ खिले चेहरे से पेश आओ।

और यह अल्लाह की मख़्लूक़ का हक़ है कि जब अल्लाह के किसी बन्दे से मुलाक़ात हो तो उससे आदमी ख़न्दा-पेशानी (हंसते चेहरे) से मिले। अपने आपको तकल्लुफ़ वाला और सख़्त-मिज़ाज न बनाए कि लोग क़रीब आते हुए डरें, चाहे अल्लाह तआ़ला ने दीन का या दुनिया का बड़े से बड़ा मुक़ाम या ओहदा अ़ता फ़रमाया हो। वह उस मुक़ाम की वजह से अपने आपको लोगों से कटकर सख़्त-मिज़ाज बनकर न बैठे, बल्कि घुला-मिला रहे। यह अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम की सुन्नत है।

नबी करीम की इस सुन्नत पर काफ़िरों का एतिराज़

बल्कि यह वह सुन्नत है जिस पर कुछ काफ़िरों ने एतिराज़ किया था। क़ुरआन पाक में आता है कि:

तर्जुमाः और कुफ़्फ़ार कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना भी खाता है और बाज़ारों में भी फिरता है। (सूरः फ़ुरक़ान आयत 6)

काफ़िर लोग समझते थे कि बाज़ारों में फिरना पैग़म्बरी के ओहदे और मुक़ाम के ख़िलाफ़ है। यह इस वजह से समझते थे कि उन्होंने अपने बादशाहों और सरदारों को देखा था कि जब वे बादशाहत के पद पर पदासीन हो जाते थे तो जनता से कटकर बैठ जाते थे। आम आदमी की तरह बाज़ारों में नहीं आते थे बल्कि ख़ास शाहाना ठाट-बाट से आते थे। तो वे यह समझते थे कि पैग़म्बरी तो इतना बड़ा और ऊँचा मुक़ाम है कि बादशाहत तो उसके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

लेकिन क़ुरआन करीम ने उनके इस बातिल और ग़लत ख़्याल की

तरदीद की इसलिए कि पैग़म्बर तो आते ही तुम्हारे सुधार के लिए हैं। इसलिए दुनिया का भी हर काम आम इनसानों में घुल-मिलकर के दिखाते हैं और उसके आदाब और उसकी शर्तें बताते हैं, न यह कि अपने आप को अवाम से काटकर एक तरफ़ बैठ जाते हैं। इसलिए पैग़म्बरों का बाज़ारों में चलना-फिरना और मिलनसार होना कोई ऐब की बात नहीं।

हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली थानवी फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मुक़्तदा (मुक़्तदा का मतलब होता है जिसको देखकर लोग पैरवी करते हों) बनने के बाद लोगों से कटकर बैठ गया और अपनी शान बना ली तो उसको इस रास्ते (यानी दीनी काम) की हवा भी नहीं लगी।

फ़रमाया कि एक आम आदमी की तरह रहो, जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रहा करते थे।

मिलनसारी का निराला अन्दाज़

शमाइले तिर्मिज़ी में रिवायत है कि:

तर्जुमाः हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मदीना मुनव्वरा के बाज़ार मुनाक़ा (मुनाक़ा बाज़ार मदीना मुनव्वरा का एक बाज़ार था जो अब हरम शरीफ़ विस्तार वाले हिस्से में शामिल हो गया है। मैंने भी किसी ज़माने में उसके दर्शन किए थे) में तशरीफ़ ले गये। वहाँ एक देहाती थे हज़रत ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अन्हु। देहात से सामान लाकर शहर में बेचा करते थे। स्याह रंग था और ग़रीब आदमी थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे बहुत मुहब्बत फ़रमाया करते थे।

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुपके से उनके पीछे गये और उन्हें अपनी बाँहों में भर लिया और उनको पीछे से कमर से पकड़ लिया, फिर आवाज़ लगाई कि "कौन है जो मुझसे यह ग़ुलाम ख़रीदेगा?" आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मज़ाक़ किया। जब हज़रत ज़ाहिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आवाज़ पहचान ली तो उनकी ख़ुशी की इन्तिहा न रही। वह फ़रमाते हैं कि मैंने अपनी पीठ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक जिस्म के साथ और मिलाने की कोशिश की और मैंने

कहा या रसूलल्लाह! अगर आप इस ग़ुलाम को बेचेंगे तो बहुत कम पैसे मिलेंगे इसलिए कि काले रंग का है और मामूली दर्जे का आदमी है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि नहीं ऐ ज़ाहिद! अल्लाह के यहाँ तुम्हारी क़ीमत बहुत ज़्यादा है।

इस वाक़िए से अन्दाज़ा लगाएँ कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाज़ार में तशरीफ़ लेजा रहे हैं और किस तरह एक मामूली दर्जे के आदमी के साथ मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं। देखने वाला यह अन्दाज़ा लगा सकता है कि यह कितने ऊँचे दर्जे के पैग़म्बर हैं कि जिनके सामने जिब्राईल अमीन के भी पर जलते हैं। आप पर लाखों सलाम हों।

पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती हैं या आ़म राहगीर

मेरे शैख़ हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब अल्लाह तआ़ला उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए, आमीन। फ़रमाते हैं कि एक बार मैं अपने क्लीनिक में बैठा हुआ था (हज़रत का क्लीनिक उस वक़्त ब्रन्स रोड पर होता था और हमारा घर भी उस ज़माने में उसके क़रीब ही हुआ करता था) देखा कि क्लीनिक के सामने फ़ुटपाथ पर मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि हाथ में पतीली लिए हुए एक आ़म आदमी की तरह जा रहे हैं। फ़रमाते हैं कि मैं यह देखकर हैरान रह गया कि पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती, पूरी दुनिया में जिसके इल्म और परहेज़गारी के गुण गाये जाते हैं, वह इस तरह एक आ़म आदमी की तरह हाथ में पतीली लेकर फिर रहा है। मैंने अपने साथियों से कहा कि क्या इनको देखकर कोई पहचान सकता है कि यह मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान (यानी पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती) हैं?

फिर हज़रत डॉक्टर साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को अल्लाह तआ़ला अपने साथ ख़ास ताल्लुक़ अ़ता फ़रमा देते हैं वह अपने आपको आ़म मुसलमानों के साथ इस तरह घुला-मिलाकर रखता है कि किसी को मालूम भी नहीं होता कि यह किस मुक़ाम के आदमी हैं।

और यही सुन्नत है जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की। न यह कि आदमी अपनी शान बनाकर रखे और लोगों के साथ मामलात करने में तकल्लुफ से काम ले।

मस्जिदे नबवी से मस्जिदे कुबा की तरफ़ आमियाना चाल

एक बार जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी से पैदल चलकर ऐसे ही दोस्ताना मुलाकात के लिए हज़रत अतबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तशरीफ़ ले गये जो मस्जिदे कुबा के करीब रहते थे। तकरीबन तीन मील का फ़ासला है। उनके घर के दरवाज़े पर जाकर तीन दफ़ा आवाज़ दी, शायद वह सहाबी किसी ऐसी हालत में थे कि जवाब नहीं दे सकते थे, तो कुरआन पाक के हुक्म के अनुसारः

तर्जुमाः जब तुम से कहा जाए कि वापस चले जाओ तो वापस हो जाओ। (सूरः नूर आयत 28)

चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस मस्जिदे नबवी तशरीफ़ ले आए। कोई नागवारी का इज़हार नहीं फ़रमाया। दोस्त से मिलने गये थे, अपनी तरफ़ से दोस्ती का हक़ अदा किया, नहीं हुई मुलाकात, वापस तशरीफ़ ले आए।

बाद में हज़रत अतबान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ तो वह दौड़ते हुए आए और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिले और फ़िदा होने लगे कि मेरी क्या हैसियत कि आप मेरे दर पर तशरीफ़ लाए।

शायद यह ज़्यादा मुश्किल सुन्नत हो

वैसे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी सुन्नतें ऐसी हैं कि हर सुन्नत पर इनसान कुरबान हो जाए लेकिन एक सुन्नत तिर्मिज़ी शरीफ़ की एक रिवायत में आई है। मैं समझता हूँ कि शायद इस पर अमल करना ज़्यादा मुश्किल काम है। लेकिन सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल था।

रिवायत में आता है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कोई बात करता तो आप उस समय तक उससे चेहरा नहीं फेरते थे जब तक कि वह ख़ुद ही न चेहरा फेर ले। अपनी तरफ़ से बात काटते नहीं थे।

कहने को आसान बात है। इसका अन्दाज़ा उस समय होता है जब सैकड़ों आदमी रुजू करते हों। कोई मसला पूछ रहा है। कोई अपनी मुश्किल बयान कर रहा है, तो आदमी का दिल चाहता है कि मैं जल्दी-जल्दी उससे निमट जाऊँ।

और कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जब वे बोलने पर आ जाएँ तो रुकने का नाम ही नहीं लेते, उनके साथ यह मामला करना कि जब तक वे न रुक जाएँ उस समय तक उनसे न हटें, यह बहुत ज़्यादा मुश्किल काम है।

लेकिन जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो जिहाद में मशग़ूल हैं, तबलीग़ में व्यस्त हैं, तालीम में भी व्यस्त हैं। जो पूरी दुनिया की इस्लाह के लिए भेजे गये हैं। एक बुढ़िया भी रास्ते में पकड़ कर खड़ी हो जाती है तो उस समय तक उससे नहीं फिरते जब तक कि पूरी तरह उसको सन्तुष्ट नहीं कर देते।

मख़्लूक़ से मुहब्बत करना हक़ीक़त में अल्लाह से मुहब्बत करना है

यह सिफ़त इनसान के अन्दर उस समय पैदा हो सकती है कि जब मख़्लूक़ के साथ इस वजह से मुहब्बत हो कि यह मेरे अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ है।

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि अगर तुम्हें अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत है तो तुम अल्लाह तआ़ला से क्या मुहब्बत करोगे। अल्लाह तआ़ला की ज़ात को न देखा, न समझा, न उसको तुम तसव्वुर में ला सकते हो।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि अगर मुझसे मुहब्बत है तो मेरी

मख़्लूक़ से मुहब्बत करो और मेरी मख़्लूक़ के साथ अच्छा सुलूक करो, तो अल्लाह तआला की मुहब्बत का एक अक्स तुम्हारी ज़िन्दगी में आएगा। यह कोई मामूली बात नहीं है। इसी लिए इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि यह बाब क़ायम कर रहे हैं "बाबुल् इम्बिसाति इलन्नास" कि लोगों के साथ हंसते-खिलते चेहरे के साथ पेश आना, और उनके साथ घुला-मिला रहना। और इस तरह रहना जैसे एक आम आदमी होता है। यानी अपना कोई इम्तियाज़ और शान पैदा न करना। यह मक़सूद है इस बाब का। इसमें हदीस नक़्ल की है हज़रत अता बिन यसार ताबिई रहमतुल्लाहि अलैहि की। वह कहते हैं कि मेरी मुलाक़ात हुई हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस की नुमायाँ ख़ुसूसियात

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मशहूर सहाबी हैं और उन सहाबा किराम में से हैं जो अपनी इबादत की कसरत (अधिकता) में मशहूर थे। बहुत आबिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, और उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हदीसें भी काफ़ी तायदाद में नक़्ल की हैं।

एक ख़ुसूसियत उनकी यह है कि उन्होंने तौरात, ज़बूर, इन्जील का इल्म भी किसी ज़रिये से हासिल किया हुआ था। हालाँकि ये किताबें ऐसी हैं कि यहूदियों और ईसाइयों ने उनमें बहुत कुछ तहरीफ़ें (कमी-बेशी और तब्दीलियाँ) कर दी हैं और अपनी असली हालत में बरक़रार नहीं हैं, लेकिन इसके बावजूद उनको इस नज़रिये (दृष्टिकोण) से पढ़ना ताकि उनकी सच्चाई मालूम हो और यहूदियों और ईसाइयों को तब्लीग़ करने में मदद मिले, तो पढ़ने की इजाज़त है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ तौरात यहूदियों से पढ़ी हुई थी।

तौरात में अब भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है

तौरात अगरचे मुकम्मल तौर पर पहले की तरह नहीं है। यहूदियों ने उसमें बहुत ज़्यादा बदलाव कर दिया है। बहुत-से हिस्से ख़त्म कर दिये हैं नये इज़ाफ़े कर दिये, अलफ़ाज़ को बदल दिया, लेकिन इसके बावजूद कहीं-कहीं फिर भी किताबुल्लाह का नूर झलकता है।

इसी वजह से उसमें अब भी जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तशरीफ़ लाने की ख़ुशख़बरी और आपकी सिफ़ात मौजूद हैं। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में तो और ज़्यादा स्पष्ट थीं। इसी वजह से क़ुरआन करीम कहता है कि:

"ये यहूदी आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) को इस तरह जानते हैं जिस तरह अपने बेटों को जानते हैं"। (सूरः ब-क़रह् आयत 146)

इसलिए कि तौरात में जो निशानियाँ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बयान हुई थीं कि नबी आख़िरुज़्ज़माँ ऐसी-ऐसी सिफ़ात रखने वाले होंगे। ऐसा उनका हुलिया होगा। इस ख़ानदान के होंगे। इस शहर में होंगे। यह सारी तफ़सील ज़िक्र की गयी थी। जो यहूदी उन किताबों के आ़लिम थे वे अपनी आँखों से वे निशानियाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम में देखते थे, कि पाई जा रही हैं मगर अपनी ज़िद और हठधर्मी और दुश्मनी की वजह से मानते नहीं थे। तो हज़रत अ़ता बिन यसार रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि जब मेरी मुलाक़ात हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई तो मैंने उनसे कहा कि आपने तो तौरात पढ़ी है, तौरात में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें बयान की गयी हैं, वे हमें बतलाएँ।

बाईबल से क़ुरआन तक

ये किताबें उन लोगों ने इतनी बिगाड़ दी हैं इसके बावजूद उसमें कुछ टुकड़े ऐसे हैं कि ऐसा महसूस होता है कि जैसे क़ुरआन करीम का तर्जुमा है। उनकी मशहूर किताब बाईबल जिसको "किताबे मुक़द्दस" भी कहते हैं

उसको यहूदी भी मानते हैं और ईसाई भी मानते हैं। उसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की खुशख़बरियाँ आज भी मौजूद हैं। मुझे तौरात का एक जुमला याद आ गया जिसमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की खुशख़बरी देते हुए फ़रमाया गया किः

"जो फ़ारान से तुलू होगा। सलाह में बसने वाले गीत गाएँगे, कैदार की बस्तियाँ तारीफ़ करेंगी"

"फ़ारान" नाम है उस पहाड़ का जिस पर ग़ारे-हिरा स्थित है। "सलाह" नाम है उस पहाड़ का जिसका एक हिस्सा "सनियतुल्-विदा" है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो उसपर बच्चियों ने खड़े होकर ये तराने पढ़े थेः

"त-लअ़ल् बद्रु अ़लैना मिन् सनियातिल् विदाअ़ि"

यानी हम पर चाँद तुलू हुआ (निकला) सनियातिल् विदा की तरफ़ से। मुराद नबी पाक का उधर से नज़र आना है।

और कैदार नाम है हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम के बेटे का। और उनकी बस्तियाँ अ़रब में आबाद हैं। उनकी तरफ़ इशारा है कि जब उनकी औलाद में आख़िरी नबी पैदा होंगे तो बस्तियाँ तारीफ़ करेंगी।

आपकी सिफ़तें तौरात में भी मौजूद हैं

बहरहाल! हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हाँ! मैं बताता हूँ।

अल्लाह की क़सम! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कुछ सिफ़तें तौरात में ऐसी बयान की गयी हैं जो कुरआन पाक में भी ज़िक्र हुई हैं।

फिर उन्होंने कुरआन पाक की यह आयत तिलावत फ़रमाईः

तर्जुमाः ऐ नबी! हमने आपको गवाह बनाकर और खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा। (सूरः अहज़ाब आयत 45)

गवाह बनाने का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम गवाही देंगे कि इस उम्मत को अल्लाह तआ़ला की तौहीद का पैग़ाम दिया गया था तो किसने

उस पर अमल किया और किसने नहीं। इस बात की गवाही देंगे। और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लोगों को जन्नत की ख़ुशख़बरी देने वाले होंगे और जहन्नम से डराने वाले होंगे।

यह आयत कुरआन करीम की तिलावत फ़रमाई फिर आगे तौरात की इबारत पढ़कर सुनायी किः

"व हिरज़न् लिल्-उम्मिय्यीन"

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अनपढ़ लोगों के वास्ते नजात दिलाने वाले बनकर आएँगे। "उम्मी" का लफ़्ज़ ख़ास तौर से लक़ब के तौर पर अ़रबों के लिए बोला जाता था। इसलिए कि उनके यहाँ लिखने-पढ़ने का रिवाज नहीं था, कि उम्मियों के लिए नजात दिलाने वाले बनकर आएँगे। आगे फ़रमायाः

"व अन्-त अ़ब्दी व रसूली"

यानी अल्लाह तआ़ला उस वक़्त तौरात में फ़रमा रहे हैं कि ऐ नबी मुहम्मद! तुम मेरे बन्दे हो और पैग़म्बर हो।

"व सम्मैतुकल् मुतवक्कि-ल"

और मैंने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा है, यानी अल्लाह तआ़ला पर भरोसा करने वाला।

आगे सिफ़तें बयान फ़रमाईं कि वह नबी कैसा होगा? फ़रमायाः

"लै-स बिफ़ज़्ज़िन् व ला ग़लीज़िन्"

वह न तो सख़्त और कड़वी बात करने वाला होगा और न सख़्त तबीयत वाला होगा। "फ़ज़्ज़" के मायने हैं जिसकी बातों में सख़्ती हो, लहजा उखड़ा हुआ हो।

"व ला सख़्ख़ाबु फ़िल्-अस्वाकि"

और न बाज़ारों में शोर मचाने वाला होगा।

"व ला यद्फ़उस्सय्यि-अ-त बिस्सय्यि-अति"

और वह बुराई का बदला बुराई से नहीं देगा।

"व लाकिन् यअ़फ़ू व यस्फ़हु"

लेकिन वह माफ़ करने वाला और दरगुज़र करने वाला होगा।

"व लंय्-यक़्बि-ज़हुल्लाहु तआला हत्ता युक़ी-म बिहिल् मिल्लतल् इ-वजा-अ बिअंय्-यक़ूलू ला इला-ह इल्लल्लाहु"

और अल्लाह तआला उस वक़्त तक उसको अपने पास नहीं बुलाएँगे जब तक कि उस टेढ़ी क़ौम को सीधा न कर दें, इस तरह कि वे कह दें "ला इला-ह इल्लल्लाहु"।

"व यफ़्तहु बिहा अअ्युनन् उम्यन् व आज़ानन् सुम्मन् व क़ुलूबन् गुल्फ़न्"

और इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये उनकी अन्धी आँखें खोल देगा, और बहरे कान खोल देगा। और वे दिल जिनके ऊपर पर्दे पड़े हुए हैं, वे उनके ज़रिये खुल जाएँगे।

और ये सिफ़तें तक़रीबन इन्हीं अलफ़ाज़ के साथ तौरात में आज भी मौजूद हैं।

तौरात की इब्रानी भाषा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफ़तें

चूँकि मुहावरे हर ज़बान (भाषा) में अलग-अलग होते हैं तो असल तौरात इब्रानी ज़बान में थी। उसका तर्जुमा जब उर्दू में करते हैं तो इस तरह करते हैं किः

"वह मसले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा। टिमटिमाती हुई बत्ती को न बुझाएगा"।

और इब्रानी ज़बान के मुहावरे में तर्जुमा इस तरह करते हैं किः

"वह किसी बुराई का बदला बुराई से न देगा और माफ़ करने व दरगुज़र करने से काम लेगा। और उसके आगे पत्थर के बुत औंधे मुँह गिरेंगे"।

और यह वाक़िआ उस वक़्त पेश आया जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का मुअज़्ज़मा को फ़तह किया तो पत्थर के बुत

जो काबा शरीफ़ में स्थापित थे, वे औंधे मुँह गिरे। यह सारी तफ़सील आई है। मैंने जो "इज़हारुल् हक़" का तर्जुमा "बाईबल से क़ुरआन तक" के नाम से किया है, उसकी तीसरी जिल्द का छठा बाब इन्हीं ख़ुशख़बरियों पर आधारित है। मैंने दो कालम बनाकर एक कालम में बाईबल की इबारत और दूसरे कालम में वे हदीसें लिखी हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तें आई हैं। फिर उनकी तुलना करके दिखाई कि बाईबल में यह आया है और क़ुरआन करीम में या हदीस में यह आया है। तो इतनी कमी-बेशी और बदलाव के बावजूद आज भी ये सिफ़तें बाईबल में बाक़ी हैं।

ज़िक्र हुई हदीस से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मक़सद

लेकिन जिस ग़रज़ से इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि यह हदीस लेकर आए हैं वह यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जो हालात पिछली किताबों में बयान हुए वे क्या थे, और इस पेशीनगोई में जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इम्तियाज़ी सिफ़तें हैं और सबसे ज़्यादा अहमियत वाली हैं, वे क्या हैं?

वे ये हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सख़्त नहीं हैं और कड़वे मिज़ाज वाले नहीं हैं। और बुराई का बदला बुराई से नहीं देते।

यह सुन्नत है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। हालाँकि अल्लाह तआ़ला ने शरीअ़त में इजाज़त दी है कि अगर किसी आदमी ने तुम्हारे साथ बुराई की है तो जितनी बुराई की है उतना बदला ले सकते हो। एक तमाँचा मारा है तो तुम भी उतने ही ज़ोर से एक तमाँचा मार सकते हो जितना ज़ोर से उसने मारा। उससे कम या ज़्यादा न हो। इसकी इजाज़त है। लेकिन इजाज़त होना और बात है और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत होना और बात है। आपने सारी उम्र कभी किसी आदमी से अपनी ज़ात का बदला नहीं लिया।

बुराई का जवाब अच्छे सुलूक से देना

यह भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ी महत्त्वपूर्ण सुन्नत है। हमने सुन्नतों को कुछ ज़ाहिरी सुन्नतों तक सीमित कर लिया है। जैसे सुन्नत है कि मिस्वाक करनी चाहिये, दाढ़ी रखनी चाहिये और अपना ज़ाहिरी हुलिया सुन्नत के अनुसार रखना चाहिये। ये सब सुन्नतें हैं इनकी अहमियत से भी जो इनकार करे वह सुन्नतों को नहीं जानता। लेकिन सुन्नतें इस हद तक सीमित नहीं, आम सम्बन्धों और मामलात में नबी करीम सल्ल० का जो तरीक़ा-ए-अमल था, वह भी आपकी सुन्नत का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। और जिस पाबन्दी के साथ दूसरी सुन्नतों पर अमल करने का दिल में दाईया (जज़्बा और तक़ाज़ा) पैदा होता है उससे भी ज़्यादा एहतिमाम के साथ इस सुन्नत पर अमल करने की फ़िक्र करनी चाहिये कि बुराई का बदला बुराई से न दें बल्कि बुराई का बदला अच्छाई के साथ दें। सुन्नत के मुताबिक़ अच्छाई से दें।

अब ज़रा हम अपने गिरेबानों में झाँक कर देखें कि हम इस सुन्नत पर कितना अमल कर रहे हैं? हमारे साथ अगर किसी ने बुराई की है तो बदले की भावना कितनी दिल में पैदा होती है और कितनी उसको तकलीफ़ पहुँचाने की कोशिश करते हैं? अगर ग़ौर करो तो समाज में फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) का बहुत बड़ा सबब यह है कि हमने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस सुन्नत को छोड़ दिया है। हमारी सोच यह होती है कि उसने चूँकि मेरे साथ बुराई की है, मैं भी उससे बुराई करूँगा। उसने मुझे गाली दी है, मैं भी गाली दूँगा। उसने मुझे मेरी शादी पर क्या तोहफ़ा दिया था, मैं भी उतना ही दूँगा। और उसने शादी पर तोहफ़ा नहीं दिया था तो मैं भी नहीं दूँगा।

इसका मतलब यह हुआ कि यह सब कुछ बदला करने के लिए हो रहा है। बदला करने वाला दर असल सिला-रहमी करने वाला नहीं होता। हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया है:

तर्जुमाः यानी हक़ीक़त में सिला-रहमी करने वाला वह शख़्स है कि

दूसरा तो कता-रहमी कर रहा है और रिश्तेदारी के हुकूक़ अदा नहीं कर रहा है और यह जवाब में कता-रहमी करने के बजाए उसके साथ अच्छा मामला कर रहा है। (बुख़ारी, किताबुल अदब)

हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब का अ़जीब वाकिआ़

एक दिन हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपने घर पर कुछ लोगों और ख़ादिमों के साथ बैठे हुए थे। अचानक एक साहिब आए जो हज़रत के कोई रिश्तेदार थे। दाढ़ी-मूँछ साफ़, आम आदमियों की तरह थे। दरवाज़े में दाख़िल होते ही गालियाँ देनी शुरू कर दीं। बहुत ही बे-अदबी के लहजे में जितने अलफ़ाज़ बुराई के उनके मुँह में आए, कहते ही गये। आगे से हज़रत उनकी हर बात पर कह रहे हैं कि भाई हमसे ग़लती हो गयी है, तुम हमें माफ़ कर दो। हम इन्शा-अल्लाह तलाफ़ी कर देंगे। तुम्हारे पाँव पकड़ते हैं, माफ़ कर दो। बहरहाल! उन साहिब का इतना सख़्त गुस्से का आ़लम कि देखने वाले को भी बरदाश्त न हो, आख़िरकार ठण्डे हो गए।

बाद में हज़रत डॉक्टर साहिब फ़रमाने लगे कि इस अल्लाह के बन्दे को कोई ग़लत ख़बर मिल गयी थी, इस वजह से उनको गुस्सा आ गया था। अगर मैं चाहता तो उनको जवाब दे सकता था और बदला ले सकता था लेकिन इस वास्ते मैंने उसको ठण्डा किया कि बहरहाल यह रिश्तेदार है, और रिश्तेदारों के भी हुकूक़ होते हैं। तो रिश्तेदारों के साथ कता-ताल्लुक़ कर लेना आसान है, लेकिन ताल्लुक़ जोड़कर रखना यह है दर हक़ीक़त तालीम नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की। और यह है कि बुराई का बदला बुराई से नहीं बल्कि प्यार से, मुहब्बत से, शफ़क़त से और ख़ैरख़्वाही से दो।

मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब का वाकिआ़

मौलाना रफ़ीउद्दीन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि दारुल उलूम देवबन्द के मोहतमिम थे। अ़जीब अल्लाह वाले बुज़ुर्ग थे। दारुल उलूम में मोहतमिम के मायने गोया कि सबसे बड़े ओहदे पर पदासीन थे। हज़रत ने एक गाय

पाल रखी थी। एक बार ऐसा हुआ कि उसको लेकर आ रहे थे कि रास्ते में मदरसे का कोई काम याद आ गया। उसी तरह मदरसे आए और गाय मदरसे के सहन में पेड़ के साथ बाँधकर दफ़्तर में चले गये।

वहाँ देवबन्द के एक साहिब आए और चीख़ना शुरू कर दिया कि यह गाय किसकी बंधी है? लोगों ने बताया: मोहतमिम साहिब की है। तो कहने लगे अच्छा! मदरसा मोहतमिम का कमेला बन गया। उनकी गाय का बाड़ा बन गया और मोहतमिम साहिब मदरसे को इस तरह खा रहे हैं कि मदरसे के सहन को उन्होंने अपनी गाय का बाड़ा बना लिया है।

शोर सुनकर वहाँ एक मजमा इकट्ठा हो गया। अब सरासर इल्ज़ाम, सरासर नाइन्साफ़ी, हज़रत वहाँ काम कर रहे थे, अन्दर आवाज़ आई तो बाहर निकले कि क्या क़िस्सा है? लोगों ने बताया कि यह साहिब नाराज़ हो रहे हैं कि मोहतमिम साहिब ने यहाँ गाय बाँध दी। कहने लगे कि हाँ! वाक़ई यह मदरसा है अल्लाह का। मुझे गाय यहाँ नहीं बाँधनी चाहिये थी। यह गाय मेरी ज़ाती है और यह सहन मदरसे का है। मुझसे ग़लती हो गयी, मैं अल्लाह तआ़ला से इस्तिग़फ़ार करता हूँ। इस ग़लती का कफ़्फ़ारा यह है कि मेरा दिल चाह रहा है कि यह गाय आप ही ले जाओ। वह भी अल्लाह का बन्दा ऐसा था कि लेकर चलता बना।

अब आप देखिए कि सरासर नाइन्साफ़ी और ज़ुल्म है। इतने बड़े अल्लाह वाले और इतने बड़े दीन के ख़ादिम के ऊपर एक मामूली आदमी इतनी गर्मी दिखा रहा है। सब लोगों के सामने बजाए इसके कि उसको बदला दिया जाता, गाय भी उसी को दे दी। यह है नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर अ़मल।

आपकी सारी सुन्नतों पर अ़मल ज़रूरी है

दर असल सुन्नत सिर्फ़ यह नहीं है कि आसान-आसान सुन्नतों पर अ़मल कर लिया जाए। बल्कि हर एक सुन्नत पर अ़मल की फ़िक्र करनी चाहिये और इनसान इस सुन्नत के जितना क़रीब होगा, उतना ही समाज का फ़साद (बिगाड़ और ख़राबी) ख़त्म होगी। ग़ौर करके देख लो और

तजुर्बा करके देख लो कि जो बिगाड़ फैला हुआ है वह जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों से दूर होने का नतीजा है।

लेकिन वह माफ फ़रमा देते हैं और दरगुज़र से काम लेते हैं। कोई कुछ भी कह दे लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जवाब नहीं देते। और जो अल्लाह के वली होते हैं वे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैरोकार होते हैं और उनका तरीक़ा भी यही होता है। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से उसका कुछ हिस्सा हमको भी अ़ता फ़रमा दे।

यह सब कुछ इसलिए अ़र्ज़ किया जाता है कि हम सब एक ही कश्ती के सवार हैं। मालूम नहीं हम कहाँ चले गये हैं। किस वादी में भटक रहे हैं। यहाँ बैठने का मक़सद यह होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों का कम-से-कम थोड़ी देर ध्यान हो तो शायद दिलों में कुछ जज़्बा पैदा हो जाए और अल्लाह तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे। इसकी आ़दत डालो, इसके लिए ख़ून के घूँट पीने पड़ते हैं, इसके लिए मश्क़ करनी पड़ती है, दिल पर जबर करना पड़ता है। दिल पर पत्थर रखने पड़ते हैं। अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की मन्ज़िल की तरफ़ जाना है तो ये कड़वे घूँट पीने पड़ेंगे।

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक पसन्दीदा घूँट

हदीस पाक में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कोई घूँट जो इनसान पीता है अल्लाह तआ़ला को इतना पसन्द नहीं जितना कि गुस्से का पीना। (मुस्नद अहमद, जिल्द 1 पेज 367)

यानी जब गुस्सा आ रहा हो और गुस्से में आदमी आपे से बाहर हो रहा हो और उसमें अन्देशा हो कि वह किसी को नुक़सान पहुँचा देगा, उस वक़्त गुस्से के घूँट को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की खुशी के लिए पी जाना और उसके तक़ाज़े पर अ़मल न करना, यह अल्लाह तआ़ला को बहुत ही पसन्द है।

कुरआन करीम ने सूरः आलि इमरान की आयत 134 के अन्दर ऐसे ही लोगों की तारीफ़ फ़रमाई है कि जब भी गुस्सा आए और बदले के

जज़्बात पैदा हों, तो ठीक है तुम्हें शरीअत ने जायज़ सीमाओं में बदला लेने का हक़ दिया है। लेकिन यह देखो कि बदला लेने से तुम्हें क्या फ़ायदा? माना एक शख़्स ने तुम्हें तमाँचा मार दिया तो अगर तुम बदला लेने के लिए एक तमाँचा उसके मारो तो तुम्हें क्या फ़ायदा हासिल हुआ? अगर तुमने उसको माफ़ कर दिया और यह कहा कि मैं अल्लाह तआ़ला के लिए उसको माफ़ करता हूँ तो इसका नतीजा क्या होगा?

अल्लाह तआ़ला के यहाँ सब्र करने वालों का अज्र

इसका नतीजा यह होगा कि:

तर्जुमाः बेशक सब्र करने वालों को अल्लाह तआ़ला बेहिसाब अज्र अ़ता फ़रमाएँगे। (सूरः जुमर आयत 10)

और हदीस पाक में आता है कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के बन्दों को माफ़ करने का आ़दी हो, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब उसने मेरे बन्दों को माफ़ किया था तो मैं उसको माफ़ करने का ज़्यादा हक़दार हूँ। तो उसकी ख़ताएँ भी अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमा देते हैं।

माफ़ करने और सब्र का मिसाली वाक़िआ़

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में दो आदमी आपस में लड़े। लड़ाई में एक का दाँत टूट गया। जिसका दाँत टूटा वह शख़्स उसको पकड़कर हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के पास ले गया और कहा कि दाँत का बदला दाँत से होता है इसलिए क़िसास (बदला) दिलवाइये।

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि ठीक है, तुम्हें हक़ है लेकिन क्या फ़ायदा, तुम्हारा दाँत तो टूट ही गया, इसका भी तोड़ें, इसके बजाए तुम दाँत की दियत (मुआ़वज़ा) ले लो। दियत पर सुलह कर लो। वह शख़्स कहने लगा कि मैं दाँत ही तोड़ूँगा। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दोबारा उसको समझाने की कोशिश की लेकिन वह न माना। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि फिर चलो, उसका भी दाँत तोड़ते हैं।

रास्ते में हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे। बड़े दर्जे के मशहूर सहाबी हैं। उन्होंने कहा कि भाई देखो! तुम बदला तो ले रहे हो मगर एक बात तो सुनते जाओ, मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि अगर कोई शख़्स किसी दूसरे को तक्लीफ़ पहुँचाए और फिर जिसको तक्लीफ़ पहुँची है वह उसको माफ़ कर दे तो अल्लाह तआला उसको उस समय माफ़ फ़रमाएँगे जबकि उसको माफ़ी की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होगी, यानी आख़िरत में।

तो यह शख़्स या तो इतने गुस्से में आया था कि पैसे लेने पर भी राज़ी नहीं था, जब यह बात सुनी तो कहा कि क्या आपने यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी है? हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हाँ! मैंने सुनी है और मेरे कानों ने सुनी है। वह शख़्स कहने लगा कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात फ़रमाई है तो जाओ उसको बग़ैर किसी पैसे के माफ़ करता हूँ। चुनाँचे उसको माफ़ कर दिया।

हम में और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में फ़र्क़

हदीसें हम भी सुनते हैं और वे हज़रात भी सुनते हैं, लेकिन उनका हाल यह था कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक इरशाद कान में पड़ा तो बड़े-से-बड़ा क़स्द व इरादा और बड़े-से-बड़ा मन्सूबा उस इरशाद के आगे एक पल में ढेर कर दिया।

हम सुबह से शाम तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशादात पढ़ते और सुनते रहते हैं लेकिन उन पर अमल का जज़्बा पैदा नहीं होता। यही वजह है कि इस पढ़ने और सुनने के नतीजे में हमारी ज़िन्दगी में कोई इन्क़िलाब और बदलाव नहीं आता, लेकिन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को अल्लाह तआला ने दुनिया में इज़्ज़त दी थी और आख़िरत में भी इन्शा-अल्लाह उनका बहुत बड़ा मुक़ाम होगा।

ज़िक्र हुई हदीस का आख़िरी टुकड़ा

इसमें दूसरी बात आगे यह फ़रमाई कि अल्लाह तआला हुज़ूर सल्ल०

को उस वक़्त तक अपने पास नहीं बुलाएँगे जब तक कि उस टेढ़ी कौम को सीधा न कर लें। टेढ़ी कौम से मतलब बुतों को पूजने वाली अ़रब कौम है। उनके अन्दर शिर्क तो था ही, और दिमाग़ में यह ख़न्नास भी था कि हम सारी मख़्लूक़ से बरतर (बेहतर और ऊँचे रुतबे वाले) हैं। अपने आपको खुदा जाने क्या कुछ समझते थे। उनको सीधा करने के लिए नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा।

चुनाँचे तेईस साल की मुद्दत में अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिये अ़रब के पूरे इलाक़े पर ला इला-ह इल्लल्लाहु की हुकूमत क़ायम फ़रमा दी और आगे फ़रमाया कि:

"इस कलिमा-ए-तौहीद के ज़रिये उनकी अन्धी आँखों को खोलेगा और उनके दिलों के पर्दों को हटाएगा।"

ये सब अलफ़ाज़ तौरात के हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सिफ़तों के बारे में आए हैं। अल्लाह तआ़ला हमें इन अख़्लाक़ को अपने अन्दर पैदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

عن نعيم بن يزيد قال: حدثنا علي بن ابي طالب رضي اللّٰه عنه أن النبي صلى اللّٰه عليه وسلم لما ثقل قال: يا علي: ائتني بطبق أكتب فيه مالا تضل أمتي، فخشيت أن يسبقني فقلت: إني لأحفظ من ذراعي الصحيفة وكان رأسه بين ذراعيه و عضدي يوصي الصلاة والزكاة وماملكت أيمانكم، وقال كذالك حتى فاضت نفسه و امره بشهادة أن لا اله الا اللّٰه و أن محمدا عبده ورسوله من شهد بهما حرّم على النار. (الادب المفرد، باب نمبر ٨٣)

वफ़ात वाली बीमारी में लिखने के लिए थाल मंगवाना

यह रिवायत हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बयान की गयी है। इस रिवायत में वह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात की बीमारी का वाक़िआ बयान फ़रमा रहे हैं। आपकी यह बीमारी कई रोज़ तक जारी रही और उन दिनों में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ न ला सके।

आख़िरी दिन जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब था उस वक़्त का वाक़िआ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान फ़रमा रहे हैं। वह यह कि जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत ज़्यादा नासाज़ हो गयी तो आपने मुझसे फ़रमाया कि ऐ अ़ली! मेरे पास कोई थाल ले आओ, जिसमें वह बात लिख दूँ कि जिसके बाद मेरी उम्मत गुमराह न हो।

उस ज़माने में काग़ज़ का इतना ज़्यादा रिवाज नहीं था, इसलिए कभी चमड़े पर लिख लिया, कभी पेड़ के पत्तों पर लिख लिया, कभी हड्डियों पर लिख लिया, कभी मिट्टी के बरतन पर लिख लिया। चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से लिखने के लिए थाल मंगवाया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आख़िरी वसीयतें

हज़रत अ़ली फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत इतनी ज़्यादा नासाज़ थी कि मुझे यह अन्देशा हुआ कि अगर मैं लिखने के लिए कोई चीज़ तलाश करने जाऊँगा तो कहीं मेरे पीछे ही आपकी रूह परवाज़ न कर जाए इसलिए मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि आप जो कुछ फ़रमाएँगे, मैं उसको याद रखूँगा और बाद में उसको लिख लूँगा।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का सर मुबारक मेरे बाज़ुओं के बीच था। उस वक़्त आपकी ज़बान मुबारक से जो कलिमात निकल रहे थे वे ये थे "नमाज़ का ख़्याल रखो, ज़कात का ख़्याल रखो और तुम्हारी मिल्कियत में जो गुलाम और बाँदियाँ हैं, उनका ख़्याल रखो, और **अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू** की गवाही पर क़ायम रहो। जो शख़्स इस गवाही पर क़ायम रहेगा अल्लाह तआ़ला जहन्नम को उस शख़्स पर हराम फ़रमा देंगे।"

ये नसीहतें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आख़िरी वक़्त में इरशाद फ़रमाईं।

उपरोक्त वाक़िआ ख़ुद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान फ़रमाया, इसमें कई बातें समझने की हैं।

हज़रत उमर से लिखने के लिए काग़ज़ तलब करना

पहली बात यह है कि इसी तरह का एक वाक़िआ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ भी पेश आया था। यह वाक़िआ जिसका ज़िक्र हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, यह ख़ास उस दिन का वाक़िआ है जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हुआ, और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ इन्तिक़ाल से तीन दिन पहले ऐसा ही वाक़िआ पेश आया था।

उस दिन भी नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीयत बोझल और नासाज़ थी और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आपके पास थे। आप सल्ल० के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी क़रीब थे। उस वक़्त भी आपने उन हज़रात से फ़रमाया था कि कोई काग़ज़ वग़ैरह ले आओ ताकि मैं ऐसी बात लिख दूँ जिसके बाद तुम गुमराह न हो।

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु यह देख रहे थे कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीयत ज़्यादा नासाज़ है और इस हालत में अगर आप कुछ लिखवाने की मशक़्क़त उठाएँगे तो कहीं आपकी तबीयत और ज़्यादा ख़राब न हो जाए। इस वजह से हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला की किताब हमारे पास मौजूद है और आप पहले ही बहुत-से इरशादात बयान फ़रमा चुके हैं, इसलिए यह मशक़्क़त उठाने की ज़रूरत नहीं।

शियाओं का हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु पर बोहतान

यह वाक़िआ जो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ

पेश आया था। इसको शियाओं ने एक पहाड़ बना लिया और इसकी बुनियाद पर हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर यह इल्ज़ाम लगाया कि ख़ुदा की पनाह! उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को वसीयत लिखने से रोका और दर हक़ीक़त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह वसीयत लिखना चाहते थे कि मेरे बाद हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ख़लीफ़ा बनाएँ मगर हज़रत फ़ारूके आज़म आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इस मन्शा को समझ गये इसलिए उन्होंने बीच में आकर आपको इस वसीयत लिखने से मना फ़रमा दिया और रुकावट डाल दी, जिसके नतीजे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़िलाफ़त की वसीयत न लिखवा सके। इस वाक़िए को बुनियाद बनाकर शियाओं ने हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ख़िलाफ़ तोहमतों का एक तूफ़ान खड़ा कर दिया।

यह बोहतान ग़लत है

हालाँकि बात सिर्फ़ इतनी थी कि हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने यह देखा कि ऐसा न हो कि लिखने की मशक़्क़त की वजह से आपकी तबीयत और ज़्यादा ख़राब हो जाए। और यह भी जानते थे कि अगर कोई बहुत अहम बात लिखनी होगी तो सिर्फ़ मेरे कहने की वजह से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उस बात को बयान करने से नहीं रुकेंगे। हक़ीक़त यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अगर कोई बात बयान करनी होती और उस बात को आप ज़रूरी भी समझते तो क्या सिर्फ़ हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मना करने की वजह से उस बात को बयान करने से रुक जाते? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो हक़ बात पहुँचाने में किसी बड़े से बड़े इनसान की भी परवाह नहीं की। यह हिमाक़त और गुमराही की बात है जो इन शियाओं ने इख़्तियार की है।

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ क्यों नहीं करते?

और दूसरी तरफ़ इसी तरह का वाकिआ़ हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ भी पेश आया कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया था कि थाल ले आओ ताकि मैं कुछ लिखवा दूँ। लेकिन हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत इतनी नासाज़ थी कि मुझे अन्देशा हुआ कि अगर मैं लिखने के लिए थाल लेने जाऊँगा तो मेरे पीछे कहीं आपकी रूह परवाज़ न कर जाए इसलिए वह भी लिखने के लिए कोई चीज़ नहीं लाए।

अब देखिये कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने भी वही काम किया जो हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने किया था। इसलिए अगर हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर कोई एतिराज़ होता है तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर भी एतिराज़ होता है।

बल्कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ ज़्यादा होता है क्योंकि हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ जो वाकिआ़ पेश आया वह इन्तिक़ाल से तीन दिन पहले पेश आया और उस वाकिए के बाद तीन दिन तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे। इसलिए अगर कोई ज़रूरी बात लिखवानी थी तो आप बाद में भी लिखवा सकते थे। और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ जो वाकिआ़ पेश आया वह ठीक इन्तिक़ाल के वक़्त पेश आया और उस वाकिए के फ़ौरन बाद आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इन्तिक़ाल हो गया। इसलिए अगर उस वाकिए से हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर एतिराज़ हो सकता है तो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर ज़्यादा हो सकता है।

दोनों बुज़ुर्ग सहाबा ने सही अ़मल किया

बात दर असल यह है कि दोनों बुज़ुर्गों ने वही काम किया जो एक

जाँनिसार सहाबी को करना चाहिये था। दोनों यह देख रहे थे कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तबीयत नासाज़ है। हम और आप उस वक़्त की हालत का अन्दाज़ा भी नहीं कर सकते जो उस मौक़े पर सहाबा किराम पर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बीमार देखकर गुज़र रही थी। ये वे हज़रात सहाबा किराम थे जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक साँस के बदले हज़ारों ज़िन्दगियाँ क़ुरबान करने के लिए तैयार थे। आपकी बीमारी और आपकी तकलीफ़ उन हज़रात के लिए रूह को तड़पाने वाली थी।

इसी लिए उन दोनों हज़रात ने वही काम किया जो एक जाँनिसार सहाबी को करना चाहिये था। वह यह कि ऐसे मौक़े पर सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जहाँ तक मुमकिन हो तकलीफ़ से बचाया जाए और ये दोनों हज़रात जानते थे कि आपकी सारी ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ला के दीन का पैग़ाम पहुँचाने में और फैलाने में ख़र्च हुई और कोई ज़रूरी बात ऐसी नहीं है जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने खुले शब्दों में बयान न फ़रमा दी हो। इसलिए कोई ऐसी बात नहीं है जिसको इसी वक़्त लिखवाना ज़रूरी हो। और अगर कोई बात ऐसी होगी भी तो हम उसको ज़बानी सुनकर याद रखेंगे।

वे बातें आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद भी फ़रमा दीं

फिर साथ ही इस हदीस में यह भी आ गया है कि आप जो बातें लिखवाना चाहते थे वे उसी वक़्त इरशाद भी फ़रमा दीं। जिसकी वजह से पता चल गया कि आप क्या लिखवाना चाह रहे थे और वही बातें हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रिवायत फ़रमा दीं जिसके नतीजे में यह बात सामने आ गई कि वे बातें जिनकी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बार-बार ताकीद फ़रमा चुके थे उसी को और ज़्यादा ताकीद के साथ हमेशा के लिए महफ़ूज़ करने की ख़ातिर लिखवाना चाह रहे थे, चुनाँचे आपने फ़रमायाः

अस्सला-त वज़्ज़का-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम्

अब नमाज़ की ताकीद और ज़कात की ताकीद और गुलामों के साथ अच्छे सुलूक की ताकीद कोई नयी बात नहीं थी लेकिन सिर्फ़ इसलिए ये बातें बयान फ़रमाईं ताकि उम्मत को पता चल जाए कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया से जाते-जाते जिन बातों की ताकीद फ़रमायी वे ये थीं। इसलिए न ख़िलाफ़त का कोई मसला था और न ही अपने बाद किसी को जानशनी बनाने का मामला था।

बहरहाल! शियाओं ने हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़ एतिराज़ों का जो तूफ़ान खड़ा किया था उसका इस हदीस से बिल्कुल ख़ात्मा हो जाता है क्योंकि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ वही मामला पेश आया जो हज़रत फ़ारूके आज़म के साथ पेश आया था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म का पालन न करने की वजह

दूसरी बात जो इस हदीस से मालूम हुई वह यह कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के वाकिए में कागज़ मंगवाया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के वाकिए में थाल मंगवाया, लेकिन ये दोनों हज़रात ये चीज़ें नहीं लाए। अब बज़ाहिर देखने में यह नज़र आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म की तामील नहीं हुई लेकिन तामील न होने की वजह अल्लाह की पनाह! यह नहीं थी कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म की कोई अहमियत नहीं समझी, बल्कि वजह यह थी कि ये हज़रात जानते थे कि अगर इस वक़्त कोई चीज़ लिखने के लिए लाएँगे तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तबीयत पर और ज़्यादा बोझ होगा।

यह बे-अदबी नहीं

इससे मालूम हुआ कि अगर अपना बड़ा कोई काम करने को कहे और छोटे यह देखें कि इस काम से उनको तकलीफ़ होगी और उससे

उनकी तबीयत पर बोझ होगा तो बड़े को तकलीफ़ से बचाने के लिए छोटे यह कह दें कि इस काम को दूसरे वक़्त के लिए टाल दें, तो इसमें न तो कोई नाफ़रमानी है और न ही इसमें कोई बे-अदबी है। बल्कि अदब और मुहब्बत का तक़ाज़ा ही यह है कि उनकी राहत का और उनकी सेहत का ख़्याल किया जाए।

पूरे दीन का ख़ुलासा

तीसरी बात जो इस हदीस को बयान करने का असल मक़सद है। वे नसीहतें हैं जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर इरशाद फ़रमाईं और जिन बातों की ताकीद फ़रमायी। इससे यह मालूम होता है कि सारी ज़िन्दगी दीन के जो अहकाम आप बयान फ़रमाते रहे और जो तालीमात लोगों के सामने फैलाते रहे उनका ख़ुलासा वे बातें हैं जो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुनिया से जाने के वक़्त इरशाद फ़रमाईं। एक और हदीस जो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु से बयान की गयी है, जिसमें आपने फ़रमाया कि आख़िरी वक़्त में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की आवाज़ आहिस्ता हो गयी तो मैंने आपके मुँह पर कान लगाकर सुना तो आख़िरी वक़्त तक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक पर ये अलफ़ाज़ थे:

अस्सला-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम
अस्सला-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम

यानी नमाज़ का ख़्याल करो और अपने मातेहतों का ख़्याल करो।

नमाज़ और मातेहतों के हुक़ूक़ की अहमियत

इससे मालूम हुआ कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तमाम दीन के अहकाम और तालीमात में जिन चीज़ों का सबसे ज़्यादा एहतिमाम था वह अल्लाह के हक़ों में नमाज़ थी। एक और रिवायत में **"अस्सला-त वज़्ज़का-त व मा म-लकत् ऐमानुकुम"** के अलफ़ाज़ आए हैं। जिससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला के जिन हुक़ूक़ का सबसे ज़्यादा एहतिमाम था, वे दो तरह के हुक़ूक़ थे- एक जानी और एक माली।

जानी हुकूक़ में नमाज़ और माली हुकूक़ में ज़कात। और बन्दों के हुकूक़ में गुलामों और ख़ादिमों और नौकरों और मातेहतों के हुकूक़।

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़िक्र और चिन्ता यह थी कि कहीं मेरी उम्मत मेरे बाद दीन के इन अहकाम में कोताही न करे। क्योंकि आप जानते थे कि इनमें कोताही का नतीजा तबाही है, जहन्नम है, और अल्लाह तआला का अज़ाब है। इसलिए दुनिया से जाते वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनकी ताकीद फ़रमा दी।

आख़िरत में नमाज़ के बारे में सबसे पहले सवाल होगा

क़ुरआन व हदीस नमाज़ की ताकीद से भरे हुए हैं। जगह-जगह "अक़ीमुस्सला-त, अक़ीमुस्सला-त" के अलफ़ाज़ बार-बार इरशाद फ़रमाए गये हैं। हदीस शरीफ़ में आता है कि आख़िरत में सबसे पहले नमाज़ के बारे में सवाल होगा। नमाज़ के बारे में हिसाब होगा कि कितनी नमाज़ें पढ़ीं, कितनी नमाज़ें छोड़ीं, कितनी नमाज़ें क़ज़ा करके पढ़ीं। आख़िरत की तैयारी के लिए सबसे पहला काम यह है कि इनसान सबसे पहले अपनी नमाज़ का हिसाब लगाए कि मेरे ज़िम्मे कोई नमाज़ बाक़ी है या नहीं?

मुख़्तसर तौबा का तरीक़ा

इसी वजह से हमारे बुज़ुर्गों का तरीक़ा यह है कि जब कोई शख़्स उनके पास "इस्लाही ताल्लुक़" (यानी अपने को सुधारने का ताल्लुक़) क़ायम करने की ग़रज़ से आता है। या उनसे बैअ़त करता है तो सबसे पहले "तौबा को पूरा करने" की तालीम दी जाती है। एक मुख़्तसर तौबा होती है और एक तफ़सीली तौबा होती है। मुख़्तसर तौबा यह है कि "सलातुत्तौबा" की नीयत से दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े और फिर बहुत ही आजिज़ी और इन्किसारी के साथ अल्लाह तआला के सामने अपने तमाम पिछले गुनाहों से तौबा करे कि या अल्लाह! मुझसे पिछली ज़िन्दगी में जितने गुनाह हुए हैं, छोटे हों या बड़े, और जितने फ़राईज़, वाजिबात मुझसे छूटे हैं, मैं आपसे उन सबकी माफ़ी माँगता हूँ। सबसे तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूँ। ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए और मेरी तौबा

को क़बूल फ़रमा लीजिए। यह "मुख़्तसर तौबा" है।

पिछली नमाज़ों का हिसाब

मुख़्तसर तौबा करने के बाद फिर तफ़सीली तौबा करे। तफ़सीली तौबा का मतलब यह है कि गुज़रे ज़माने में जो ग़लतियाँ हुई हैं उनमें से जिनकी तालफ़ी मुमकिन है उनकी तलाफ़ी शुरू कर दे। जैसे यह देखे कि अपनी पिछली ज़िन्दगी में मेरी नमाज़ें छूटी हैं या नहीं? इनसान जिस दिन बालिग़ हो जाता है उस दिन से उस पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जाती है, चाहे वह लड़का हो या लड़की हो। लड़के का बालिग़ होना यह है कि बालिग़ होने की निशानियाँ ज़ाहिर हो जाएँ और लड़की का बालिग़ होना यह है कि उसकी माहवारी शुरू हो जाए। और बालिग़ होते ही दोनों पर नमाज़ फ़र्ज़ हो जाती है। इसलिए तफ़सीली तौबा करते वक़्त सबसे पहले यह देखे कि जिस दिन से बालिग़ हुआ हूँ उस दिन से आज तक मेरी कोई नमाज़ छूटी है या नहीं? अगर नहीं छूटी तो इस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे। और अगर छूटी है तो फिर इसका हिसाब लगाए कि मेरे ज़िम्मे कौनसी नमाज़ कितनी बाक़ी हैं। अगर पूरी तरह ठीक-टीक हिसाब लगाना संभव नहीं है तो फिर मोहतात अन्दाज़ा लगाए।

अगर बालिग़ होने की तारीख़ याद नहीं है तो फिर चौदह साल की उम्र के बाद से हिसाब लगाए। इसलिए कि हमारे इलाक़ों में चौदह साल पूरे होने पर बच्चे बालिग़ हो जाते हैं। इसलिए यह अन्दाज़ा लगाएँ कि चौदह साल की उम्र से लेकर आज तक कितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई होंगी। इसका एक मोहतात अन्दाज़ा लगा ले। अन्दाज़ा लगाने के बाद किसी कापी में नोट कर ले। जैसे अन्दाज़ा लगाने के बाद पता चला कि तीन साल की नमाज़ें बाक़ी हैं। अब कापी के अन्दर लिख ले कि तीन साल की नमाज़ें मेरे ज़िम्मे हैं और फिर आज ही से उनको अदा करना शुरू कर दे। यह "क़ज़ा-ए-उम्री" कहलाती है।

क़ज़ा-ए-उम्री अदा करने का तरीक़ा

क़ज़ा-ए-उम्री की अदायगी का तरीक़ा यह है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के

साथ एक क़ज़ा नमाज़ पढ़ना शुरू कर दे। जैसे फ़ज्र के साथ फ़ज्र, ज़ोहर के साथ ज़ोहर, अ़स्र के साथ अ़स्र, मग़रिब के साथ मग़रिब, इशा के साथ इशा। और हर क़ज़ा नमाज़ की नीयत का तरीक़ा यह है कि जैसे फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा कर रहा है तो यह नीयत करे कि मेरे ज़िम्मे जितनी फ़ज्र की नमाज़ें क़ज़ा हैं उनमें से सबसे पहली फ़ज्र की नमाज़ पढ़ रहा हूँ। इसी तरह ज़ोहर की नमाज़ क़ज़ा करते वक़्त यह नीयत करे कि मेरे ज़िम्मे ज़ोहर की जितनी नमाज़ें क़ज़ा हैं उनमें से सबसे पहली ज़ोहर की नमाज़ पढ़ रहा हूँ। इसी तरह अ़स्र, मग़रिब और इशा में नीयत करे। और अगले रोज़ फिर यही नीयत करे और उससे अगले रोज़ फिर यही नीयत करे।

नमाज़ों के फ़िदये की वसीयत

और अपनी कापी के अन्दर यह लिख दे कि मैं आज की तारीख़ से क़ज़ा-ए-उम्री शुरू कर रहा हूँ। और हर नमाज़ के साथ एक नमाज़ पढ़ रहा हूँ और तीन साल की नमाज़ें मेरे ज़िम्मे क़ज़ा हैं। अगर क़ज़ा नमाज़ें पूरी होने से पहले मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो बाक़ी नमाज़ों का फ़िदया मेरे तर्के (छोड़े हुए माल) में से अदा कर दिया जाए। अगर आपने यह वसीयत नहीं लिखी तो फिर वारिसों के ज़िम्मे यह वाजिब नहीं होगा कि वे आपकी नमाज़ों का फ़िदया ज़रूर अदा करें, क्योंकि यह तुम्हारा माल उस समय तक तुम्हारा है जब तक तुम्हारी आँख खुली हुई है। जब मौत की बीमारी शुरू हो जाती है तो उसके बाद से वह माल तुम्हारा नहीं रहता बल्कि तुम्हारे वारिसों का हो जाता है। और अब तुम्हारे लिए उस माल में सिर्फ़ एक तिहाई की हद तक तसर्रुफ़ करना जायज़ है। एक तिहाई से ज़्यादा तसर्रुफ़ करना जायज़ नहीं। इसलिए अगर तुमने नमाज़ों का फ़िदया अदा करने की वसीयत नहीं की तो अगरचे तुम्हारे वारिसों को लाखों रुपये मिल गये हों तब भी उन पर यह वाजिब नहीं है कि वे तुम्हारी नमाज़ों का फ़िदया अदा करें। हाँ! अगर वे अपनी ख़ुशी से तुम्हारी नमाज़ों का फ़िदया अदा करें तो उनको इख़्तियार है।

इसलिए हर आदमी को यह वसीयत लिखनी चाहिये कि अगर मैं अपनी ज़िन्दगी में अपनी नमाज़ों की कज़ा न कर सका तो मैं वसीयत करता हूँ कि मेरे तर्के (छोड़े हुए माल) से मेरी नमाज़ों का फ़िदया अदा किया जाए। और साथ में नमाज़ें पढ़ना शुरू कर दो। अगर ये दो काम कर लिये तो फिर अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद है कि मान लो अगर नमाज़ें पूरी होने से पहले ही मर गये तो इन्शा-अल्लाह माफ़ी हो जाएगी। लेकिन अगर ये दो काम न किये, न तो वसीयत की और न ही नमाज़ों को अदा करना शुरू किया तो इसका मतलब यह है कि नमाज़ जैसे अहम और ज़रूरी फ़रीज़े से यह आदमी लापरवाह है।

आज ही से अदायगी शुरू कर दो

दुनिया के सारे काम-धन्धे चलते रहेंगे लेकिन हर इनसान के लिए सबसे ज़रूरी काम यह है कि वह यह देखे कि मेरे ज़िम्मे कितनी नमाज़ें बाक़ी हैं। अगर बाक़ी हैं तो आज ही से उनको अदा करना शुरू कर दे, कल पर न टाले। यह शैतान बड़ी अजीब चीज़ है। यह इनसान को इस तरह बहकाता है कि इनसान को पता भी नहीं चलता कि मुझको शैतान बहका रहा है। चुनाँचे यह शैतान मुसलमान के दिल में यह ख़्याल नहीं डालेगा कि नमाज़ कोई ज़रूरी चीज़ नहीं है कि इसको छोड़ दो, इसकी कोई अहमियत नहीं है, बल्कि दिल में यह ख़्याल डालेगा कि नमाज़ वैसे तो बड़ी ज़रूरी चीज़ है लेकिन ऐसे वक़्त में नमाज़ शुरू करो कि उसके बाद पाबन्दी से पढ़ो। इसलिए आज तो ज़रा तबीयत माईल नहीं है कल से नमाज़ शुरू करेंगे या परसों से शुरू करेंगे। क्योंकि अगर तुमने नमाज़ शुरू करके कल को छोड़ दी तो उल्टा तुम पर वबाल होगा। इसलिए अभी मत शुरू करो। पहले फ़लाँ काम निमटा लो और हफ़्ते-दस दिन के बाद शुरू करोगे तो फिर पाबन्दी हो जाएगी। शैतान टालता रहता है। चुनाँचे जिस काम की वजह से नमाज़ को टलाया था जब वह काम हो गया तो अगले हफ़्ते और कोई काम सामने आ जाएगा। इसी तरह शैतान आज को कल पर और कल को परसों पर टलाता ही चला जाएगा और फिर

ज़िन्दगी भर वह "कल" नहीं आती।

आज का काम कल पर मत टलाओ

काम करने का रास्ता यही है कि जिस काम को करना है उसको टलाना नहीं है। उस काम को आज ही से और अभी से और इसी वक़्त से शुरू कर दिया जाए तब तो वह काम हो जाएगा। लेकिन अगर तुमने उसको टला दिया तो उसका अन्जाम यह होगा कि फिर वह काम नहीं हो पाएगा। इसी वजह से एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः जब सुबह का वक़्त हो तो शाम का इन्तिज़ार मत करो, और जब शाम का समय हो तो सुबह का इन्तिज़ार मत करो, और अपने आप को क़ब्र वालों में समझो।

गोया कि मैं आज क़ब्र में जाने वाला हूँ। इसलिए किसी काम को टलाओ नहीं।

सेहत और फ़ुरसत को ग़नीमत जानो

बहरहाल! जब गुज़रे ज़माने की नमाज़ें अदा करनी ही हैं तो फिर इन्तिज़ार किस बात का है? जब यह ज़रूरी काम है तो इसको फ़ौरन करो। अब अल्लाह तआ़ला ने सेहत दे रखी है। क्या पता कल को बीमारी आ जाए और उसकी वजह से नमाज़ अदा न कर सको। अब तो अल्लाह तआ़ला ने फ़राग़त दे रखी है, कल को यह फ़राग़त बाक़ी रहे या न रहे। अभी तो अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ों की तलाफ़ी का जज़्बा दिया हुआ है, कल को यह जज़्बा बाक़ी रहे या न रहे। इसलिए जब नमाज़ों की अदायगी का ख़्याल आया तो उसको टलाओ नहीं, बल्कि अभी से और इसी वक़्त से शुरू कर दो।

क़ज़ा नमाज़ों की अदायगी में सहूलियत

फिर क़ज़ा नमाज़ के लिए अल्लाह तआ़ला ने यह सहूलियत रखी है कि उसको ऐसे वक़्त में भी पढ़ा जा सकता है जिस वक़्त में दूसरी नमाज़ें

नहीं पढ़ी जा सकतीं। जैसे सुबह सादिक़ के बाद से सूरज निकलने तक कोई नफ़िल या सुन्नत पढ़ना जायज़ नहीं। लेकिन क़ज़ा नमाज़ की इस वक़्त भी इजाज़त है। या जैसे अ़स्र की नमाज़ के बाद से सूरज के छुपने तक कोई नफ़िल या सुन्नत नहीं पढ़ सकते, यहाँ तक कि तवाफ़ की दो रकअ़तें भी अ़स्र के बाद पढ़ना जायज़ नहीं। बल्कि अगर किसी ने अ़स्र की नमाज़ के बाद कई तवाफ़ कर लिए हैं तो उसके लिए हुक्म यह है कि वह मग़रिब की नमाज़ के बाद तमाम वाजिब तवाफ़ एक साथ अदा करे। लेकिन क़ज़ा नमाज़ उस वक़्त भी जायज़ है। अल्लाह तआ़ला ने यह सहूलियत और आसानी इसी लिए दी है कि मुसलमान को जब भी अपनी क़ज़ा नमाज़ों को अदा करने का ख़्याल आए तो वह उसी वक़्त से अदा करना शुरू कर दे, उसके लिए कोई रुकावट न हो।

जागते ही पहले फ़ज्र की नमाज़ अदा करो

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया। यह इरशाद याद रखने का है, ख़ास तौर पर उन लोगों को याद रखना चाहिये जिनकी नमाज़ें किसी वजह से क़ज़ा होती रहती हैं। फ़रमाया कि:

तर्जुमाः अगर कोई शख़्स नमाज़ से सो गया और नींद की हालत में नमाज़ का वक़्त गुज़र गया और जब जागा तो वक़्त गुज़र चुका था। या कोई शख़्स नमाज़ पढ़ना भूल गया और उस वक़्त याद आया जब नमाज़ का वक़्त गुज़र चुका था, तो ऐसे शख़्स के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि जैसे ही वह जागे और जिस समय उसको याद आ जाए तो फ़ौरन नमाज़ पढ़ ले। क्योंकि जिस वक़्त उसको नमाज़ पढ़ना याद आया उसके लिए नमाज़ का समय वही है।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा जिल्द 2 पेज 64)

फ़ज्र के लिए जागने का इन्तिज़ाम कर लो

जैसे कोई शख़्स उठने के लिए पूरा इन्तिज़ाम करके सोए। यानी किसी शख़्स को जगाने के लिए कह दिया और घड़ी का अलार्म भी लगा

दिया लेकिन उसके बावजूद वक़्त पर आँख नहीं खुली और उस वक़्त आँख खुली जब सूरज निकल चुका था, तो चूँकि जागने का इन्तिज़ाम करके सोया था इसलिए इन्शा-अल्लाह गुनाह नहीं होगा बशर्तेकि जैसे ही आँख खुले तो उस वक़्त पहला काम यह करे कि वुज़ू करके नमाज़ अदा करे। इसलिए कि उसके लिए यही नमाज़ का समय है। उस समय यह न सोचे कि नमाज़ क़ज़ा तो हो ही गयी चलो बाद में पढ़ लूँगा। अब तो जिस वक़्त भी पढूँगा क़ज़ा ही होगी। बल्कि उसी वक़्त नमाज़ पढ़ ले, उसको आगे न टाले। अगर यह कर लिया तो नमाज़ क़ज़ा करने का गुनाह भी नहीं होगा। और अगर जागने का इन्तिज़ाम नहीं किया था तो फिर गुनाहगार होगा।

अल्लाह तआ़ला ने क़ज़ा नमाज़ के लिए इतनी आसानियाँ रख दीं ताकि बन्दे के ज़िम्मे नमाज़ छोड़ने का वबाल और क़ज़ा का बोझ न रहे। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हम पर बड़े मेहरबान हैं। इसलिए हर मुसलमान को इसकी फ़िक्र करनी चाहिये कि उसके ज़िम्मे नमाज़ का कोई हिसाब बाक़ी न रहे। अल्लाह तआ़ला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

ज़कात का पूरा-पूरा हिसाब करो

दूसरी चीज़ "ज़कात" का बयान फ़रमाया। ज़कात की अहमियत भी नमाज़ के बराबर है। जहाँ क़ुरआन करीम में नमाज़ का हुक्म आया उसी के साथ ज़कात का हुक्म भी आया। फ़रमायाः

तर्जुमाः और नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा करो।

(सूरः ब-क़रः आयत 43)

"ज़कात" का भी यही हुक्म है कि तौबा के मुकम्मल और पूरा होने के लिए यह ज़रूरी है कि आदमी ठीक-ठीक एक-एक पाई का हिसाब करके ज़कात अदा करे। हमारे समाज में ज़कात के बारे में भी बड़ी लापरवाही पाई जाती है। जो मुसलमान अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से ज़कात देने का एहतिमाम करते हैं और ज़कात निकालते हैं वे भी

ज़कात का पूरा हिसाब सही करके बहुत कम निकालते हैं, बल्कि वैसे ही अपने माल का अन्दाज़ा करके ज़कात दे देते हैं। हमारी ताजिर बिरादरी में अन्दाज़ा करके ज़कात निकालने का ज़्यादा रिवाज है, हालाँकि ज़कात निकालने का पूरा सही तरीक़ा यह है कि अपने माल का पूरा सही हिसाब करके फिर ज़कात निकालनी चाहिये।

ज़कात की अहमियत

बहरहाल! तौबा के मुकम्मल और पूरा होने का एक लाज़मी हिस्सा यह है कि माल का पूरा-पूरा हिसाब करके ज़कात निकाली जाए। आपने देखा कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से जाते वक़्त इस बात की नसीहत फ़रमा रहे हैं कि नमाज़ और ज़कात का एहतिमाम करो। ये दो चीज़ें तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के हुक़ूक़ के बारे में ज़िक्र फ़रमाईं।

गुलाम और बाँदियों का ख़्याल रखो

इसके बाद तीसरी चीज़ "बन्दों के हुक़ूक़" में से बयान फ़रमाई इसलिए इरशाद फ़रमायाः

व मा म-लकत् ऐमानुकुम

इसका शाब्दिक अर्थ यह है कि उन चीज़ों का ख़्याल रखो जो तुम्हारे दाहिने हाथ की मिल्कियत हैं। अरबी भाषा में इस शब्द से "गुलाम" और "बाँदी" मुराद होते हैं। कुरआन करीम में भी यह शब्द इसी अर्थ में बार-बार इस्तेमाल हुआ है। पहले ज़माने में गुलाम और बाँदियाँ होती थीं जो इनसान की मिल्कियत होती थीं। इसलिए इस शब्द के ज़ाहिरी मायने यह हैं कि गुलामों और बाँदियों का ख़्याल रखो। उनके साथ अच्छा सुलूक करो और उनके हुक़ूक़ पूरी तरह अदा करो।

"मा म-लकत् ऐमानुकुम" में तमाम मातेहत दाख़िल हैं

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि यहाँ पर लफ़्ज़ "मा म-लकत्

ऐमानुकुम" में सिर्फ़ गुलाम और बाँदियों की बात नहीं है बल्कि इस लफ़्ज़ से हर तरह के मातेहत मुराद हैं। चुनाँचे हज़रत वालिद साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि इसका तर्जुमा "मातेहत लोग" से किया करते थे। इसलिए नौकर, मुलाज़िम सब इसमें दाख़िल हैं। इसी तरह जो शख़्स दूसरे लोगों पर अमीर (हाकिम और सरदार) हो, उस अमीर के मातेहत जितने लोग हों वे सब इसमें दाख़िल हैं। और इसमें औरतें भी दाख़िल हैं, क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने घराने का अमीर मर्द को बनाया है और औरत को उसका मातेहत बनाया है। इसलिए इस शब्द में औरतें भी दाख़िल हैं। बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कितना ठोस लफ़्ज़ बयान फ़रमाया जिसमें तमाम मातेहतों के हुक़ूक़ दाख़िल हो गये।

मातेहत अपना हक नहीं माँग सकता

इस लफ़्ज़ के ज़रिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बता दिया कि जो लोग भी तुम्हारी मातेहती में हैं और जिन पर अल्लाह तआ़ला ने तुमको हाकिम बनाया है, उनके हुक़ूक़ का ख़ास तौर पर ख़्याल रखो। इसकी ताकीद इसलिए फ़रमाई कि जो आदमी बराबर का होता है वह तो किसी भी वक़्त अपने हक़ का मुतालबा कर लेता है। लेकिन जो बेचारा मातेहत है उसके लिए अपने हक़ का मुतालबा करने में रुतबा और दर्जा रुकावट है। कभी-कभी वह अपने हक़ का मुतालबा करने में बेज़बान होता है। इसलिए जब तक तुम्हारे दिल में अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ नहीं होगा और जब तक तुम्हारे दिल में इस बात का ख़्याल नहीं होगा कि मुझे ख़ुद इसके हुक़ूक़ (अधिकारों) का ख़्याल रखना है, उस समय तक उसके हुक़ूक़ ठीक-ठीक अदा नहीं हो सकते।

नौकर को कमतर मत समझो

इसी तरह आजकल जो मुलाज़िमीन और नौकर होते हैं उनको अपने से कमतर और हक़ीर समझना बड़ी जहालत की बात है। अगर तुमने किसी को अपना नौकर रखा है, चाहे वह घर के काम के लिए ही क्यों न रखा हो, सिर्फ़ इतनी बात है कि तुमने उसके साथ एक मुआ़हिदा किया है

वह नौकर मुआहिदे का एक पक्ष है, तुमने उसकी सेवाएँ ख़रीदी हैं, और उसने अपनी सेवाएँ तुम्हें बेची हैं, और उसके बदले में तुमने उसको पैसे और तन्ख़्वाह (वेतन) देना तय किया है। इसलिए तुम भी मुआहिदे के एक फ़रीक़ (पक्ष) हो और वह भी मुआहिदे को एक फ़रीक़ (पक्ष) है।

तुम और तुम्हारा नौकर दर्जे में बराबर हैं

मान लो कि तुम कहीं बाज़ार में किसी दुकान पर जाओ और दुकानदार से कोई सौदा ख़रीदो। तुम उसको पैसे दे रहे हो और दुकानदार सौदा दे रहा है। तो क्या इस लेन-देन करने के नतीजे में तुम्हारा दर्जा ज़्यादा हो गया और दुकानदार का दर्जा कम हो गया? नहीं! बल्कि तुम दोनों बराबर के फ़रीक़ हो। तुम पैसे दे रहे हो और वह सौदा दे रहा है। इसी तरह तुम्हारा मुलाज़िम और तुम्हारा नौकर भी इस मायने में तुम्हारा बराबर का फ़रीक़ है कि तुम पैसे दे रहे हो और वह अपनी सेवाएँ दे रहा है। इसलिए दर्जे के एतिबार से उसको कमतर और हक़ीर समझना और उसको अपमानित नज़रों से देखना किसी तरह भी जायज़ नहीं।

तुम्हारे नौकर तुम्हारे भाई हैं

एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी तुम्हारे ख़ादिम, नौकर और मुलाज़िम सब तुम्हारे भाई हैं। सिर्फ़ इतनी बात है कि अल्लाह तआला ने उनको तुम्हारा मातेहत बना दिया है। इसलिए उनको उसी खाने में से खिलाओ जो तुम खाते हो, और उसी कपड़े में से पहनाओ जो तुम पहनते हो। (बुख़ारी शरीफ़)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मातेहतों के बारे में यह शिक्षा दी। यह नहीं कि वह अगर तुम्हारा नौकर हो गया तो अब वह जानवर हो गया। और फिर उसके साथ जानवरों जैसा सुलूक करो और उसके साथ अपमान भरा व्यवहार करो। अरे वह मुलाज़िम तुम्हारा भाई है, उसके साथ भाईयों जैसा सुलूक करना चाहिये।

अल्लाह तआला को तुम पर ज़्यादा क़ुदरत हासिल है

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम हज़रत अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास से गुज़रे। वह अपने ग़ुलाम पर गुस्सा कर रहे थे और डाँट रहे थे, और क़रीब था कि वह उस ग़ुलाम को मारें। जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको देखा तो उनसे फ़रमायाः

तर्जुमाः जितनी क़ुदरत तुम्हें इस ग़ुलाम पर हासिल है, अल्लाह तआ़ला को उससे ज़्यादा तुम पर क़ुदरत हासिल है। (मुस्लिम शरीफ़)

इसलिए अगर तुम इसके साथ गुस्से का मामला करोगे या इसको मारोगे या इसके साथ ज़्यादती करोगे तो अल्लाह तआ़ला इसका बदला तुम से लेंगे। अबू मसऊद अन्सारी रज़ियल्लाहु अन्हु की शान देखिए कि गुस्सा आ रहा है। गुस्से की हालत में हैं और ग़ुलाम को मारने के क़रीब हैं, और ग़ुलाम को मारने के लिए हाथ उठा लिया है। लेकिन जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक जुमला (वाक्य) सुना कि अल्लाह तआ़ला को तुम पर इससे ज़्यादा क़ुदरत हासिल है जितनी क़ुदरत तुम्हें इस ग़ुलाम पर हासिल है। उसी वक़्त फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! मैंने इस ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया। कहाँ तो गुस्सा आ रहा है, उसको डाँट रहे हैं, और कहाँ उसको बिल्कुल आज़ाद कर दिया।

यह अहमक़ाना ख़्याल है

कभी-कभी हमारे दिमाग़ों में यह अहमक़ाना ख़्याल आ जाता है कि काश! हम भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में होते। याद रखिए! यह अहमक़ाना (मूर्खतापूर्ण) ख़्याल है। क्योंकि अगर उस ज़माने में होते तो मालूम नहीं किस गढ़े में गिरे होते। अल्लाह तआ़ला जिसको जो मुक़ाम देते हैं उसका ज़र्फ़ देखकर देते हैं। यह सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ही का ज़र्फ़ था कि वह सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत का हक़ अदा कर गये। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अपने एक-एक अमल से सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म की इताअ़त और तामील की मिसाल क़ायम करके चले गये। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक-एक

कलिमे पर उनके सारे जज़्बात क़ुरबान थे।

ज़्यादा सज़ा देने पर पकड़ होगी

बहरहाल! नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया से जाते-जाते यह इरशाद फ़रमा गये कि अपने मातेहतों का ख़्याल करो। इसकी वजह यह है कि अल्लाह के हुक़ूक़ की तलाफ़ी तौबा व इस्तिग़फ़ार से हो जाती है, लेकिन अगर तुमने अपने मातेहतों पर ज़ुल्म व ज़्यादती कर ली और वह मातेहत भी बेज़बान है जो तुम्हें कुछ नहीं कह सकता तो उसके साथ ज़्यादती की तलाफ़ी का कोई रास्ता नहीं है।

हदीस शरीफ़ में आता है कि एक बार एक सहाबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा या रसूलल्लाह! अगर मेरा ग़ुलाम कोई ग़लती करे या कोई ग़लत काम करे तो मैं उसको सज़ा दे सकता हूँ या नहीं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि सज़ा तो दे सकते हो मगर इस बात का ख़्याल रखना कि तुम्हारी सज़ा उसकी ग़लती के बराबर होनी चाहिये। इसलिए अगर तुम्हारी सज़ा उस ग़लती से कम रही तो अल्लाह तआला तुम्हारा हक़ उस ग़ुलाम से आख़िरत में दिला देंगे, लेकिन अगर तुम्हारी सज़ा उसकी ग़लती से बढ़ गयी तो क़ियामत के दिन उसका हाथ होगा और तुम्हारा गिरेबान होगा। और अल्लाह तआला उस ज़्यादती का बदला तुमसे दिलवाएँगे। यह सुनकर वह सहाबी चीख़ पड़े और कहा कि या रसूलल्लाह! कहीं ऐसा न हो कि मुझसे ज़्यादती हो गयी हो। आपने फ़रमाया कि क्या क़ुरआन करीम में तुमने यह आयत नहीं पढ़ी?

तर्जुमा: जो शख़्स एक ज़र्रे के बराबर भी भलाई करेगा वह आख़िरत में अपने सामने उसको देखेगा। और जो शख़्स एक ज़र्रे के बराबर बुराई करेगा आख़िरत में अपने सामने उसको देखेगा। (सूरः ज़िल्ज़ाल आयत 7,8)

इसलिए अपने मातेहत को सज़ा तो दो लेकिन तौल कर दो। जितना उसका क़सूर है कहीं उससे ज़्यादा तो सज़ा नहीं दे रहे हो? उन सहाबी ने फ़रमाया कि या रसूलल्लाह! यह तो बड़ा मुश्किल काम है, मैं कहाँ से

बराबरी का पैमाना लाऊँगा। इसलिए आसान रास्ता यह है कि मैं अपने गुलाम को आज़ाद ही कर देता हूँ। चुनाँचे उस गुलाम को आज़ाद कर दिया। अल्लाह तआला ने इन मातेहतों के इतने हुक़ूक़ रखे हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरबियत का अन्दाज़

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना तय्यिबा तशरीफ़ लाए तो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के वालिद हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनकी वालिदा हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा, इन दोनों ने आपस में मश्विरा किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई ख़ादिम नहीं है, हम क्यों न अपने बेटे को आपकी ख़िदमत में पेश कर दें कि यह आपकी ख़िदमत किया करेगा। इसलिए ये दोनों मियाँ-बीवी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु को लेकर हाज़िर हुए। उस वक़्त यह बच्चे थे। उन्होंने आकर अर्ज़ किया कि यह हमारा लड़का बड़ा अक़्लमन्द और होशियार है। हमारा दिल चाहता है कि यह आपकी ख़िदमत में रहे और आपके लिए बतौर ख़ादिम के काम करे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बूल फ़रमा लिया। चुनाँचे उनके माँ-बाप उनको छोड़कर चले गये। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु दस साल तक हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रहे। इस मुद्दत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके साथ क्या रवैया रखा? इसके बारे में वह ख़ुद फ़रमाते हैं कि:

मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दस साल ख़िदमत की लेकिन इस अर्से में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे उफ़ तक नहीं कहा और न डाँटा न डप्टा, न कभी मुझसे यह फ़रमाया कि यह काम क्यों किया? और न कभी यह फ़रमाया कि यह काम क्यों नहीं किया? यह मामूली बात नहीं। कहने को तो आसान है लेकिन जब कोई इस सुन्नत पर अमल करने का इरादा करे तो उस वक़्त उसको पता चले

कि इस सुन्नत पर अ़मल करने के लिए कितना दिल-गुर्दा चाहिये। हम आसान-आसान सुन्नतों पर तो अ़मल कर लेते हैं लेकिन यह भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है। अल्लाह तआ़ला हमें इन सब पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन।

एक बार का वाक़िआ़

ख़ुद हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपना वाक़िआ़ बयान करते हैं कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे किसी काम के लिए भेजा कि फ़लाँ काम कर आओ। मैं घर से निकला तो बाहर कुछ खेल-तमाशा हो रहा था। मैं उस खेल-तमाशे में लग गया और जिस काम के लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुझे भेजा था वह भूल गया। अब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस इन्तिज़ार में थे कि मैं वापस आकर बताऊँ कि उस काम का क्या हुआ? जब काफ़ी देर गुज़र गयी और मैं वापस नहीं पहुँचा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और जाकर वह काम ख़ुद कर लिया जिसके लिए मुझे भेजा था। आप वह काम करके वापस आए तो आपने देखा कि मैं बच्चों के साथ खेल रहा हूँ। जब मेरी नज़र आप पर पड़ी तो मुझे ख़्याल आया कि मुझसे ग़लती हो गयी। आपने मुझे काम से भेजा था और मैं खेल में लग गया। मुझे सदमा भी हुआ और फ़िक्र भी हुई कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नाराज़ होंगे। चुनाँचे मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास जाकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब मैं घर से बाहर निकला तो मैं वह काम करना भूल गया और बच्चों के साथ खेल में लग गया। आपने फ़रमाया कि कोई बात नहीं मैं वह काम ख़ुद कर आया। आपने मुझको न डाँटा न डप्टा और न कोई और सज़ा दी।

अच्छे सुलूक के नतीजे में बिगाड़ नहीं होता

आज हम लोग तावीलें घड़ लेते हैं कि अगर हम अपने नौकर और अपने ख़ादिम के साथ यह तरीक़ा अपनाएँगे तो वह सरफिरा हो जाएगा। वह हमारे सर चढ़ जाएगा वग़ैरह। यह देखिए कि आख़िर यह ख़्याल हुज़ूर

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी तो आता होगा कि अगर मैं सख़्ती नहीं करूँगा तो यह सर्कश हो जाएगा लेकिन आप जानते थे कि जिस अच्छे सुलूक का मामला मैं उसके साथ कर रहा हूँ उसके अन्दर अदब सीखने और तालीम की सलाहियत मौजूद है। चुनाँचे उस दस साल के अर्से में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के अन्दर कोई बिगाड़ पैदा नहीं हुआ। बहरहाल! यह वह बेहतरीन सुलूक है जिसकी मिसाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ायम फ़रमाई है। और आपने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को जिसकी ताकीद फ़रमायी।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को तंबीह

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लेजा रहे थे। आपने हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि वह अपने गुलाम को डाँट रहे हैं और वह गुलाम हब्शी था। इसलिए उसको यह कह रहे थे कि ऐ हब्शी! तू यह कर रहा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब ये अलफ़ाज़ सुने तो आपने फ़रमाया ऐ अबूज़र! तुम्हारे अन्दर अभी तक जाहिलीयत (इस्लाम से पहले ज़माने) की ख़ू-बू बाक़ी है, इसलिए तुम अपने गुलाम को हब्शी कहकर ख़िताब कर रहे हो। हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर रो पड़े और फिर बाद में बार-बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस जुमले को याद किया करते थे कि आपने मेरे बारे में यह जुमला फ़रमाया था।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का गुलाम पर नाराज़ होना

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार अपने गुलाम पर नाराज़ हो रहे थे और लानत का कलिमा कह रहे थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह जुमला सुना तो फ़रमाया कि:

तर्जुमाः सिद्दीक़ भी बनते हो और लानत भी करते हो। काबा के रब की क़सम! ये दोनों बातें एक साथ जमा नहीं हो सकतीं। अगर सिद्दीक़ हो

तो लानत नहीं कर सकते और अगर लानत कर रहे हो तो सिद्दीक़ नहीं हो सकते।

यह सुनते ही हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु काँप गये और जिस गुलाम को लानत कर रहे थे उसको तो आज़ाद किया ही होगा उसके अलावा और भी बहुत-से गुलाम उस दिन आज़ाद कर दिये।

मातेहतों के साथ तौहीन का मामला न करो

बहरहाल! अपने गुलामों, अपने मातेहतों और अपने नौकरों के साथ मामला करने के बारे में हमारे ऊपर ग़फ़लत तारी है कि जब चाहा उनको बुरा-भला कह दिया। जब चाहा उनको गाली दे दी। या उनको ऐसा कलिमा कह दिया जो दिल तोड़ने वाला हो। या उनको अपमान करने और तौहीन के अन्दाज़ में डाँट दिया, यह सब मना है। इसलिए अगर तुम्हारा कोई नौकर है तो उसको भाईयों की तरह रखो। भाईयों जैसा सुलूक करो। उसके बारे में यह सोचो कि यह भी तुम्हारी तरह इनसान है। इसके सीने में भी दिल धड़कता है। इसके दिल में भी ख़्वाहिशें पैदा होती हैं। इसके दिल में भी जज़्बात और ख़्यालात हैं। इसकी भी ज़रूरतें और हाजतें हैं। यह तो कोई बात न हुई कि नौकर के साथ जानवरों जैसा सुलूक करो।

यह पश्चिमी तहज़ीब की लानत है

अमीर (सरदार) और मामूर (मातेहत) के दरमियान, हाकिम और महकूम के दरमियान, अफ़सर और मातेहत के दरमियान जो दीवारें खड़ी की हैं, वह पश्चिमी तहज़ीब (सभ्यता) ने खड़ी की हैं। जिसके नतीजे में आज अफ़सर का मामला अपने मातेहत के साथ जानवरों जैसा होकर रह गया है। आज इसके असरात हमारे समाज में भी फैल रहे हैं।

ड्राईवर के साथ सुलूक

आज ड्राईवर के साथ हमारे समाज में जानवरों जैसा सुलूक होता है। हाँ! अरब वालों के अन्दर अब तक पुराने इस्लामी समाज की कुछ झलकियाँ बाक़ी हैं। वे लोग अपने ड्राईवर को भाईयों जैसा दर्जा देते हैं।

चुनाँचे गाड़ी में सफ़र करके जब किसी जगह पर उतरेंगे तो उस ड्राईवर से कहेंगे "आप का शुक्रिया कि आपने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया"। जब कहीं खाना खायेंगे तो ड्राईवर को साथ बिठाकर खाना खिलाएँगे। उसके साथ भाईयों जैसा बर्ताव करेंगे। यह सब पुराने इस्लामी समाज की झलक है।

हमारे यहाँ यह रिवाज है कि ड्राईवर को साथ बिठाकर नहीं खिलाते। खुद घर में बैठकर खा लेते हैं और वह बाहर गाड़ी में बैठा होता है। उसके खाने की कोई परवाह नहीं होती। ये सब बातें हमारे अन्दर ग़ैर-इस्लामी समाज की आ गयी हैं। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत वह है जो इस हदीस में बयान हुई और सहाबा किराम के इन वाकिआ़त से साबित होती है जो मैंने बयान किए।

अल्लाह तआ़ला हम सबको इसके समझने और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

यह दुनिया खेल-तमाशा है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا o اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا o (سورۃالحدید آیت ٢٠)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ، وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ، وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ o

तमहीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और प्यारे भाईयो! इस आयत में अल्लाह तआला ने दुनियावी ज़िन्दगी की एक अजीब व ग़रीब हक़ीक़त बयान फ़रमाई है। लोग जो सुबह से लेकर शाम तक और शाम से लेकर सुबह तक इसी दुनिया की दौड़-धूप में लगे हुए हैं और इसी सोच-विचार में सारा वक़्त लगा रहे हैं कि किसी तरह ज़्यादा से ज़्यादा दुनिया कमा लो। किसी तरह ज़्यादा से ज़्यादा पैसे हासिल कर लो। किसी तरह ज़्यादा से ज़्यादा राहत मिल जाए। इस आयत में अल्लाह तआला ने दुनिया की हक़ीक़त बयान फ़रमा दी है

कि तुम दिन-रात जिस चीज़ के पीछे लगे हुए हो उसकी हक़ीक़त क्या है?

बच्चों का खेल है यह दुनिया मेरे आगे

इसलिए फ़रमाया कि यह दुनियावी ज़िन्दगी खेल-कूद है और ज़ीनत और सजावट का सामान है। और आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़्र (गर्व) करना और माल-दौलत में और औलाद में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करना, सारी दुनियावी ज़िन्दगी का हासिल बस यही है। इस आयते करीमा में इस तरफ़ इशारा फ़रमाया गया कि इस दुनियावी ज़िन्दगी की हक़ीक़त का अगर तुम जायज़ा लेकर देखोगे तो यह नज़र आएगा कि इनसान इस दुनिया की ज़िन्दगी में मुख़्तलिफ़ ज़मानों (विभिन्न दौरों) से गुज़रता है। एक ज़माने में किसी एक चीज़ से दिल लगाता है, वही चीज़ उसको जान से ज़्यादा प्यारी होती है, और उसी पर फ़रेफ़्ता होता है। उसके मिलने से ख़ुश होता है और उसके निकल जाने से उसको तकलीफ़ और सदमा होता है। लेकिन जब वह उस दौर से गुज़र कर दूसरे दौर में दाख़िल होता है तो उस समय उसी चीज़ पर जिससे पहले दिल लगाया था, हंसता है कि अफ़सोस! मैंने किस चीज़ पर दिल लगाया था और उसको हक़ीर व ज़लील समझने लगता है। और अब नयी चीज़ों से दिल लगाता है। और फिर जब यह दूसरा दौर गुज़र जाता है और वह इनसान तीसरे दौर में दाख़िल हो जाता है तो जिन चीज़ों से पहले दिल लगाया था उन पर से अब दिल हट गया और तीसरी चीज़ के साथ दिल लगा लिया और इस पर फ़रेफ़्ता होना शुरू कर दिया और उस वक़्त वह पिछली बातों को सोचकर अपनी बेवक़ूफ़ी पर हंसता है कि मैंने किसके साथ दिल लगाया था।

ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ दौर

अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में पूरी इनसानी ज़िन्दगी के इन मर्हलों (दौर और ज़मानों) को बयान फ़रमाया है। पहले जब इनसान इस दुनिया में आता है तो जब तक वह छोटा बच्चा होता है उसकी सारी कायनात सारे शौक़ सारे अरमान खेलकूद से जुड़े होते हैं।

और फिर खेलकूद की भी दो किस्में होती हैं- एक खेल वह होता है जिसमें हार-जीत होती है। एक हार गया दूसरा जीत गया। दूसरा खेल वह होता है जो बिल्कुल बे-मकसद होता है, उसमें न हार होती है और न जीत होती है।

पहला दौर- बे-मकसद खेल

शुरू में जब बच्चा माँ की गोद में होता है उस वक़्त उसके सारे शौक ऐसे खेल से जुड़े होते हैं जिसका कोई मकसद नहीं होता। जैसे अगर उसके हाथ में आपने एक झुनझुना पकड़ा दिया, अब वह उसी से खेल रहा है। उसमें हार-जीत के कोई मायने नहीं। इस खेल का कोई मक़सद नहीं, और वह बच्चा उसी झुनझुने को अपनी सारी कायनात समझता है। अब अगर कोई उस बच्चे के हाथ से वह झुनझुना छीन ले तो वह रोना शुरू कर देगा और वह यह समझेगा कि मेरी सारी दुनिया लुट गयी। इसलिए कि उस बच्चे के सारे शौक़ और सारे अरमान उस झुनझुने से जुड़े हुए हैं।

दूसरा दौर- बा-मकसद खेल

उसके बाद जब बच्चा थोड़ बड़ा हुआ और उसको थोड़ी समझ आनी शुरू हुई तो वही झुनझुना जो उसकी सारी कायनात थी अब वह उसकी नज़रों में बे-हक़ीक़त हो गया और उससे नफ़रत हो गयी। उसको देखने को भी दिल नहीं चाहता। अब अगर कोई शख़्स बाज़ार से उसके लिए एक झुनझुना ख़रीद लाए और उससे कहे कि मैं तेरे लिए यह झुनझुना लाया हूँ तो अब उस बच्चे को न सिर्फ़ यह कि खुशी नहीं होगी बल्कि उस लाने वाले पर गुस्सा आएगा कि मैं क्या दूध पीता बच्चा हूँ जो तुम मेरे लिये झुनझुना ले आए। और अब वही बच्चा अपनी पहली ज़िन्दगी पर हंसेगा कि मैं किस बे-हकीकत चीज़ से दिल लगाए हुए था।

अब उस बच्चे की तबीयत ऐसे खेलों की तरफ़ माईल हो गयी जिसके कोई मायने होते हैं और जिसमें हार-जीत होती है। और उसमें

उसका दिल लगा हुआ है। दिन-रात का सारा समय उसमें ख़र्च कर रहा है। कोई शख़्स उसको खेलने से मना करे तो उस पर उसको गुस्सा आता है कि यह क्यों मना कर रहा है।

तीसरा दौर- सजने-संवरने की फ़िक्र

उसके बाद जब वह बच्चा और बड़ा हुआ और जवानी का दौर आ गया तो अब वे खेल जो बचपन में पसन्द थे, जैसे गुल्ली-डन्डा, आँख-मिचोली वग़ैरह वे सब उसकी नज़रों में बे-हक़ीक़त हो गये। अब अगर कोई बच्चा उसको आँख-मिचोली खेलने के लिए बुलाए तो वह इसको अपनी तौहीन समझेगा और यह कहेगा कि मैं क्या तुम्हारी तरह छोटा बच्चा हूँ जो तुम मुझे आँख-मिचोली खेलने के लिए बुला रहे हो। यानी कि अब तक जिन खेलों के साथ दिलचस्पी थी वह अब ख़त्म हो गयी। अब जवानी में खेलकूद के बजाए सजने-संवरने से दिलचस्पी हो गयी। जैसे यह कि कपड़े आला दर्जे के पहनूँ। फ़ैशन के मुताबिक़ हों। मेरा जिस्म, मेरा लिबास, मेरे सर के बाल, मेरे जूते, ये सब ज़ीनत वाले होने चाहियें ताकि जब लोग मेरी तरफ़ देखें तो देखकर खुश हो जाएँ।

अब जवानी के दौर में बनने-संवरने से दिलचस्पी हो गयी। जवानी से पहले इससे कोई दिलचस्पी नहीं थी बल्कि उस वक़्त तो यह हालत थी कि अगर कपड़े मैले हो रहे हैं तो हुआ करें, टोपी टेढ़ी हो रही है तो हुआ करे, बस उसको तो अपने खेल से मतलब है। लेकिन अब यह हाल है कि अगर खेल भी रहा है तो इसका ख़्याल भी साथ लगा हुआ है कि कपड़े ख़राब न हो जाएँ। कहीं उनकी प्रेस ख़राब न हो जाए। और हर समय अपने शरीर और अपने लिबास को बनाने और संवारने में लगा हुआ है। यह जवानी का दौर था।

चौथा दौर- कैरियर बनाने की फ़िक्र

उसके बाद जब वह और बड़ा हो गया और अब जवानी अधेड़पन में दाख़िल होने लगी और पैंतीस साल या चालीस साल की उम्र हो गयी तो अब बनने-संवरने का दौर ख़त्म हो गया। अब तक तो यह ख़्याल होता

था कि कपड़ों पर शिकन न आए। अब इस तरफ़ ध्यान बाक़ी नहीं रहा। कपड़ों पर शिकन आ जाए और उनकी क्रीज़ टूट जाए तो उसकी परवाह नहीं लेकिन इस दौर में फ़ख़्र (गर्व और बड़ाई) सरमाया जमा करने की फ़िक्र लग गयी जैसे यह कि तालीम हासिल करके फ़लाँ डिग्री हासिल कर लूँ और फ़लाँ से आगे निकल जाऊँ। फ़लाँ ओहदा मिल जाए। फ़लाँ पद हासिल हो जाए और लोगों में मेरी शोहरत हो जाए वग़ैरह। और इन चीज़ों के तसव्वुर में लगकर सजने-संवरने का ख़्याल दिल से निकल गया इसलिए कि अब अपने बच्चे भी हो गये, कोई बच्चा सर पर चढ़ रहा है, कोई गोद में बैठा है, कपड़े ख़राब हो रहे हैं लेकिन इसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं है। अब सारा ध्यान इस तरफ़ है कि मेरा कैरियर बन जाए।

पाँचवा दौर– दौलत जमा करने की फ़िक्र

और फिर जब जवानी का दौर गुज़रने के बाद बुढ़ापे का दौर आया तो अब ज़्यादा फ़िक्र इस बात की है कि माल किसी तरह जमा हो जाए और मैं माल और औलाद की तायदाद में दूसरों से आगे निकल जाऊँ। इसलिए कि एक ज़माना वह था जब लोग औलाद की कसरत पर गर्व किया करते थे और इस फ़िक्र में रहते थे कि जितनी औलाद ज़्यादा हो उतना ही अच्छा है। और अब ज़माना बदल गया है। अब औलाद के ज़्यादा होने पर इतना गर्व नहीं किया जाता लेकिन अब इस बात पर गर्व किया जाता है कि मेरा फ़लाँ बेटा अमेरिका में तालीम हासिल कर रहा है। फ़लाँ बेटा फ़लाँ इंगलिश मीडियम स्कूल में तालीम हासिल कर रहा है। फ़लाँ बेटा यह नौकरी कर रहा है और फ़लाँ बेटा इस ओहदे पर पहुँच गया है।

पिछले मर्हले से बेज़ारी

आपने देखा कि जब इनसान एक मर्हले (दौर) से दूसरे मर्हले (दौर) में दाख़िल होता है तो वह पिछले मर्हले को बेकार समझता है। वही सजना-संवरना जो जवानी में बड़ा पसन्द था, लेकिन बुढ़ापे में पहुँचने के बाद न टोपी का ख़्याल है न कपड़ों का ख़्याल है, बल्कि जब नौजवानों

को सिंघार-पिटार में वक़्त लगाते हुए देखते हैं तो कहते हैं कि तुम इसमें अपना वक़्त बेकार कर रहे हो और यह भूल जाते हैं कि जवानी के दौर में खुद भी इन कामों में वक़्त लगाकर आए हैं, लेकिन अब इसको बुरा समझ रहे हैं। अब उनके दिल में इस काम की कोई अहमियत नहीं है। इसलिए हर नये मर्हले में पहुँचने के बाद इनसान पिछले मर्हले से बेज़ार हो जाता है और उस पर हंसता है, और उसको हक़ीर और बे-हक़ीक़त समझता है।

छठा दौर- आँख बन्द होने के बाद

इस आयत के ज़रिये अल्लाह तआ़ला यह समझा रहे हैं कि तुम इस मर्हले पर आकर रुक गए हालाँकि आँख बन्द होने और क़ब्र में पहुँचने के बाद आख़िरत की ज़िन्दगी का मर्हला शुरू होने वाला है। उस वक़्त दुनिया की सारी चीज़ें जिन पर तुम दुनिया में आपस में लड़ते और मरते थे। जिन पर फ़रेफ़्ता थे। ये सब चीज़ें इसी तरह बे-हक़ीक़त नज़र आएँगी जिस तरह छोटा बच्चा जिसको झुनझुना बड़ा अ़ज़ीज़ था लेकिन बाद में वह बे-हक़ीक़त हो गया। ऐसे ही आख़िरत में पहुँचने के बाद दुनिया की ये चीज़ें बे-हक़ीक़त नज़र आएँगी। लेकिन चूँकि अभी आँखों पर पर्दे पड़े हुए हैं इसलिए जिस मर्हले से वह गुज़र रहा होता है उस मर्हले की दिलचस्पी को अपना सब कुछ समझे हुए होता है, और उस मर्हले से आगे उसकी निगाह नहीं होती। इसलिए वह दुनियावी ज़िन्दगी से फ़रेब और धोखा खा जाता है।

दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल

अल्लाह तआ़ला इस आयत में इनसानी ज़िन्दगी के मर्हलों को बयान फ़रमा कर आगे दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल बयान फ़रमाते हैं:

तर्जुमाः इस दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल ऐसी है जैसे अल्लाह तआ़ला ने आसमान से बारिश बरसाई और उस बारिश के नतीजे में सूखी पड़ी हुई ज़मीन पर हरियाली उग आयी और सब्ज़ी और तरकारियाँ पैदा हो गईं, और खेत हरे-भरे हो गए। वे हरे-भरे खेत किसानों को बहुत

पसन्द आते हैं, लेकिन कुछ समय के बाद वही सब्ज़ खेती ज़र्द पड़ जाती है और ज़र्द पड़ने के बाद वह खेती आख़िर में भूसा बन जाती है और बे-हकीकत हो जाती है। (सूरः हदीद आयत 20)

यही हाल इस दुनियावी ज़िन्दगी का है। यहाँ की हर चीज़ शुरू में बड़ी सुन्दर और आकर्षक नज़र आती है। खेल भी अच्छा लग रहा है। बनना-संवरना भी अच्छा लग रहा है। गर्व करना भी अच्छा लग रहा है। माल व दौलत भी अच्छा लग रहा है। लेकिन आख़िरत में जब तुम अल्लाह तआला के पास पहुँचोगे तो यह सब भूसा नज़र आएगा।

माँ का पेट उसके लिए कायनात है

मशहूर किताब 'मस्नवी शरीफ़' में हज़रत मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि ने कुरआन करीम की इन्हीं बातों को और तफ़सील से बयान फ़रमाया है। इसलिए वह फ़रमाते हैं कि एक बच्चा जो माँ के पेट में होता है। उस बच्चे में चार माह के बाद रूह पड़ जाती है और वह एक ज़िन्दा वजूद बन जाता है। इसका मतलब यह है कि उसके पास दिल भी है और उसके पास दिमाग़ भी है और उसके अन्दर अपनी बिसात की हद तक समझ-बूझ भी है। उस समय उस बच्चे से अगर कोई इस दुनिया की हकीकत के बारे में सवाल करे तो वह बच्चा यह कहेगा कि मेरी सारी कायनात यही माँ का पेट है। उसकी पूरी दुनिया एक-डेढ़ फिट की जगह में है, जहाँ पर उसकी ग़िज़ा ख़ून है। वही ग़िज़ा उसके लिए लज़ीज़ और मज़ेदार बनी हुई है।

बच्चे को इन बातों पर यकीन नहीं आएगा

अगर कोई आदमी उस बच्चे से कहे कि जिस जगह को तुम अपनी सारी दुनिया और सारी कायनात समझ रहे हो, यह तो एक गन्दी जगह है और नजिस और नापाक जगह है। और यह इतनी छोटी जगह है कि असली दुनिया तुम्हारी इस दुनिया से लाखों अरबों और खरबों गुना ज़्यादा बड़ी है। और एक समय के बाद तुम उस असल दुनिया में जाने वाले हो।

यह बात सुनकर वह बच्चा कभी इन बातों पर यकीन करने को

तैयार नहीं होगा। इसलिए कि उसने यह दुनिया देखी नहीं है और न उसके ख़्याल में यह दुनिया आ सकती है। क्योंकि उसने तो सिर्फ़ माँ के पेट की दुनिया देखी है और उसी को वह अपना सब कुछ समझता है।

यह ख़ून मेरी ख़ुराक है

इसी तरह अगर उस बच्चे को कोई आदमी यह कहे कि यह ख़ून जो तुम पी रहे हो यह बहुत गन्दी चीज़ है और नापाक है। और जब तुम माँ के पेट से बाहर निकलोगे तो तुम ख़ुद भी इससे नफ़रत करोगे और यह ख़ून तुम्हें पसन्द नहीं आएगा, तो वह बच्चा उस आदमी की यह बात कभी मानने के लिए तैयार नहीं होगा, बल्कि वह यह कहेगा कि इस ख़ून से तो मेरी ज़िन्दगी जुड़ी हुई है। अगर मैं यह न पियूँ तो मर जाऊँ। इसी के अन्दर मुझे मज़ा आता है। यही मेरी ख़ुराक है और इसी से मेरी ज़िन्दगी है।

बहरहाल! ये बातें उस बच्चे की समझ में नहीं आएँगी और कभी भी तुम्हारी बात मानने के लिए तैयार नहीं होगा।

दुनिया में आने के बाद यक़ीन आना

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि माँ का पेट जो एक गन्दी जगह है उससे यह इनसान जब बाहर आता है तो घर छोड़ने के सदमे में रोते हुए आता है। इसलिए कि उसी माँ के पेट से दिल लगाया हुआ था और उसी को अपना सब कुछ समझा हुआ था। अब जब दुनिया में आ गया तो हैरान हो रहा है कि मालूम नहीं मैं कहाँ पहुँच गया। बाद में जब आँखें खुलीं तो पता चला कि माँ के पेट के बारे में कहने वाला मुझसे जो कुछ कह रहा था वह सही कह रहा था और हक़ीक़त में वह जगह रहने के काबिल नहीं थी और असल में तो दुनिया यह है जिसके अन्दर मैं अब आया हूँ। यह दुनिया तो बड़ी शानदार, बड़ी मज़ेदार और बड़ी पुर-लुत्फ़ है। यह तो बड़ी आकर्षक और बड़ी सुन्दर है।

धीरे-धीरे हर चीज़ की सच्चाई खुल जाएगी

अब पैदा होने के बाद जिस कमरे में वह रह रहा था उसी कमरे को सब कुछ समझ रहा था। अगर उस बच्चे से कोई यह कहे कि उस कमरे की तो कोई हक़ीक़त नहीं है। उस कमरे के बाहर बहुत बड़ा मकान है और उस मकान के बाहर बहुत बड़ा शहर है और उस शहर के पीछे बहुत बड़ा मुल्क है, और मुल्क के पीछे बहुत बड़ी दुनिया है और यह दुनिया चौबीस हज़ार आठ सौ वर्ग मील में फैली हुई है। चूँकि उस बच्चे ने अब तक दुनिया का केवल एक कमरा देखा था इसलिए चौबीस हज़ार आठ सौ वर्ग मील में फैली हुई यह दुनिया उसके ख़्याल में नहीं आ सकती। लेकिन जब वह उस कमरे से बाहर निकलेगा तो उस समय उसको नज़र आएगा कि इस कमरे जैसे और बहुत-से कमरे भी हैं। और जब वह उस घर से निकलेगा तो उसको शहर नज़र आएगा। और जब शहर से निकलेगा तो उसको मुल्क नज़र आएगा और मुल्क से निकलेगा तो उसको दुनिया नज़र आएगी।

याद रखिए! इनसान की अक़्ल अपने मुशाहदे (यानी अपने देखने) की सीमा के अन्दर सीमित होकर सोचती है और केवल मुशाहदे के अन्दर आने वाली चीज़ों को ही अपना सब कुछ समझ रखा है। मुशाहदे से बाहर की चीज़ें इस अक़्ल के अन्दर नहीं आतीं।

एक बुढ़िया का वाक़िआ

मैं एक बार हिन्दुस्तान गया। वहाँ पर अपने एक रिश्तेदार से मिलने के लिए एक दूर-दराज़ इलाक़े के एक गाँव में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। वह गाँव बहुत छोटा था और शहर से बहुत दूर स्थित था। उस गाँव में एक बूढ़ी औरत थी। उस औरत को जब पता चला कि कराची से कोई आदमी आया है तो वह औरत मुझसे मिलने के लिए आ गई और मुझसे पूछा तुम कराची से आए हो? मैंने कहा, जी हाँ! कराची से आया हूँ। उसने कहा कि तुम मेरे बेटे हुसैन को जानते हो? मैंने कहा कि मैं तो नहीं जानता। वह कहने लगी कि तुम कराची में रहते हो और हुसैन को नहीं

जानते? वह बुढ़िया बेचारी यह समझ रही थी कि जिस तरह इस गाँव में हर आदमी दूसरे आदमी को जानता है इसी तरह कराची में रहने वाला भी हर आदमी दूसरे आदमी को जानता होगा। मैंने उस बुढ़िया को बताया कि कराची बहुत बड़ा शहर है और उस शहर में बहुत सारे लोग रहते हैं। वहाँ एक आदमी दूसरे आदमी को नहीं जानता। लेकिन आख़िर वक़्त तक बुढ़िया को यह बात समझ में नहीं आई कि एक शहर में रहते हुए दो आदमी एक-दूसरे को क्यों नहीं जानते? मैंने समझाया कि आपके इस गाँव से मेरठ तक जितना फ़ासला है कराची इतना बड़ा एक शहर है और उसमें तीस-पैंतीस लाख आदमी रहते हैं। (उस समय इतनी ही आबादी थी) लेकिन यह बात उस बुढ़िया की समझ में नहीं आई क्योंकि उसने सारी उम्र उस छोटे-से गाँव में गुज़ारी थी। उस गाँव से बाहर की किसी चीज़ को मानने और समझने को वह तैयार नहीं थी।

उस बुढ़िया की ख़ता नहीं

मुझे ख़्याल आया कि इस बेचारी की कोई ख़ता नहीं। यही काम हम भी करते हैं। हमने ज़रा-सा मुल्क देख लिया, ज़रा-सी दुनिया देख ली और अब इसी दुनिया को हम सब कुछ समझे हुए हैं जबकि अल्लाह तआ़ला के पैग़म्बर हमें यह बताते हैं कि तुमने इस दुनिया में जो दिल लगा रखा है और इसी दुनिया की सीमाओं में जो चक्कर लगा रहे हो इसके आगे भी एक और कायनात है, जिसके बारे में कुरआन करीम का इरशाद है:

तर्जुमाः ऐसी जन्नत मिलने वाली है जिसकी चौड़ाई तमाम ज़मीन व आसमान के बराबर है। (सूरः आलि इमरान आयत 133)

हदीस शरीफ़ में आता है कि जो आदमी सबसे आख़िर में जन्नत में दाख़िल होगा उससे अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि जाओ मैंने तुम्हें पूरी दुनिया की ज़मीन से दस गुना ज़्यादा जन्नत दी। वह आदमी कहेगा कि ऐ परवर्दिगार! आप रब्बुल-आ़लमीन हैं और मुझसे मज़ाक़ फ़रमा रहे हैं? इसलिए कि वह बेचारा अभी दुनिया ही की हदों के अन्दर सीमित था।

उसके ख़्याल में यह बात नहीं आ सकती थी कि एक छोटे-से जन्नती को इस दुनिया से दस गुना ज़्यादा जन्नत मिल सकती है।

बहरहाल! अल्लाह तआला फ़रमाएँगे कि मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। सचमुच तुम्हें दस गुना ज़्यादा जन्नत दी है और तमाम जन्नत वालों के मुक़ाबले में सबसे कम जगह तुम्हें दी जा रही है।

हमारे दिमाग़ सिमित कर दिए गए

आज की आधुनिक शिक्षा ने हमारे दिमाग़ इतने सीमित कर दिए हैं कि जब ये बातें हमारे सामने कही जाती हैं तो हम जवाब में यह कहते हैं कि यह समझ में आने वाली बात नहीं। अरे! ये बातें उसी तरह समझ में नहीं आ रही हैं जिस तरह अगर माँ के पेट में बच्चे से यह कहा जाता है कि नौ माह बाद जिस कमरे में तुम जाने वाले हो वह तुम्हारी इस दुनिया से सत्तर गुना ज़्यादा बड़ा होगा। जिस तरह वह बात उस बच्चे की अक़्ल में नहीं आ सकती उसी तरह यह बात आज हमारी अक़्ल में नहीं आ रही है। लेकिन यह सच्चाई है और देखने वालों ने देखी है। देखने वाले मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जिन्होंने अपनी आँखों से देखकर इसकी ख़बर हमें दी है।

दुनियावी ज़िन्दगी धोखा है

बहरहाल! कुरआन करीम इस तरफ़ ध्यान दिला रहा है कि जिन चीज़ों से तुम दिल लगाए बैठे हो उनको तुम अपनी आँखों से देख रहे हो कि जो चीज़ें एक मर्हले में पसन्द और प्यारी थीं वही चीज़ें अगले मर्हले में तुम्हें क़ाबिले नफ़रत मालूम होती हैं। इसलिए कुरआन करीम ने फ़रमायाः

"दुनिया की ज़िन्दगी धोखे का सामान है"। (सूरः हदीद आयत 20)

हर वक़्त धोखा खा रहे हो। बचपन में धोखा खाया, जवानी में धोखा खाया, बुढ़ापे में धोखा खाया और अब भी पैग़म्बरों की बात नहीं मानोगे तो धोखा खाओगे। इसलिए इस दुनिया में दिल न लगाना।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि के बचपन का वाक़िआ

मेरे वालिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि अपने बचपन का एक क़िस्सा सुनाया करते थे कि जब मैं छोटा था तो अपने चचाज़ाद भाई के साथ खेला करता था। उस ज़माने में ऐसे खेल होते थे जिनमें ख़र्च कुछ नहीं होता था लेकिन वर्ज़िश पूरी होती थी। चुनाँचे पेड़ों से "सरकण्डे" तोड़ लेते और फिर उनको किसी ऊँची जगह से नीचे की तरफ़ लुढ़काते। बच्चों में इस बात में मुक़ाबला होता कि किसका सरकण्डा सबसे आगे निकलता है। जिसका सरकण्डा आगे निकल जाता वह जीत जाता और वह बच्चा दूसरे बच्चों के सरकण्डों पर क़ब्ज़ा कर लेता और "सरकण्डे" को फेंकने का एक ख़ास तरीक़ा होता था। अगर उस तरीक़े से फेंका जाता तो वह सरकण्डा सबसे आगे निकल जाता था। मेरा चचाज़ाद भाई बड़ा होशियार था। वह जानता था कि किस तरह से सरकण्डा फेंका जाए तो वह आगे निकल जाएगा। चुनाँचे वह भी ऊपर से अपना सरकण्डा फेंकता और मैं भी फेंकता। लेकिन हर बार उसका सरकण्डा आगे निकल जाता और फिर वह मेरे सरकण्डे पर क़ब्ज़ा कर लेता यहाँ तक कि मैंने जितने सरकण्डे जमा किए थे वे सब उसने जीत लिए। आज भी मुझे उस रोज़ की दिल की हालत याद है कि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि वे सरकण्डे क्या गए मेरी कायनात वीरान हो गई। मेरी दुनिया अंधेरी हो गयी, मेरा सब कुछ लुट गया। उस दिन के सदमे की हालत आज भी मुझे याद है।

वहाँ पता चल जाएगा

लेकिन आज जब उस बात को याद करता हूँ तो यह ख़्याल आता है कि किस मूर्खता में मुब्तला था। किस चीज़ को कायनात समझा हुआ था। यह बात सुनाने के बाद फरमाते कि कल क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़िरी होगी और जन्नत और जहन्नम के मनाज़िर

(दृश्य) सामने आएँगे उस समय पता चलेगा कि यह ज़मीन, ये जायदादें, ये मिलें, ये कारख़ाने, ये कारें, ये बंगले वग़ैरह जिस पर लड़ाइयाँ हो रही थीं, जिस पर मुक़द्देबाज़ियाँ हो रही थीं, यह सब उन सरकण्डों से ज़्यादा बे-हक़ीक़त हैं।

दुनिया की हक़ीक़त नज़र के सामने रखो

इस समय आँखों पर इन दुनियावी लज़्ज़तों का, आकर्षणों का और सुन्दरता का पर्दा पड़ा हुआ है और उसके नतीजे में इन्हीं चीज़ों को सब कुछ समझे बैठे हुए हैं। क़ुरआन करीम हमसे यह माँग कर रहा है कि इस दुनिया में रहो और इस दुनिया को बरतो लेकिन इस दुनिया की सच्चाई को न भूलो। यह दुनिया बहुत बे-हक़ीक़त चीज़ है। अलबत्ता यह दुनिया ज़रूरत की चीज़ है। ज़रूरत के समय इसको ज़रूर इस्तेमाल करो लेकिन इसको दिल में जगह मत दो। इसके साथ दिल न लगाओ, इसको अपने दिल व दिमाग़ पर सवार मत करो। इसको अपने ऊपर हावी और ग़ालिब न होने दो। जिस दिन यह दुनिया तुम्हारे ऊपर ग़ालिब आ गयी उस दिन यह दुनिया तुम्हें हलाक व तबाह कर देगी।

यह है इस दुनिया की हक़ीक़त। इसी हक़ीक़त को बयान करने के लिए बार-बार अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम भेजे गए और अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का सिलसिला ख़त्म होने के बाद अम्बिया के वारिस इसी काम के लिए भेजे जाते हैं कि वे आकर लोगों को यह बताएँ कि जिस चीज़ पर तुम मर रहे हो वह बहुत बे-हक़ीक़त चीज़ है। इसको ज़रूरत के तेहत ज़रूर इख़्तियार करो। लेकिन दिन-रात इसके अन्दर न लगे रहो।

यह दुनिया क़ैदख़ाना है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः यह दुनिया मोमिन का क़ैदख़ाना है और काफ़िर की जन्नत है।

जन्नत होने का मतलब यह है कि उसकी मन्ज़िले मक़सूद ही यह

दुनिया है। इस दुनिया से आगे ज़िन्दगी का और कोई मक़सद नहीं है। और क़ैदख़ाने का मतलब यह नहीं है कि मोमिन को इस दुनिया में तकलीफ़ ज़रूर होगी बल्कि क़ैदख़ाने का मतलब यह है कि यह दुनिया मोमिन के लिए एक आरज़ी (अस्थाई) जगह है। जैसे क़ैदख़ाना अस्थाई होता है इसलिए मोमिन इस दुनिया से दिल नहीं लगाता और सुबह से लेकर शाम तक की सारी मेहनत इसी पर ख़र्च नहीं करता। मोमिन के लिए यह दुनिया क़ैदख़ाना तो है लेकिन क़ैदख़ाने में तकलीफ़ होना तो कोई ज़रूरी नहीं। ऐसे भी क़ैदख़ाने होते हैं जिनमें आदमी आराम से खा-पी रहा है और मज़े उड़ा रहा है। जैसे आजकल जेल के अन्दर प्रथम क्लास होती है जिसमें वी० आई० पी० लोग रखे जाते हैं और उनको वहाँ वी० आई० पी० सुविधाएँ दी जाती हैं। जैसे आला दर्जे के बिस्तर होते हैं, आला दर्जे के खाने उपलब्ध होते हैं। बावर्ची मौजूद हैं जैसा खाना चाहिए उनसे पकवा लें। कमरे में एयर कण्डिशन्ड लगा हुआ है। अख़बार और रिसाले समय पर पहुँचाए जाते हैं। तमाम सुविधाएँ मौजूद हैं। हर तरह की राहत और आराम का सामन मौजूद है लेकिन इसके बावजूद वह "क़ैदख़ाना" है। कोई अगर इस आरामदेह क़ैदख़ाने में रहने वाले से कहे "कि आपको तो यहाँ बड़ा आराम मिल रहा है मेहरबानी करके आप सारी उम्र यहीं पर रहें" तो वह आदमी कभी भी वहाँ रहने के लिए तैयार नहीं होगा। क्योंकि आराम व राहत सब कुछ सही लेकिन यह क़ैदख़ाना ही है और यह हमेशा रहने की जगह नहीं है बल्कि आरज़ी तौर पर रहने की जगह है। इसलिए वहाँ से निकलने की फ़िक्र करेगा।

मोमिन की इच्छा जन्नत में पहुँचना है

बहरहाल! हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है। यानी अगर उसके पास दुनिया में माल व दौलत हो, नौकर-चाकर हों, कोठी-बंगले हों, कारें हों, मकान और कारख़ानें सभी कुछ हों लेकिन मोमिन को कभी यह हक़ीक़त फ़रामोश नहीं होती कि उसको यह चीज़ छोड़कर जाना है और यह दुनिया हमेशा रहने

की जगह नहीं है। इस लिहाज़ से यह दुनिया क़ैदख़ाना है। इसलिए एक मोमिन की यह इच्छा होती है कि जल्दी से अपने असली वतन यानी जन्नत में पहुँच जाऊँ जो अल्लाह तआ़ला ने मेरे लिए तैयार कर रखी है।

अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात का शौक़

इसलिए एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

तर्जुमाः यानी जो आदमी अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात को पसन्द करता है और उसका दिल चाहता है कि मैं जल्दी से अल्लाह तआ़ला के पास पहुँच जाऊँ, तो अल्लाह तआ़ला भी उससे मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाते हैं।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हदीस सुनाई तो हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आपसे पूछा कि या रसूलल्लाह! आप ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से मिलने को पसन्द करता है तो अल्लाह तआ़ला उससे मिलने को पसन्द फ़रमाते हैं, लेकिन अल्लाह तआ़ला से मिलना मरे बिना संभव नहीं और मौत ऐसी चीज़ है कि कौन आदमी है जो इसको पसन्द करता हो? बल्कि हम में से हर आदमी मौत को ना-पसन्द करता है। इसलिए इसका मतलब तो यह हुआ कि कोई भी शख़्स इस मेयार पर पूरा नहीं उतर सकता कि वह अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात को पसन्द करे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब देते हुए फ़रमायाः ऐ आ़यशा! इसका यह मतलब नहीं है जो तुम समझ रही हो, बल्कि इसका मतलब यह है कि जब एक मोमिन अल्लाह तआ़ला की रज़ामन्दी और ख़ुशनूदी और जन्नत का तसव्वुर करता है तो उसके दिल में यह ख़्वाहिश पैदा होती है कि काश! मैं जल्दी से उस मुक़ाम तक पहुँच जाऊँ। मुलाक़ात को पसन्द करने का यह मतलब है। जबकि काफ़िर के दिल में यह इच्छा नहीं होती। या तो काफ़िर को इस बात का यक़ीन ही नहीं होता कि मरने के बाद भी कोई ज़िन्दगी आने वाली है और अगर उसको आख़िरत का यक़ीन होता है तो उसको यह धड़का और ख़तरा लगा होता है कि कहीं

मुझे वहाँ पर जहन्नम में न डाला जाए। इसी वजह से काफ़िर की यह इच्छा होती है कि जो मज़े उड़ाने हैं यहीं पर उड़ा लो। लेकिन जो अल्लाह तआला के बन्दे होते हैं जिनको दुनिया और आख़िरत की हक़ीक़ते हाल मालूम होती है उनका ज़ेहन असली वतन की तरफ़ माईल रहता है और असली वतन में जाने का शौक़ उनके दिल में रहता है।

अल्लाह का शुक्र है, वक़्त क़रीब आ रहा है

हज़रत मौलाना मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब क़ाँधलवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो बहुत बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं और उनके हालात और वाक़िआ़त बड़े अ़जीब व ग़रीब हैं। किसी शख़्स ने उनकी दाढ़ी के सफ़ेद बाल देखकर उनसे कहा कि आप तो बूढ़े हो गए हैं। उन्होंने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए फ़रमाया कि हाँ! बाल सफ़ेद हो गए हैं। अल्लाह का शुक्र है, वक़्त क़रीब आ रहा है। मन्ज़िल क़रीब आ रही है। ऐसा मालूम होता था कि असल वतन की तरफ़ जाने के शौक़ में हैं इसलिए कि मोमिन यह चाहता है कि मैं अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर पहुँच जाऊँ और वहाँ पर मेरी हाज़िरी हो जाए। बहरहाल! इस दुनिया में रहो, दुनिया को बरतो, दुनिया के हक़ अदा करो लेकिन इस दुनिया को अपने ऊपर सवार न होने दो।

दुनिया छोड़ना मक़सूद नहीं

लेकिन इसका यह मक़सद नहीं है कि आदमी दुनिया छोड़कर जंगल में जा बैठे या दुनिया में कमाने का धन्धा छोड़ बैठे, या बीवी-बच्चों को छोड़ बैठे, या दुनिया के ताल्लुक़ात को ख़त्म कर दे। याद रखिए! इनमें से किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। अगर ये चीज़ें मतलूब और मक़सूद होतीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस तरह ज़िन्दगी न गुज़ारते। आपने दुनिया में रहते हुए सभी कुछ किया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तिजारत भी की, खेती भी की, मज़दूरी भी की। आपके बीवी-बच्चे भी थे। आपके ताल्लुक़ात भी थे, आपके दोस्त-अहबाब भी थे। इसलिए ये चीज़ें मतलूब (वांछित) नहीं।

दुनिया दिल व दिमाग़ पर सवार न हो

बल्कि मतलूब (वांछित) यह है कि दुनिया के अन्दर लगाव न रखो। लगाव का मतलब यह है कि सुबह से लेकर शाम तक एक ही फ़िक्र, एक ही सोच, दिल पर मुसल्लत है कि यह दुनिया किस तरह से ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करूँ? आख़िरत का कोई ख़्याल ही नहीं आता। यह बात नहीं होनी चाहिए। इसलिए हर शख़्स अपने दिल को टटोल कर देखे कि क्या चौबीस घँटे की सोच-विचार में कभी यह ख़्याल भी आता है कि जब हम वहाँ आख़िरत में पहुँचेंगे तो वहाँ क्या होगा? जन्नत होगी, जहन्नम होगी, अल्लाह तआ़ला के सामने जवाबदेही होगी। क्या हमें इन बातों का ख़्याल आता है या नहीं? अगर ख़्याल आता है तो यह देखो कि दूसरे ख़्यालात के मुक़ाबले में इन ख़्यालात का क्या तनासुब है? जैसे चौबीस घँटों में से छह घँटे तो सोने के निकाल दो, बाक़ी अट्ठारह घँटों में से कितना समय ऐसा गुज़रता है जिसमें आख़िरत का और अल्लाह तआ़ला के सामने जवाबदेही का ख़्याल आता है। अगर आख़िरत का ख़्याल और अल्लाह तआ़ला के सामने जवाबदेही का ख़्याल' नहीं आता तो इसका मतलब यह है कि दुनिया के अन्दर लगे हुए हो। यह लगना उचित नहीं इस लगाव से बचो।

दूनिया ज़रूरी है लकिन शौचालय की तरह

याद रखिए! यह दुनिया ज़रूरी तो है। इस दुनिया के बिना गुज़ारा भी नहीं है। इसलिए कि अगर पैसे पास न हों तो कैसे ज़िन्दगी गुज़ारेगा। खाना न हो तो कैसे ज़िन्दा रहेगा। अगर कमाने के असबाब इख़्तियार नहीं करेगा तो कैसे ज़िन्दा रहेगा। इसलिए दुनिया की ज़रूरत तो है लेकिन दुनिया की ज़रूरत ऐसी है जैसे मकान के अन्दर शौचालय (लैट्रीन) की ज़रूरत होती है। अगर किसी मकान में शौचालय न हो तो वह मकान नाक़िस है। लेकिन आदमी मकान में शौचालय (लैट्रीन) इसलिए बनाता है ताकि उससे ज़रूरत पूरी करे, अलबत्ता इसका मतलब यह नहीं है कि

शौचालय बनाने के बाद सुबह से शाम तक हर समय उस शौचालय के बारे में सोचता रहे कि इसके अन्दर क्या-क्या आराम की चीज़ें लगाऊँ, किस तरह इसको सजाऊँ। इसलिए शौचालय इतना ज़रूरी नहीं है कि आदमी उसकी सोच में डूब जाए। इसी तरह यह दुनिया भी ज़रूरी है लेकिन इसमें इतना डूब जाना कि सुबह से लेकर शाम तक इसी दुनिया की फ़िक्र, इसी की सोच, इसी का ख़्याल दिल पर सवार रहे, यह बात ग़लत है।

दूसरी बात यह है कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें इसी दुनिया को दीन बनाने के नुस्ख़े बता दिए ताकि इसी दुनिया को हम आख़िरत के लिए ज़ीना बना लें, और इसी दुनिया को जन्नत के आला दर्जों तक पहुँचने के लिए सीढ़ी बना लें।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की दुआ

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने हुकूमत के ज़माने में "क़ैसर व किसरा" के मुल्क जीते जो उस ज़माने के सुपर पॉवर ख़्याल किये जाते थे। आपने एक ही समय में दोनों से जंग की और दोनों पर जीत हासिल की और दोनों के ख़ज़ाने लाकर मस्जिदे नबवी में ढेर किये गए। एक बार जो सोना-चाँदी आया और उसको जब मस्जिदे नबवी में रखा गया तो वह इतना ज़्यादा था कि हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु उसके ढेर के पीछे छुप गए। रिवायतों में आता है कि उस सोने-चाँदी को देखकर आपने अल्लाह तआला से दुआ की, ऐ अल्लाह! इस दुनिया की कुछ न कुछ मुहब्बत तो आपने हमारी फ़ितरत में दाख़िल फ़रमाई है, वह मुहब्बत तो बाक़ी रहेगी। उस मुहब्बत के ख़त्म होने की हम आपसे दुआ नहीं करते। लेकिन हम आपसे यह दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! यह दुनिया जो आप हमें अता फ़रमा रहे हैं इसको आप हमारी आख़िरत दुरुस्त करने का ज़रिया बना दीजिए। हम यह नहीं कहते कि इसकी मुहब्बत बिल्कुल ख़त्म कर दीजिए और न हम यह कहते हैं कि हमें इस दुनिया की ज़रूरत नहीं है, लेकिन हम यह कहते हैं कि इस दुनिया

को आख़िरत का ज़ीना बना दीजिए।

इस दुनिया को आख़िरत का ज़ीना बनाओ

इस दुआ के अन्दर आपने दुनिया की सारी हकीकत खोल दी। वह यह कि अगर यह दुनिया अपने आप आ जाए तो यह अल्लाह तआला का इनाम है। उसकी नवाज़िश और उसका करम है। लेकिन इस दुनिया को इस तरह इस्तेमाल करो कि वह दुनिया तुम्हारी आख़िरत का ज़रिया बन जाए। यह न हो कि इस दुनिया को हासिल करने की ख़ातिर अल्लाह के हुक्म को भी छोड़ दिया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़रमान को भी छोड़ दिया।

हराम तरीके से दुनिया हासिल नहीं करूँगा

अब देखना यह है कि दुनिया किस तरह दीन बन सकती है और किस तरह आख़िरत कमाने का ज़रिया बन सकती है? इस मक़सद के लिए इन दो बातों को पल्ले बाँध लें। एक यह कि इस बात का अहद कर लें कि इस दुनिया की कोई भी चीज़ चाहे वह रुपया हो या पैसा हो, असबाब हो या सामान हो, वह नाजायज़ तरीक़े से हासिल नहीं करनी है। हराम तरीक़े से हासिल नहीं करनी है। न सूद के ज़रिये, न रिश्वत के ज़रिये, न जुए के ज़रिये न झूठ बोलकर, न फ़रेब देकर, न धोखा देकर, न किसी का दिल तोड़कर, न किसी का दिल दुखाकर। इस बात का अहद कर लें कि ज़िन्दगी भर एक पैसा भी इस तरीक़े से हासिल नहीं करूँगा। बल्कि जो कुछ कमाऊँगा हलाल तरीक़े से कमाऊँगा।

हराम कामों में इस्तेमाल नहीं करूँगा

दूसरे इस बात का अहद कर लें कि जो चीज़ हलाल तरीक़े से आएगी उसको हलाल तरीक़े से इस्तेमाल करूँगा, हराम तरीक़े से इस्तेमाल नहीं करूँगा। नाजायज़ तरीक़े से इस्तेमाल नहीं करूँगा। और उस चीज़ पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करूँगा। जो नेमत मिलेगी उस पर यह कहूँगा कि या अल्लाह! मैं इस काबिल नहीं था कि मुझे यह चीज़ दी

जाए, यह आपका इनाम है, आपका करम है, इस पर आपका शुक्र अदा करता हूँ।

बहरहाल! दुनिया की मुहब्बत को दिल से निकालने और दुनिया की मुहब्बत के बुरे नतीजों से बचने का तरीक़ा यह है कि इस दुनिया को हलाल तरीक़े से हासिल करो और हलाल तरीक़े से ख़र्च करो। और जो हलाल तरीक़े से हासिल हो, उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो।

क़ारून का क्या हाल हुआ?

क़ारून का नाम आपने सुना होगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में यह बहुत बड़ा दौलतमन्द, बहुत बड़ा सरमायेदार था। इतना बड़ा दौलतमन्द था कि उसके ख़ज़ाने की चाबियाँ ताक़तवर लोगों की एक जमाअ़त उठाया करती थी। उस ज़माने में चाबियाँ भी बड़ी वज़नी बनायी जाती थीं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया कि यह दौलत तो अल्लाह तआला की दी हुई नेमत है इसलिए इस पर न इतराओ क्योंकि अल्लाह तआला इतराने वाले को पसन्द नहीं फ़रमाते हैं। और इस नेमत पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो और इस नेमत को अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में ख़र्च मत करो।

इन नसीहतों के जवाब में उसने कहा कि यह जो कुछ मुझे मिला है यह मेरे इल्म की बदौलत मुझे मिला है और मैंने अपने बाज़ू की ताक़त से हासिल किया है, इसलिए इस पर शुक्र क्यों अदा करूँ? इसलिए क़ारून अपनी दौलत पर इतराने लगा और उसने घमण्ड शुरू कर दिया और उस माल को अपने बाज़ू की ताक़त का नतीजा क़रार दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने उसी माल को उसके लिए अज़ाब बना दिया। ज़लज़ला आया और उसके सारे ख़ज़ाने ज़मीन में धंस गए। यह तो क़ारून की दौलत थी जो उसे ले डूबी।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को भी दुनिया मिली

दूसरी तरफ़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को देखिये। अल्लाह

तआला ने उनको हुकूमत और बादशाहत दी, माल-दौलत दी। ऐसी दौलत और ऐसी हुकूमत उनको दी कि उनके बाद ऐसी दौलत और ऐसी हुकूमत किसी और को नहीं दी गयी। चुनाँचे उन्होंने खुद यह दुआ की थी कि:

तर्जुमाः यानी ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी सलतनत अता फ़रमाइए कि मेरे बाद ऐसी सलतनत किसी को न मिले। (सूरः सॉद आयत 35)

ऐसी सलतनत माँगने का मन्शा यह था ताकि लोगों को दिखाया जाए कि इतनी बड़ी दौलत और इतनी बड़ी सलतनत होने के बाद उस दौलत और इस दुनिया को किस तरह दीन बनाया जा सकता है। इसलिए जब ऐसी सलतनत हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को हासिल हो गयी कि उनकी हुकूमत तमाम इनसानों पर, तमाम जिन्नात पर, जानवरों पर परिन्दों पर, दरिन्दों पर क़ायम है और उन सब जानवरों की बोलियाँ भी जानते हैं। ऐसी सलतनत होने के बावजूद सीना तना हुआ नहीं है, गर्दन अकड़ी हुई नहीं है, बल्कि अल्लाह तआला के सामने सर झुका हुआ है और ज़बान पर ये अलफ़ाज़ हैं कि:

तर्जुमाः ऐ अल्लाह! मुझे इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाइए कि जो नेमत आपने मुझे अता फ़रमाई है मैं उसका शुक्र कथनी और करनी से अदा करता रहूँ। (सूरः नहल आयत 19)

दोनों में फ़र्क़

दोनों में फ़र्क़ देखिए कि यह दुनिया क़ारून के पास भी थी और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास भी थी। लेकिन क़ारून की दुनिया उसको ज़मीन के अन्दर धंसाने का कारण बन गयी और आख़िरत में जहन्नम में जाने का मुस्तहिक़ (पात्र) बना दिया। और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की दुनिया ने उनको दुनिया में भी पैग़म्बरी का दर्जा अता किया और बादशाहत का दर्जा अता किया और आख़िरत में भी जन्नत के आला मुक़ाम दिलाने का सबब बन गयी।

दृष्टिकोण बदल लो

हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि बड़ी

प्यारी बात बयान फ़रमाया करते थे। फ़रमाया करते थे कि "दीन" दृष्टिकोण के बदलने का नाम है। यह दुनिया वही रहेगी। लेकिन अगर तुम ज़रा-सा दृष्किोण बदल लोगे तो वही दुनिया दीन बन जाएगी। इसकी मिसाल यह दिया करते थे कि जैसे आजकल ऐसी तस्वीरें होती हैं कि अगर उनको एक तरफ़ से देखा जाए तो यह नज़र आएगा कि यह काबा शरीफ़ की तस्वीर है और अगर उसी तस्वीर को दूसरे रुख़ से देखा जाए तो यह नज़र आएगा कि यह रोज़ा-ए-अक़्दस की तस्वीर है। और अगर तीसरे रुख़ से देखा जाए तो यह नज़र आएगा कि यह बैतुल-मक़्दिस की तस्वीर है। हालाँकि वह एक ही तस्वीर है लेकिन देखने के ढंग को बदलने से उसकी सूरत बदल जाती है। हज़रत फ़रमाया करते थे कि इसी तरह इस दुनिया को देखने का तरीक़ा बदल लो तो यही दुनिया "दीन" बन जाती है और आख़िरत का ज़ीना बन जाती है।

देखने का अन्दाज़ बदलने का तरीक़ा

फिर इसका तरीक़ा बताया कि किस तरह देखने का तरीक़ा बदला जाए। फ़रमाया, अगर तुम तिजारत कर रहे हो, या नौकरी कर रहे हो, तो उसके अन्दर यह नीयत कर लो कि यह तिजारत और यह नौकरी मैं अपने और अपने बीवी-बच्चों के उन हुक़ूक़ की अदायगी के लिए कर रहा हूँ जो अल्लाह तआला ने मेरे ऊपर आयद किये हैं और मैं इस तिजारत में हलाल तरीक़े से कमाने की कोशिश करूँगा, नाजायज़ तरीक़े से एक पैसा भी नहीं कमाऊँगा। इस नीयत और एहतिमाम के बाद तुम जो तिजारत और नौकरी कर रहे हो, यही इबादत और यही दीन बन गया।

या जैसे घर में दाख़िल हुए। खाने का वक़्त आया। अब खाना खाना भी दुनिया है। कौनसा इनसान है जो खाना नहीं खाता? एक काफ़िर इनसान भी खाना खाता है, एक फ़ासिक़ व बदकार और ग़ाफ़िल इनसान भी खाना खाता है, लेकिन उसके खाने में और एक जानवर के खाने में कोई फ़र्क़ नहीं है। दूसरी तरफ़ एक वह मोमिन भी खाना खाता है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर चलने वाला

है। वह खाना शुरू करेगा तो पहले **"बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम"** पढ़ेगा। जिसका मतलब यह है कि मैं इस खाने को उस अल्लाह तआ़ला के नाम से शुरू कर रहा हूँ जो "रहमान" है और "रहीम" है। इसके ज़रिये वह इस बात का इक़रार करता है कि इस खाने को मुहैया करना मेरे बाज़ू की ताक़त का करिश्मा नहीं है। मेरी यह मजाल नहीं थी कि मैं यह खाना हासिल कर सकता, बल्कि यह खाना मेरे मालिक का इनाम है और उसका दिया हुआ है। उसी का नाम लेकर खाता हूँ। ऐ अल्लाह! यह खाना आपकी नेमत है और इसको आपकी नेमत समझकर खा रहा हूँ। अपने नफ़्स का हक़ अदा करने के लिए खा रहा हूँ।

खाने पर शुक्र अदा करो

जब खाना खा चुको तो यह दुआ पढ़ोः

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अत्अ़-मना व सक़ाना व कफ़ाना व आवाना व अरवाना व ज-अ़-लना मिनल् मुस्लिमीन।

यानी उस अल्लाह का शुक्र है जिसने हमें यह खाना खिलाया। बाज़ रिवायतों में लफ़्ज़ **"व र-ज़-क़ना"** का इज़ाफ़ा है। इसके मायने यह होंगे कि उस अल्लाह का शुक्र है जिसने हमें यह रिज़्क़ दिया। "रिज़्क़" देने का मतलब यह है कि यह खाना हमें मिल गया और हमारे पास आया। और **"अत्अ़-मना"** का मतलब यह है कि इस रिज़्क़ को खाने का मौक़ा उपलब्ध किया। वरना यह भी तो हो सकता था कि "रिज़्क़" तो हासिल है, दस्तरख़्वान पर आला दर्जे के खाने चुने हुए हैं, बिरयानी है, पुलाव है, क़ोर्मा भी है, कबाब भी हैं लेकिन पेट ख़राब है और परहेज़ की वजह से उनमें से कोई चीज़ नहीं खा सकते। अब **"र-ज़-क़ना"** तो पाया गया लेकिन **"अत्अ़-मना"** नहीं पाया गया। रिज़्क़ मौजूद है लेकिन खाने की सकत नहीं है। इसलिए इस नेमत पर भी अल्लाह का शुक्र अदा करो।

और जब खाना खाने से पहले भी अल्लाह तआ़ला का नाम ले लिया और खाना खाने के बाद उस पर शुक्र अदा कर लिया तो अब वह पूरा खाना इबादत बन गया और यह दुनिया का अ़मल दीन बन गया। इसी

को निगाह का तरीक़ा और सोचने का अन्दाज़ बदलना कहा जाता है। इसी की दावत देने के लिए अम्बिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम इस दुनिया में तशरीफ़ लाए और इस दुनिया की मुहब्बत को दिल से निकालने का यही मतलब है। और अल्लाह तआला की मुहब्बत पर इस दुनिया की मुहब्बत को ग़ालिब न होने देने का यही मतलब है। अल्लाह तआला अपनी रहमत से और अपने फ़ज़्ल व करम से हम सब को इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ

दुनिया की हकीकत

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

हदीसः हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

बेशक दुनिया मीठी और सरसब्ज़ है। यानी एक इनसान को दुनिया की शान व शौकत, दुनिया की लज़्ज़तें, दुनिया की ख़्वाहिशें बड़ी ख़ुशनुमा मालूम होती हैं। गोया कि यह दुनिया ख़ुशनुमा भी है और बज़ाहिर मज़ेदार भी है। लेकिन अल्लाह तआला ने इसको तुम्हारी आज़माईश का एक ज़रिया बनाया है और तुमको इस दुनिया में अपना ख़लीफ़ा बनाकर भेजा है ताकि वह यह देखें कि तुम इस दुनिया में कैसा अमल करते हो। क्या दुनिया की यह ज़ाहिरी ख़ूबसूरती और ख़ुशनुमाई तुम्हें धोखे में डाल देती है और तुम इस दुनिया के पीछे लग जाते हो, या तुम अल्लाह और अल्लाह की पैदा की हुई जन्नत और आख़िरत को याद करते हो, और उसकी तैयार करते हो?

इसलिए तुम दुनिया से बचो और औरतों से बचो। इसलिए कि औरत भी मर्द के लिए दुनिया के फ़ितनों में से एक फ़ितना है। अगर इनसान

जायज़ तरीके को छोड़कर नाजायज़ तरीके से औरत से लुत्फ़ उठाये तो फिर यह औरत दुनिया का धोखा और फरेब है।

असली ज़िन्दगी

हज़रत सहल बिन सअ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुआ़ करते हुए फ़रमाया कि ऐ अल्लाह! असली ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 4098)

यानी दुनिया की ज़िन्दगी तो उसके मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखती, बिल्कुल बे-हकीक़त है।

क़ब्र तक तीन चीज़ें साथ जाती हैं

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब किसी शख़्स का इन्तिक़ाल हो जाता है और उसका जनाज़ा क़ब्रिस्तान ले जाया जाता है तो उस वक़्त मय्यित के साथ तीन चीज़ें जाती हैं। एक यार-रिश्तेदार जो उस शख़्स को दफ़न करने के लिए जाते हैं। दूसरा उसका माल साथ जाता है (इसलिए कि कुछ जगहों पर यह रिवाज है कि मरने वाले का माल क़ब्रिस्तान तक साथ ले जाते हैं) और तीसरा उसका अ़मल है जो उसके साथ जाता है। फिर फ़रमाया कि क़ब्र तक उसको पहुँचाने के बाद दो चीज़ें तो वापस लौट आती हैं- एक यार-रिश्तेदार और दूसरे उसका माल वग़ैरह, और तीसरी चीज़ यानी उसका अ़मल, वह उसके साथ क़ब्र में जाता है।

माल और यार-रिश्तेदार काम आने वाले नहीं

इससे मालूम हुआ कि मय्यित के घर वाले और यार-रिश्तेदार जिनको वह अपना महबूब समझता था, जिनको अपना प्यारा समझता था, जिनके साथ मुहब्बतें और ताल्लुक़ात थे, जिनके बिना एक पल गुज़ारना मुश्किल होता था। वे सब क़ब्र के अन्दर उसके काम आने वाले नहीं। और वह माल जिस पर उसको बड़ा घमण्ड और नाज़ था कि मेरे पास इतना माल है, इतना बैंक बैलेंस है, वह भी सब यहीं रह जाता है। और वह चीज़

जो उसके साथ क़ब्र के अन्दर जाती है वह उसका अ़मल है जो उसने दुनिया में रहकर किया था। इसके अ़लावा कोई चीज़ साथ जाने वाली नहीं है। चुनाँचे हदीस शरीफ़ में आता है कि जब किसी मय्यित को दफ़न करने के बाद उसके रिश्तेदार और यार-दोस्त वहाँ से जाने लगते हैं तो उनके जाने के समय मय्यित उनके क़दमों की आवाज़ सुनती है और यह आवाज़ उसको यह बताने के लिए सुनाई जाती है कि जिन लोगों पर तुम भरोसा किये हुए थे, जिनके साथ तुम्हारे सुबह-शाम गुज़र रहे थे, जिनकी मुहब्बत पर तुमने भरोसा कर रखा था, वे सब तुम्हें इस गड्ढे में उतार कर चले गए। हक़ीक़त में वे तुम्हारा साथ देने वाले नहीं थे। यानी माल भी साथ छोड़ गया और यार-रिश्तेदार भी साथ छोड़ गए। सिर्फ़ एक अ़मल साथ जा रहा है।

अब अगर नेक अ़मल साथ में है तो उस सूरत में क़ब्र का वह गड्ढा जिसको देखकर एक ज़िन्दा इनसान को डर लगता है, वह गड्ढा उस नेक अ़मल के नूर की वजह से रोशन हो जाता है। उसमें रोशनी हो जाती है। उसमें फैलाव हो जाता है। और फिर वह क़ब्र का गड्ढा नहीं रहता बल्कि जन्नत का एक बाग़ बन जाता है।

जन्नत का बाग़ या जहन्नम का गड्ढा

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब नेक अ़मल वाला बन्दा क़ब्र में रखा जाता है तो उसको सम्बोधित करके कहा जाता है कि:

"अब तुम्हारे लिए जन्नत की खिड़की खोल दी गयी है। अब जन्नत की हवाएँ तुम्हारे पास आएँगी। तुम इस तरह सो जाओ जैसे दुल्हन सोती है, और उस दुल्हन को सबसे ज़्यादा महबूब शख़्स जगाता है, उसके अ़लावा कोई दूसरा नहीं जगाता। (तिर्मिज़ी शरीफ़ हदीस 1071)

इसलिए अगर अ़मल अच्छा है तो वह क़ब्र का गड्ढा राहतों का पेश-ख़ेमा (बुनियाद) बन जाता है। और वह जन्नत का एक बाग़ बन जाता है। और अगर ख़ुदा न करे अ़मल ख़राब है तो फिर वह जहन्नम का गड्ढा बन जाता है, उसके अन्दर अ़ज़ाब है। और अ़ज़ाब और

तकलीफ़ों का सिलसिला क़ब्र के अन्दर ही शुरू हो जाता है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान की उससे हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पनाह माँगी कि ऐ अल्लाह! मैं क़ब्र के अज़ाब से आपकी पनाह माँगता हूँ।

इस दुनिया में अपना कोई नहीं

इसलिए इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह हक़ीक़त बयान फ़रमा रहे हैं कि जब वह वक़्त आएगा और लोग क़ब्र के गड्ढे में तुम्हें रखकर चले जाएँगे, उस वक़्त तो यह सच्चाई खुल जाएगी कि इस दुनिया में अपना कोई नहीं। न यार-दोस्त और रिश्तेदार अपने हैं और न यह माल अपना है। लेकिन उस समय पता चलने का कोई फ़ायदा नहीं होगा। इसलिए कि अगर उस समय अपनी हालत बदलना भी चाहेगा और अपनी इस्लाह करना चाहेगा तो उसका समय बीत चुका होगा। बल्कि जब वह समय आ जाएगा तो फिर उसको मोहलत नहीं दी जाएगी। चुनाँचे लोग अपना बुरा अन्जाम देखकर अल्लाह तआ़ला से अ़र्ज़ करेंगे कि एक बार हमें फिर दुनिया में भेज दीजिए कि हम वहाँ जाकर ख़ूब सदक़ा-ख़ैरात करेंगे और नेक अ़मल करेंगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला फ़रमाएँगे कि:

तर्जुमाः जब मौत का वक़्त आ जाता है तो अल्लाह तआ़ला किसी को मुअख़्ख़र नहीं करते। (सूरः मुनाफ़िक़ून आयत 11)

मौत का वक़्त आ जाने के बाद किसी नबी को, किसी वली को, किसी सहाबी को और किसी भी बड़े से बड़े आदमी को लेट नहीं किया जाता। इसलिए उस समय अपनी इस्लाह का ख़्याल आने का फ़ायदा कुछ नहीं है। इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पहले से हमें बा-ख़बर (सूचित) कर रहे हैं कि उस वक़्त के आने से पहले यह बात सोच लो कि उस वक़्त ये सब तुम्हें छोड़कर चले जाएँगे, तुम अकेले रह जाओगे और सिर्फ़ तुम्हारा अ़मल तुम्हारे साथ जाएगा।

शुक्रिया ऐ क़ब्र तक पहुँचाने वालो! शुक्रिया
अब अकेले ही चले जायेंगे इस मन्ज़िल से ह

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि आज ही से इस बात को सोच लो, फिर तुम्हें यह नज़र आएगा कि दुनिया की सारी लज़्ज़तें, सारे फ़ायदे, दुनिया के कारोबार, दुनिया की ख़्वाहिशें कुछ नहीं बिल्कुल बे-हकीकत हैं। और असल चीज़ वह है जो आख़िरत के लिए तैयार की गयी हो।

जहन्नम की एक डुबकी

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कियामत के दिन अल्लाह तआ़ला एक ऐसे शख़्स को बुलाएँगे जिसकी सारी ज़िन्दगी नेमतों में गुज़री होगी और दुनिया के तमाम इनसानों में सबसे ज़्यादा जिसको दुनिया की नेमतें मिली होंगी। यानी माल सबसे ज़्यादा, बाल-बच्चे ज़्यादा, नौकर-चाकर, दोस्त अहबाब, कोठी-बंगले और दुनिया के ऐश व आराम के असबाब व साधन सबसे ज़्यादा उसको मिले होंगे। ऐसे शख़्स को अल्लाह तआ़ला बुलाएँगे। अब आप अन्दाज़ा लगाएँ कि जब से यह दुनिया पैदा हुई, उस वक़्त से लेकर कियामत के दिन तक जितने इनसान पैदा हुए, उनमें से ऐसे शख़्स को चुना जाएगा जो इस दुनिया में सबसे ज़्यादा मालदार, सबसे ज़्यादा खुशहाल और सबसे ज़्यादा खुश व ख़ुर्रम रहा होगा। और उसको जहन्नम के अन्दर एक ग़ोता (डुबकी) दिया जाएगा और फ़रिश्तों से कहा जाएगा कि इसको जहन्नम के अन्दर एक ग़ोता दिलाकर ले आओ।

फिर उस शख़्स से पूछा जाएगा कि ऐ आदम के बेटे! क्या तुमने कभी कोई राहत और आराम और खुशहाली देखी है? क्या तुम पर कभी कोई नेमत गुज़री? यानी माल व दौलत, ऐश व आराम कुछ मिला है? वह शख़्स जवाब में कहेगा कि ऐ परवर्दिगार! मैंने कभी राहत व आराम, ऐश व खुशी, माल व दौलत की शक्ल तक नहीं देखी। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2807)

वह सारी उम्र जो दुनिया के अन्दर नेमतों में, राहतों में, माल व दौलत में, ऐश व आराम में गुज़ारी थी, जहन्नम के एक ग़ोते से वह सब नेमतें और राहतें भूल जाएगा। इसलिए कि उस एक ग़ोते में उसको इतना

दुख, तकलीफ़ और इतना अ़ज़ाब और इतनी परेशानी होगी कि वह उसकी वजह से दुनिया की नेमतें भूल जाएगा।

जन्नत का एक चक्कर

उसके बाद एक ऐसे शख़्स को बुलाया जाएगा जो दुनिया में सबसे ज़्यादा तंगदस्ती, परेशानी, और फ़ाके व मुसीबत का शिकार रहा होगा। गोया कि दुनिया में उसने इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारी होगी कि कभी राहत व आराम की शक्ल ही नहीं देखी होगी। उसको बुलाकर जन्नत का एक चक्कर लगवाया जाएगा और फ़रिश्तों से कहा जाएगा कि इसको ज़रा जन्नत में से एक बार गुज़ार कर ले आओ। और फिर उससे पूछा जाएगा कि ऐ आदम के बेटे! क्या कभी तुमने फ़ाका और मुसीबत देखी है? क्या कभी तुम पर सख़्ती और परेशानी का ज़माना गुज़रा? वह जवाब में कहेगा कि ख़ुदा की क़सम! मेरे ऊपर तो कभी सख़्ती और परेशानी का ज़माना नहीं गुज़रा। इसलिए कि दुनिया की सारी ज़िन्दगी जो मुसीबत, परेशानी और दुखों में गुज़ारी थी, जन्नत का एक चक्कर लगाने के बाद वह सब भूल जाएगा।

दुनिया बे-हकीकत चीज़ है

ये सब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बताई हुई बातें हैं और इनके बताने का मक़सद यह है कि दुनिया की नेमतें आख़िरत के मुक़ाबले में इतनी बे-हक़ीक़त, इतनी नापायदार, और हक़ीर हैं कि जहन्नम की ज़रा-सी तकलीफ़ के सामने दुनिया की सारी राहतें इनसान भूल जाएगा और सारी उम्र की तकलीफ़ें और मुसीबतें व दुख जन्नत का एक चक्कर लगाने के बाद भूल जाएगा। यह दुनिया इतनी बे-हकीक़त चीज़ है जिसकी ख़ातिर तुम दिन-रात दौड़-धूप में लगे हुए हो। सुबह से लेकर शाम तक, शाम से लेकर सुबह तक, हर वक़्त दिमाग़ पर यही फ़िक्र मुसल्लत है कि किस तरह दुनिया ज़्यादा से ज़्यादा कमा लूँ? किस तरह पैसे जोड़ लूँ? किस तरह मकान बना लूँ? किस तरह ज़्यादा से ज़्यादा ऐश व आराम के साधन जमा कर लूँ? दिन-रात बस इसी की दौड़-धूप है। इसलिए हुज़ूर

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि ज़रा सोच लो किस चीज़ की तलब में तुम लगे हुए हो, और इसके मुक़ाबले में आख़िरत की नेमतें और तकलीफ़ें भूले हुए हो। "ज़ोहद" इसी का नाम है कि इनसान दुनिया की हक़ीक़त को पहचान ले और दुनिया के साथ वही मामला करे जिसकी वह हक़दार (पात्र) है। और आख़िरत के साथ वह मामला करे जिसकी वह हक़दार है।

दुनिया की हैसियत एक पानी का क़तरा है

हज़रत मुस्तौरिद बिन शद्दाद रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की मिसाल ऐसी है जैसे कि तुम में से कोई शख़्स अपनी उंगली समुन्द्र में डाले और फिर वह उंगली निकाल ले। यानी उस उंगली पर जितना पानी लगा हुआ होगा आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की इतनी भी हैसियत नहीं। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2858)

इसलिए कि समुन्द्र फिर भी सीमित है, असीमित नहीं है, और आख़िरत की नेमतें असीमित और अपार हैं। लाफ़ानी हैं, कभी ख़त्म होने वाली नहीं हैं। इसलिए दुनिया की आख़िरत के मुक़ाबले में वह निस्बत भी नहीं है जो निस्बत समुन्द्र को उंगली में लगे हुए पानी से होती है। लेकिन समझाने के लिए फ़रमाया कि दुनिया बस इतनी है जितना उंगली डुबोने से पानी लग जाता है, बाक़ी आख़िरत है।

अब अ़जीब बात यह है कि इनसान सुबह से शाम तक उस उंगली पर लगे हुए पानी की फ़िक्र में तो है और उस समुन्द्र को भूला हुआ है जिस समुन्द्र के साथ मरने के बाद वास्ता पेश आता है। और ख़ुदा जाने उसके साथ कब वास्ता पेश आ जाए। आज पेश आ जाए। कल पेश आ जाए। किसी वक़्त की गारन्टी नहीं है। हर लम्हे पेश आ सकता है। इसी ग़फ़लत के पर्दे को उठाने के लिए हज़राते अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए कि आँखों पर जो ग़फ़लत का पर्दा पड़ा हुआ है और उसके नतीजे में दिन-रात की दौड़-धूप इस उंगली में लगे हुए पानी पर

लगी हुई है। इससे तवज्जोह हटाकर आख़िरत के समुन्द्र की तरफ़ तवज्जोह लगाएँ।

दुनिया एक मुरदार बकरी के बच्चे की तरह है

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बाज़ार में गुज़रे और आपके दोनों तरफ़ लोग चल रहे थे। आप बकरी के एक मुरदार बच्चे के पास से गुज़रे। वह बकरी का बच्चा भी ऐबदार था। यानी छोटे कानों वाला था और मुर्दार भी था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस मुर्दार बच्चे को कान से पकड़ कर उठाया और फिर फ़रमाया कि तुम में से कौन शख़्स बकरी के इस मुर्दार बच्चे को एक दिर्हम में ख़रीदने के लिए तैयार है? सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया कि एक दिर्हम तो क्या, मामूली चीज़ के बदले में भी इसको कोई लेने को तैयार नहीं है। हम इसको लेकर क्या करेंगे? फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक दिर्हम में न सही क्या तुम में से कोई इसको मुफ़्त में लेने को तैयार है? सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा की क़सम! अगर यह बच्चा ज़िन्दा भी होता तो भी यह ऐबदार था इसलिए कि इसके कान छोटे हैं तो जब ज़िन्दा लेने को कोई तैयार न होता तो मुर्दार लेने को कौन तैयार होगा?

इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारी नज़रों में बकरी के इस मुर्दार बच्चे की लाश जितनी बे-हक़ीक़त और ज़लील चीज़ है इससे ज़्यादा बे-हक़ीक़त और ज़लील चीज़ यह दुनिया है जो तुम्हारे सामने है। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस 2957)

तुम में से कोई शख़्स भी इस मुर्दार बच्चे को मुफ़्त में लेने को भी तैयार नहीं और वह दुनिया जो अल्लाह तआला के नज़दीक इससे ज़्यादा बे-हक़ीक़त और ज़लील है, तुम उसके पीछे दिन-रात पड़े हुए हो। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम का यह अन्दाज़ था। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को जगह-जगह और क़दम-क़दम पर इस

दुनिया की ना-पायदारी बताने के लिए आप ऐसी बातें इरशाद फ़रमाते थे।

उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च कर दूँ

हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु भी दुरवेश सहाबी हैं। फ़रमाते हैं कि मैं एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मदीने के "हर्रा" से गुज़र रहा था। "हर्रा" काले पत्थर वाली ज़मीन को कहा जाता है। जिन हज़रात को मदीना मुनव्वरा हाज़िरी का मौक़ा मिला है उन्होंने देखा होगा कि मदीना मुनव्वरा के चारों तरफ़ काले पत्थरों वाली ज़मीन है उसको "हर्रा" कहा जाता है। रास्ते में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ-साथ चलते-चलते हमारे सामने उहुद पहाड़ आ गया और वह हमें नज़र आने लगा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि ऐ अबूज़र! मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं हाज़िर हूँ क्या बात है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अबूज़र! यह तुम्हें सामने जो उहुद पहाड़ नज़र आ रहा है अगर यह सारा पहाड़ सोने का बनाकर मुझे दे दिया जाए तब भी मुझे यह बात पसन्द नहीं है कि तीन दिन मुझ पर इस हालत में गुज़रें कि इसमें से एक दीनार भी मेरे पास बाक़ी रहे। हाँ! अगर मेरे ऊपर किसी का क़र्ज़ा है तो सिर्फ़ क़र्ज़ा उतारने के लिए जितने दीनार की ज़रूरत हो वे तो रख लूँ, उसके अलावा एक दीनार भी मैं अपने पास रखने के लिए तैयार नहीं। और वह माल में इस तरह और इस तरह और इस तरह मुट्ठियाँ भर-भरकर लोगों में बाँट दूँ। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 6444)

वह कम-नसीब होंगे

फिर आगे फ़रमाया कि याद रखो! दुनिया में जिनके पास माल व दौलत बहुत ज़्यादा है, बड़े-बड़े मालदार, और बड़े-बड़े सरमायेदार और बड़े-बड़े दौलतमन्द, वे क़ियामत के दिन बहुत कम-नसीब होंगे। यानी दुनिया में जितनी दौलत ज़्यादा है क़ियामत में उसके हिसाब से आख़िरत की नेमतों में उनका हिस्सा दूसरों के मुक़ाबले में कम होगा, सिवाए उन दौलतमन्दों के जो अपनी दौलत को इस तरह ख़र्च करें, और इस तरह

ख़र्च करें। यानी मुट्ठियाँ भर-भर के अल्लाह के रास्ते में ख़ैरात करें। इसलिए जो ऐसा करेंगे वे तो महफ़ूज़ रहेंगे और जो ऐसा नहीं करेंगे तो फिर यह होगा कि जितनी दौलत ज़्यादा होगी आख़िरत में उतना ही कम हिस्सा होगा। और फिर फ़रमाया कि दुनिया में जिनके पास दौलत ज़्यादा है और वे दुनिया में ख़ैरात व सदकात करके आख़िरत में अपना हिस्सा बढ़ा लेते हैं। अल्लाह के यहाँ ऐसे लोगों की तायदाद बहुत कम है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म न टूटे

सारी बातें रास्ते में गुज़रते हुए हो रही थीं। फिर एक जगह पहुँचकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि तुम इस जगह ठहरो, मैं अभी आता हूँ। और उसके बाद रात के अंधेरे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहीं तशरीफ़ ले गए और मुझे पता नहीं चला कि आप कहाँ तशरीफ़ ले गए, यहाँ तक कि आप नज़रों से ओझल हो गए। उसके बाद मुझे कोई आवाज़ सुनाई दी। उस आवाज़ के नतीजे में मुझे यह ख़ौफ़ हुआ कि कोई दुश्मन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने आ गया हो और उसकी यह आवाज़ हो। इसलिए मैंने आपके पास जाने का इरादा किया लेकिन मुझे याद आया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि अपनी जगह से मत हिलना। ये थे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया कि अपनी जगह से मत हिलना और यहीं रहना, उसके बाद आवाज़ आने के नतीजे में यह ख़तरा भी हुआ कि कहीं कोई शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुक़सान न पहुँचा दे लेकिन हुज़ूर का इरशाद याद आ गया कि यहीं ठहरना, कहीं मत जाना, इसलिए मैं वहाँ बैठा रहा।

ईमान वाला जन्नत में ज़रूर जाएगा

थोड़ी देर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले आए तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने एक आवाज़ सुनी थी जिसकी वजह से

मुझे आपके ऊपर ख़तरा होने लगा था। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या तुमने वह आवाज़ सुनी थी? मैंने कहा, जी हाँ! मैंने वह आवाज़ सुनी थी। फिर आपने फ़रमाया कि वह आवाज़ असल में हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम की थी। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम मेरे पास तशरीफ़ लाए और उन्होंने यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि या रसूलल्लाह! आपकी उम्मत में से जो शख़्स भी इस हालत पर मर जाए कि उसने अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराया हो यानी कुफ़्र का कोई कलिमा न कहा हो बल्कि तौहीद (सिर्फ़ अल्लाह को माबूद मानने) की हालत में मर गया और तौहीद पर ईमान रखते हुए दुनिया से गुज़र गया तो वह ज़रूर जन्नत में जाएगा। अगर बुरे आमाल किये हैं तो बुरे आमाल की सज़ा पाकर जाएगा, लेकिन जन्नत में ज़रूर जाएगा।

हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने सवाल कियाः या रसूलल्लाह! चाहे उसने ज़िना किया हो और चोरी की हो, तब भी वह जन्नत में जाएगा? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि चाहे उसने ज़िना किया हो और चाहे उसने चोरी की हो।

मतलब यह है कि अगरचे उसने गुनाहों का जुर्म किया हो लेकिन दिल में ईमान है तो आख़िर में किसी न किसी वक़्त इन्शा-अल्लाह जन्नत में पहुँच जाएगा। अलबत्ता जिन गुनाहों का जुर्म किया, जो बद-आमालियाँ कीं उनकी सज़ा में पहले जहन्नम में जाएगा और उसको गुनाहों की सज़ा देने के लिए जहन्नम में रखा जाएगा। अगर बदकारी की थी, चोरी की थी, डाके डाले थे, ग़ीबत की थी, झूठ बोला था, रिश्वत ली थी, सूद खाया था। इन सब गुनाहों की सज़ा पहले जहन्नम में दी जाएगी, फिर ईमान की बदौलत इन्शा-अल्लाह आख़िर में किसी न किसी वक़्त जन्नत में पहुँच जाएगा।

गुनाहों पर जुर्रत मत करो

लेकिन कोई शख़्स यह न समझे कि चलो जन्नत की ख़ुशख़बरी मिल गई है कि आख़िर में तो जन्नत में जाना ही है। इसलिए ख़ूब गुनाह करते

जाओ, इसमें कोई हर्ज नहीं। ख़ूब सुन लीजिए! अभी आप पीछे एक हदीस में सुन आए हैं कि दुनिया के अन्दर ऐश व मस्ती और राहत व आराम में ज़िन्दगी गुज़ारने वाले को जहन्नम में सिर्फ़ एक ग़ोता दिया गया तो उस एक ग़ोते ने दुनिया की सारी खुशियाँ और सारे ऐश व आराम को भुला दिया। सारी दुनिया बे-हकीकत मालूम होने लगी, सारी खुशियाँ ग़ारत हो गईं और ऐसा मालूम होने लगा कि दुनिया में कोई खुशी और कोई राहत हासिल नहीं की। इसलिए जहन्नम के एक ग़ोते की भी किसी को सहार और बरदाश्त है? इसलिए यह हदीस हम लोगों को गुनाहों पर बहादुर न बनाए कि जन्नत में जाना ही है इसलिए गुनाह करते जाओ। अल्लाह तआला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

दुनिया में इस तरह रहो

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे कन्धों पर हाथ रखा। कन्धों पर हाथ रखना बड़ी शफ़कत, बड़ी मुहब्बत, बड़े प्यार का अन्दाज़ है। और इसके बाद फ़रमाया, दुनिया में इस तरह रहो जैसे अजनबी हो या रास्ते के राही और मुसाफ़िर हो। (बुख़ारी शरीफ़ हदीस 6416)

यानी जैसे मुसाफ़िर सफ़र के दौरान कहीं किसी मन्ज़िल पर ठहरा हुआ होता है तो वह यह नहीं करता कि उस मन्ज़िल ही की फ़िक्र में लग जाए और जिस मक़सद के लिए सफ़र किया था, वह मक़सद भूल जाए।

फ़र्ज़ कीजिए कि एक शख़्स यहाँ से लाहौर किसी काम के लिए गया। अब जिस मक़सद के लिए लाहौर आया था वह काम तो भूल गया और इस फ़िक्र में लग गया कि यहाँ अपने लिए मकान बना लूँ और यहाँ ऐश व आराम के साधन जुटा लूँ। उस शख़्स से ज़्यादा अहमक़ कौन होगा।

दुनिया एक "ख़ूबसूरत टापू" की तरह है

हज़रत इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अलैहि एक मिसाल बयान फ़रमाते हैं कि एक जहाज़ कहीं जा रहा था और वह पूरा जहाज़ मुसाफ़िरों से

भरा हुआ था। रास्ते में एक टापू आया तो जहाज़ के कप्तान ने उस टापू पर जहाज़ को रोक दिया ताकि आगे के सफ़र के लिए कुछ राशन और ज़रूरत का सामान ले लिया जाए। और उस कप्तान ने ऐलान कर दिया कि हमें चूँकि कुछ घन्टों के लिए इस टापू पर ठहरना है इसलिए अगर कोई मुसाफ़िर इस टापू पर उतरना चाहे तो उतर सकता है। हमारी तरफ़ से इजाज़त है। चुनाँचे जहाज़ पर जितने लोग सवार थे सब के सब उतर कर टापू की सैर के लिए चले गए।

टापू बड़ा शानदार और आकर्षक था। उसमें बहुत ख़ूबसूरत क़ुदरती मनाज़िर (दृश्य) थे। चारों तरफ़ क़ुदरती मनाज़िर का हुस्न व जमाल बिखरा हुआ था। लोग उन ख़ूबसूरत मनाज़िर से बहुत लुत्फ़ उठाते रहे यहाँ तक कि जहाज़ की रवानगी का वक़्त क़रीब आ गया। कुछ लोगों ने सोचा कि अब वापस चलना चाहिए; रवानगी का वक़्त आ रहा है।

चुनाँचे वे लोग जहाज़ पर वापस आ गए और जहाज़ की उम्दा, आला और आरामदेह जगहों पर क़ब्ज़ा करके बैठ गये। दूसरे ,कुछ लोगों ने सोचा कि यह टापू तो बहुत ख़ूबसूरत और बहुत ख़ुशनुमा है। हम थोड़ी देर और इस टापू में रहेंगे और लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे। चुनाँचे थोड़ी देर और घूमने के बाद ख़्याल आया कि कहीं जहाज़ रवाना न हो जाए और जहाज़ की तरफ़ दौड़े हुए आए। यहाँ आकर देखा कि जहाज़ की अच्छी और उम्दा जगहों पर क़ब्ज़ा हो चुका है। चुनाँचे उनको बैठने के लिए ख़राब और घटिया जगहें मिल गईं और वहीं बैठ गए और यह सोचा कि कम-से-कम जहाज़ पर तो सवार हो गए।

कुछ लोग और थे। उन्होंने सोचा कि यह टापू तो बड़ा शानदार है। यहाँ तो बहुत मज़ा आ रहा है, जहाज़ में मज़ा नहीं आ रहा था। इसलिए वे उस टापू पर रुक गए और उन ख़ूबसूरत क़ुदरती मनाज़िर में इतने बदमस्त हो गए कि उनको वापसी का ख़्याल भी भूल गया। इतने में जहाज़ रवाना हो गया और वे लोग उसमें सवार न हो सके।

दिन के वक़्त तो वह टापू बहुत ख़ुशनुमा मालूम हो रहा था और

उसके मन्ज़र बहुत हसीन मालूम हो रहे थे लेकिन जब शाम को सूरज छुप गया और रात सर पर आ गई तो वही ख़ूबसूरत टापू रात के वक़्त भयानक बन गया कि उस ख़ूबसूरत टापू में एक लम्हा गुज़ारना मुश्किल हो गया। कहीं दरिन्दों का ख़ौफ़, कहीं जानवरों का डर।

अब बताइये वह क़ौम जो टापू के हुस्न और ख़ूबसूरती में इतनी फ़रेफ़्ता हो गयी कि जो जहाज़ जा रहा था, उसको छोड़ दिया, वह क़ौम कितनी अहमक़ और बेवक़ूफ़ है।

यह मिसाल बयान करने के बाद इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि इस दुनिया की मिसाल उस टापू जैसी है। इसलिए इस दुनिया में दिल लगाकर बैठ जाना और इसकी ख़ुशनुमाइयों पर फ़रेफ़्ता हो जाना ऐसा ही है जैसे वह क़ौम जो उस टापू की ख़ुशनुमाइयों पर फ़रेफ़्ता हो गयी थी और जिस तरह उस टापू पर रहने वालों को सारी दुनिया अहमक़ और बेवक़ूफ़ कहेगी इसी तरह इस दुनिया पर दिल लगाने वालों को भी दुनिया अहमक़ और बेवक़ूफ़ कहेगी।

दुनिया सफ़र की एक मन्ज़िल है, घर नहीं

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में इस तरह रहो जैसे एक मुसाफ़िर रहता है और जैसे एक अजनबी आदमी रहता है। इसलिए कि यह दुनिया सफ़र की एक मन्ज़िल है। ख़ुदा जाने असली वतन की तरफ़ रवानगी का वक़्त कब आ जाए। एक हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:

"यह दुनिया उस शख़्स का घर है जिसका कोई घर न हो, और इसके लिए वह शख़्स जमा करता है जिसके पास अ़क़्ल न हो।

(मुस्नद अहमद जिल्द 6 पेज 71)

यानी क्या तुम इस दुनिया को अपना घर समझते हो? हालाँकि यह देखो कि इनसान का अपना घर कौनसा होता है? इनसान का अपना घर वह होता है जिसमें इनसान को मुकम्मल क़ब्ज़ा और इख़्तियार हासिल हो, उसके क़ब्ज़े में हो, उसकी मिल्कियत में हो। जिस वक़्त चाहे वह उसमें

रहे और उसमें दाख़िल होने से कोई न रोक सके और उसको उसमें से कोई बाहर न निकाल सके। वह असल में अपना घर होता है।

यही वजह है कि आप किसी दूसरे शख़्स के घर में दाख़िल होकर नहीं कह सकते कि यह मेरा घर है, इसलिए कि दूसरे के घर पर इख़्तियार और क़ब्ज़ा हासिल नहीं। और अपना घर वह है जिस पर क़ब्ज़ा और इख़्तियार हासिल हो।

अब आप सोचिए कि इस दुनिया के घर पर किस तरह का इख़्तियार आपको हासिल है? आपके इख़्तियार का यह हाल है कि जिस दिन आँख बन्द हुई उस दिन सारे घर वाले मिलकर आपको क़ब्र के गड्ढे में फेंक कर आ जाएँगे। अब उस घर से आपका कोई ताल्लुक़ नहीं। वह घर किसी भी वक़्त आप से छिन जाएगा और यह माल व दौलत भी किसी वक़्त आप से छिन जाएगा। इसलिए जिस घर पर इतना इख़्तियार भी आपको हासिल नहीं, उसको अपना घर कैसे समझते हो।

इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया उस शख़्स का घर है जिसको आख़िरत का घर मिलने वाला नहीं है, जो हमेशा रहने वाला है, जिस पर हमेशा क़ब्ज़ा रहेगा, वह घर कभी हाथ से निकलने वाला नहीं। इसलिए आख़िरत में जिसका घर न हो वह इस दुनिया को अपना घर बना ले।

दुनिया को दिल व दिमाग़ पर हावी न होने दो

फिर आगे दूसरा जुमला इरशाद फ़रमाया कि इसके लिए वह शख़्स माल व दौलत जमा करता है जिसको अ़क़्ल न हो। इन हदीसों से असल में यह बताना मक़सूद है कि इसमें ज़रूर रहो, लेकिन इसकी हक़ीक़त समझ कर रहो। इसको अपनी सोच और ख़्यालात पर हावी न होने दो, बल्कि यह समझो कि यह दुनिया रास्ते की एक मन्ज़िल है, जैसे-तैसे गुज़र ही जाएगी। लेकिन असल फ़िक्र आख़िरत की होनी चाहिए।

यह न हो कि सुबह से लेकर शाम तक इसी की धुन और ध्यान है। इसी की सोच और इसी की फ़िक्र है। यह मुसलमान का काम नहीं।

मुसलमान का काम तो यह है कि ज़रूरत भर दुनिया को अपनाए और ज़्यादा फ़िक्र आख़िरत की करे।

दिल में दुनिया होने की एक निशानी

दिल में दुनिया की मुहब्बत है या नहीं, इसकी पहचान और निशानी क्या है? इसकी पहचान यह है कि यह देखो कि सुबह से लेकर शाम तक तुम्हारी फ़िक्र और सोच क्या रहती है। क्या हर समय यह फ़िक्र रहती है कि ज़्यादा पैसे कहाँ से कमा लूँ? माल किस तरह जमा कर लूँ? क्या इसका ख़्याल भी आता है कि मुझे मरना भी है और अल्लाह तआला के सामने जवाब देना है।

अगर मरने का ख़्याल और आख़िरत का ख़्याल आता है फिर तो अल्हम्दु लिल्लाह! दुनिया की मुहब्बत की मज़म्मत (निन्दा) जो कुरआन व हदीस में बयान हुई है वह आपके दिल में नहीं है। हाँ! अगर सुबह से लेकर शाम तक दिल व दिमाग़ पर यही छाया हुआ है कि किस तरह दुनिया जमा कर लूँ तो फिर वह आख़िरत को भूले हुए है और दुनिया की मुहब्बत उसके दिल में बैठी हुई है।

एक सबक़ लेने वाला क़िस्सा

हज़रत शैख़ सअ़दी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने अपनी किताब "गुलिस्ताँ" में एक क़िस्सा लिखा है कि मैं एक बार सफ़र कर रहा था। सफ़र के दौरान मैं एक व्यापारी के घर ठहरा। उस व्यापारी ने सारी रात मेरा दिमाग़ चाटा और अपनी तिजारत (व्यापार) के क़िस्से मुझे सुनाता रहा कि फ़लाँ जगह मेरी तिजारत है, हिन्दुस्तान में फ़लाँ कारोबार है, ईरान में फ़लाँ चीज़ का कारोबार है वग़ैरह वग़ैरह। सारे क़िस्से सुनाने के बाद आख़िर में कहने लगा कि मेरी तमाम आरज़ुएँ तो पूरी हो गईं, मेरी तिजारत परवान चढ़ गयी है। अलबत्ता अब मेरा तिजारत के लिए एक आख़िरी सफ़र करने का इरादा है। आप दुआ कर दीजिए कि मेरा वह सफ़र कामयाब हो जाए तो उसके बाद क़नाअ़त की ज़िन्दगी इख़्तियार कर लूँगा और बाक़ी ज़िन्दगी दुकान पर बैठकर गुज़ारूँगा।

शैख़ सअ्दी रहमतुल्लाहि अलैहि ने उससे पूछा कि वह आख़िरी सफ़र कहाँ का है? उसने जवाब दिया कि मैं यहाँ से फलाँ सामान ख़रीद कर चीन जाऊँगा, वहाँ उसको बेचूँगा। फिर चीन से चीनी शीशा ख़रीदकर रूम लेजा कर बेचूँगा इसलिए कि चीनी शीशा रूम में अच्छे दामों में बिकता है। फिर रूम से फलाँ सामान लेकर इस्कन्दरिया जाऊँगा और वहाँ उसको बेचूँगा। फिर इस्कन्दरिया से कालीन हिन्दुस्तान लेजा कर बेचूँगा और हिन्दुस्तान से गिलास ख़रीद कर हल्ब लेजा कर बेचूँगा वग़ैरह वग़ैरह। इस तरह उसने सारी दुनिया के लम्बे सफ़र का मन्सूबा पेश किया और कहा कि दुआ करो कि मेरा यह मन्सूबा किसी तरह पूरा हो जाए तो उसके बाद बाक़ी ज़िन्दगी क़नाअ्त के साथ अपनी दुकान पर गुज़ारूँगा। यानी यह सब कुछ करने के बाद भी बाक़ी की ज़िन्दगी दुकान पर गुज़ारेगा।

शैख़ सअ्दी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि यह सब कुछ सुनने के बाद मैंने उससे कहा कि:

तुमने यह क़िस्सा सुना है कि ग़ौर (शहर) के जंगल में एक बहुत बड़े सौदागर का सामान उसके ख़च्चर से गिरा हुआ पड़ा था और वह सामान अपनी ज़बाने हाल से यह कह रहा था कि दुनियादार की तंग निगाह को या तो क़नाअ्त (जो अल्लाह ने दिया है उसी पर सब्र व शुक्र) भर सकती है या क़ब्र की मिट्टी भर सकती है। उसकी तंग निगाह को कोई तीसरी चीज़ पुर नहीं कर सकती।

शैख़ सअ्दी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि जब यह दुनिया इनसान के ऊपर मुसल्लत हो जाती है तो उसके दिल में दुनिया के सिवा दूसरा ख़्याल नहीं आता। यह है "दुनिया की मुहब्बत" जिससे मना किया गया है। अगर यह "दुनिया की मुहब्बत" न हो और फिर अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से माल दे दे और उस माल के साथ दिल अटका हुआ न हो और वह माल अल्लाह तआ़ला के अहकाम की पैरवी में रुकावट न बने बल्कि वह माल अल्लाह तआ़ला के अहकाम बजा लाने में

ख़र्च हो तो फिर वह माल दुनिया नहीं है, बल्कि वह माल भी आख़िरत का सामान है। लेकिन अगर उस माल के ज़रिये आख़िरत के कामों में रुकावट पैदा हो गयी तो वह "दुनिया की मुहब्बत" है जिससे रोका गया है। यह सारी तफ़सील का खुलासा है।

दुनिया की मुहब्बत दिल से निकालने का तरीका

अलबत्ता "दुनिया की मुहब्बत" को दिल से निकालने और आख़िरत की फ़िक्र दिल में पैदा करने का रास्ता यह है कि चौबीस घन्टे में थोड़ा-सा वक़्त निकाल कर इस बात का मुराक़बा (ध्यान और ग़ौर व फ़िक्र) किया करो। हम लोग ग़फ़लत में दिन रात गुज़ार रहे हैं। मरने से ग़ाफ़िल हैं। अल्लाह तआला के सामने पेश होने से ग़ाफ़िल हैं। हिसाब व किताब से ग़ाफ़िल हैं। जज़ा व सज़ा से ग़ाफ़िल हैं। आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं। इसलिए थोड़ा-सा वक़्त निकाल कर हर शख़्स मुराक़बा किया करे कि एक दिन मरूँगा, किस तरह अल्लाह तआला के सामने मेरी पेशी होगी? क्या सवाल होंगे और मुझे क्या जवाब देना होगा? इन सब बातों को सोचे। हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि अगर कोई आदमी रोज़ाना इन बातों का मुराक़बा किया करे तो कुछ ही हफ़्तों में इन्शा-अल्लाह वह यह महसूस करेगा कि दुनिया की मुहब्बत दिल से निकल रही है। अल्लाह तआला अपनी रहमत से मुझे और आप सब को इस पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

सच्ची तलब पैदा करें
फ़ुज़ूल सवालात और बहस व मुबाहसे से बचें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰۤى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًاo اَمَّا بَعْدُ!

عن وراد قال: كتب المغيرة الى معاوية سلام عليك، اما بعد! فاني سمعت رسول الله عليه وسلم يقول: إن الله حرم ثلاثا و نهى عن ثلاث، حرم حقوق الوالد و وأدت البنات ولا وهات، و نهى عن ثلاث قيل وقال و كثرة السؤال واضاعة المال (مسلم: باب النهى عن كثرة المسائل من غير حاجة ج٢ ص٧٦)

छोटे से इल्म सीखना

एक बार हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ख़त लिखा कि मुझे कोई ऐसी बात लिखकर भेजिए जो आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुनी हो। हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु शाम के हाकिम थे। और बाद में पूरी इस्लामी दुनिया के ख़लीफ़ा बन गए। और हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा

रज़ियल्लाहु अन्हु एक ख़ास इलाक़े के गवर्नर थे। दोनों सहाबी हैं। हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु भी सहाबी हैं और हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु भी सहाबी हैं लेकिन हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा को ख़त लिखा जो बज़ाहिर उनके मातेहत हैं।

उस ख़त में यह लिखा कि आप मुझे कुछ ऐसी बातें लिखकर भेजिए जो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आपने सुनी हों। अब ज़रा ग़ौर फ़रमाएँ कि एक तरफ़ हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुद सहाबी हैं और सहाबी भी वह कातिबे वह्य हैं। यानी उन सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से हैं कि जब कोई 'वह्य' (अल्लाह का पैग़ाम) नाज़िल होती और क़ुरआन करीम नाज़िल होता तो नब करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिन सहाबा किराम को क़ुरआन करीम लिखवाया करते थे उनमें से हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। तो ख़ुद सहाबी हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत उठाई है। आपकी बातें सुनी हैं, इसके बावजूद दूसरे सहाबी से मोहताज बनकर पूछ रहे हैं कि आपने जो कुछ बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हो वह मुझे बताईए।

इल्म के लिए इच्छा और ज़रूरत का इज़हार चाहिये

आज अगर कोई दो आदमी एक रुतबे के हों। एक ही उस्ताद के शागिर्द हों। एक ही शैख़ के मुरीद हों। दोनों ने अपने-अपने उस्ताद और शैख़ की सोहबतें उठाई हों तो हर एक अपने को दूसरे से बेनियाज़ समझता है कि मुझे भी वही बात हासिल है जो इस दूसरे को हासिल है। लेकिन हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन अपने आपको इस मामले में हमेशा मोहताज समझते थे। क्योंकि हो सकता है कि दूसरे ने कोई ऐसी बात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुन ली हो जो मैं नहीं सुन सका। इसलिए हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुग़ीरा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि तुमने जो बात नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हो वह मुझे बताएँ ताकि मेरे इल्म में

इज़ाफ़ा हो। मालूम हुआ कि इल्म न किसी की जागीर है और न किसी की जायदाद, और न कोई शख़्स इल्म के मामले में कभी बेनियाज़ हो सकता है। हमेशा इनसान को तालिबे इल्म रहना चाहिये कि हर वक़्त उसके अन्दर यह तलब रहे और यह जुस्तजू रहे कि मेरे इल्म में इज़ाफ़ा हो चाहे इसके लिए मुझे किसी छोटे ही से रुजू करना पड़े। लेकिन उसके ज़रिये अगर मेरे इल्म में इज़ाफ़ा हो जाए तो यह मेरे लिए सआदत (सौभगय) की बात है। इसलिए कभी इल्म के मामले में और दीन के मामले में अपने आप को बेनियाज़ (बेपरवाह) नहीं समझना चाहिए।

जो लोग अपने आपको बड़ा आलिम समझते हैं कि हमने बड़ा इल्म हासिल कर लिया, उनके अन्दर यह रोग और बीमारी होती है कि वे दूसरे से इल्म हासिल करने के मामले में अपने आप को बेनियाज़ समझते हैं कि मुझे उसके पास जाने की क्या ज़रूरत है? मुझे उससे पूछने की क्या ज़रूरत है? लेकिन अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि कभी-कभी छोटे के दिल पर वह बात जारी फ़रमा देते हैं जो बड़ों के दिल में नहीं आती।

हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि और इल्म की तलब

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि (मुफ़्ती-ए-आज़म पाकिस्तान) जिनकी सारी उम्र पढ़ने-पढ़ाने में गुज़री। दारुल उलूम देवबन्द में पढ़ा और वहीं पढ़ाया। वहाँ दारुल-इफ़्ता के 'सदर मुफ़्ती' रहे। एक दिन फ़रमाने लगे कि:

"मैं जब कभी कहीं जा रहा होता हूँ और देखता हूँ कि कहीं कोई वाईज़ (दीनी बयान करने वाला) वअ़ज़ कह रहा है, तक़रीर कर रहा है, चाहे कितनी ही जल्दी में हूँ लेकिन थोड़ी देर को उसकी बात सुनने के लिए ज़रूर खड़ा हो जाता हूँ। इसलिए कि क्या पता अल्लाह तआला उसकी ज़बान पर कोई ऐसी बात जारी फ़रमा दे जो मेरे लिए फ़ायदेमन्द हो जाए।"

यह कौन कह रहा है? पाकिस्तान के सबसे बड़े मुफ़्ती, जिनके पास

लोग दिन-रात दीन हासिल करने के लिए आते हैं। बड़े-बड़े उलमा अपनी मुश्किलात को हल करने के लिए आते हैं। यह है इल्म की तलब। हालाँकि आम तौर पर उनके ज़माने में जो वाईज़ वअ़ज़ कहा करते थे वे सब उनके छोटे, उनके शागिर्द या शागिर्दों के शागिर्द या शागिर्दों के शागिर्दों के शागिर्द होते थे, लेकिन इसलिए थोड़ी देर के लिए खड़े हो जाते थे कि शायद उनके मुँह से अल्लाह तआ़ला कोई ऐसी बात कहलवा दे जो मेरे इल्म में न हो और उससे मुझे फ़ायदा पहुँचे।

हज़रत मुफ़्ती-ए-आज़म का सुनहरा कौल

और फिर फ़रमाया कि:

"भाई! दर हकीक़त इल्म अ़ता करना और फ़ायदा पहुँचाना, यह न उस्ताद का काम है, न वाईज़ का काम है, न मुक़र्रिर का काम है। यह तो किसी और की अ़ता है। इल्म तो वह (अल्लाह) देने वाला है। वह किसी भी ज़रिये से दे दे। किसी को भी वास्ता बना दे। अगर कोई आदमी तालिब बनकर सच्ची तलब लेकर जाता है तो अल्लाह तआ़ला उस्ताद के दिल पर ऐसी बात जारी फ़रमा देते हैं जो उसके लिए फ़ायदेमन्द होती है। वरना किस में मजाल है कि वह दूसरे को कोई नफ़ा पहुँचा दे। कायनात में कोई आदमी ऐसा नहीं है जो अपनी ज़ात से दूसरे को फ़ायदा पहुँचा दे जब तक कि अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ न हो। और जब तक अल्लाह तआ़ला इरादा न फ़रमाएँ। वह अगर चाहें तो एक जुमले से फ़ायदा पहुँचा दें और वह न चाहें तो लम्बी-चौड़ी तक़रीरें बेकार रह जाएँ।"

इसी लिए हमेशा हमारे बुज़ुर्गों का यह कहना रहा है कि:

"तालिब की तलब की बरकत से कहने वाले के दिल में और उसकी ज़बान पर अल्लाह तआ़ला ऐसी बात जारी फ़रमा देते हैं कि सुनने वालों के लिए फ़ायदेमन्द हो जाती है।"

हज़रत थानवी की मजलिस की बरकतें

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि

अलैहि (अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाए, आमीन) उनके बारे में यह बात मशहूर थी कि उनकी मजलिस में जाने वाले अगर दिल में कोई खटक लेकर जाएँ या कोई सवाल लेकर जाएँ और फिर चाहे हज़रत की मजलिस में जाकर वैसे ही ख़ामोश बैठ जाएँ, अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से उनकी ज़बान पर वह बात जारी हो जाएगी और खटक दूर हो जाएगी। चुनाँचे हज़रत थानवी ने एक दिन खुद फ़रमाया कि:

"लोग समझते हैं कि यह मेरी करामत (चमत्कार) है कि मेरी ज़बान से उनके सवालात का जवाब मिल जाता है। फ़रमाया कि असल बात यह है कि सवाल का जवाब देना और सवाल करने वाले की तसल्ली करना यह तो अल्लाह तआला का काम है। जब कोई बन्दा तालिब बनकर जाता है तो अल्लाह तआला कहने वाले के दिल में खुद से वह बात डाल देते हैं। वह यह समझता है कि उसको मेरे सवाल का पता चल गया है और उसने यह बात कह दी। और कभी-कभी हद से आगे बढ़कर उसके बारे में लोग यह कहना शुरू कर देते हैं कि उसको कश्फ़ होता है, कोई इल्हाम होता है, कोई ग़ैब का इल्म हासिल है (अल्लाह की पनाह) हालाँकि किसी को न कुछ ग़ैब का इल्म है और न अपनी ज़ात के अन्दर किसी को नफ़ा पहुँचाने की ताक़त है, बल्कि अल्लाह तआला तालिब की तलब की बरकत से उसकी ज़बान पर वह बात जारी फ़रमा देते हैं।"

बहरहाल यह तलब बड़ी चीज़ है।

मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि:

"पानी कम ढूँढो, प्यास ज़्यादा पैदा करो। जब प्यास ज़्यादा पैदा होगी तो अल्लाह तआला ऊपर और नीचे से तुम्हारे लिए पानी उबाल देंगे।"

तो यह प्यास बड़ी अजीब व ग़रीब चीज़ है। जब अल्लाह तआला किसी को अता फ़रमा देते हैं तो फिर अल्लाह तआला विभिन्न तरीक़ों से उसकी प्यास को बुझाने का सामान फ़रमा देते हैं। लेकिन असल चीज़ तलब है।

आग माँगने का वाक़िआ

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की इसकी मिसाल देते थे कि एक औरत थी। उसके घर में आग की ज़रूरत थी। पहले ज़माने में आग जलाना एक मसला होता था। अब तो ज़रा-सा चूल्हे का बटन दबाया और आग जल गयी। लेकिन पहले ज़माने में आग जलाना एक मसला होता था। पहले जंगल से लकड़ियाँ जमा करके लाओ, फिर उनको जलाओ। फूंकनी से उसके अन्दर फूँक मारो, जब जाकर कहीं आग सुलगती थी और इसमें काफ़ी समय लग जाता था। तो औरतें यह करती थीं कि जब आग की ज़रूरत होती और अपने घर में आग न होती तो अपनी पड़ोसन से माँग लेती थीं कि बहन! अगर तुम्हारे यहाँ आग जल रही हो तो एक अंगारा दे दो, फिर वह कड़छे में आग लेकर अपने चूल्हे को जला लिया करती थी।

बहरहाल! उस औरत ने अपनी पड़ोसन से कहा कि बीबी! मेरे घर में आग ख़त्म हो गयी है अगर तुम्हारे घर में आग हो तो दे दो। पड़ोसन ने कहा कि बीबी! मैं ज़रूर दे देती मगर मेरा चूल्हा तो ख़ुद ही ठंडा है, चूल्हे में आग नहीं है। माँगने वाली ने कहा अगर इजाज़त दो तो मैं ज़रा राख को कुरेद कर देख लूँ। हो सकता है कोई चिंगारी मिल जाए। पड़ोसन ने कहा कि हाँ! देख लो। चुनाँचे उस औरत ने चूल्हे की राख को कुरेद कर देखा तो अन्दर एक छोटी-सी चिंगारी मिल गयी। उस औरत ने कहा कि मुझे तो चिंगारी मिल गयी, मेरा मक़सद हासिल हो गया और मैं इससे अपना काम चला लूँगी। वह लेकर चली गयी और जाकर उससे आग जला ली।

तलब की चिंगारी पैदा करो

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि देखो! उसने जब चूल्हे को कुरेदा तो कुरेदने के नतीजे में अन्दर से चिंगारी निकल आई और उससे आग बन गयी। लेकिन अगर कोई मामूली-सी चिंगारी भी न होती तो फिर उसको हज़ार कुरेदती रहती

मगर उससे कुछ भी न बनता और न आग सुलगती। लेकिन चूँकि चिंगारी थी तो उसको कुरेदने से और उसको ज़रा-सा दूसरी लकड़ियों पर इस्तेमाल करने से वह आग बनकर भड़क गयी और पूरा चूल्हा जल पड़ा।

हज़रत फ़रमाते हैं कि जब कोई शख़्स किसी उस्ताद या शैख़ के पास जाता है तो अगर अन्दर चिंगारी है तो शैख़ उसको कुरेद कर उसको आग बना देगा। लेकिन अगर अन्दर चिंगारी ही नहीं है तो वह शैख़ या उस्ताद हज़ार कुरेदता रहे और हज़ार उसके अन्दर मेहनत करता रहे मगर चूँकि अन्दर चिंगारी है नहीं, इसलिए वह आग नहीं बनती। और यह चिंगारी तलब की चिंगारी है, जुस्तजू की चिंगारी है।

अगर इनसान के अन्दर इल्म हासिल करने की तलब हो, उसके बाद वह उस्ताद के पास जाएगा तो वह कुरेदेगा तो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से वह चिंगारी आग बन जाएगी। लेकिन अगर तलब ही न हो तो कुछ भी नहीं होगा। तो यह असल अल्लाह तआ़ला की सुन्नत है कि जब कोई बन्दा किसी के पास तलब लेकर जाता है तो देने वाले तो वह हैं, दिल पर वह जारी फ़रमा देते हैं।

सबक़ के दौरान तलब दिखाई देती है

जो लोग दीन के उलूम पढ़ाते हैं उनको इस बात का तजुर्बा है। जैसे रात को अगले दिन पढ़ाने वाले सबक़ को पढ़ा, उसकी तैयार की। तैयार करके दर्सगाह में गए। जब पढ़ाना शुरू किया तो ऐन सबक़ के दौरान ऐसी बात दिल में आती है कि रात को घन्टों तैयारी करने के बावजूद ज़ेहन में नहीं आती थी। लेकिन पढ़ाते-पढ़ाते ज़ेहन में आ गई। वह कहाँ से आई है? वह किसी तालिब की तलब की बरकत होती है कि कोई तालिब सच्ची तलब लेकर आया था अल्लाह तआ़ला ने उसकी बरकत से वह बात दिल में डाल दी जो खुद से समझ में नहीं आ रही थी। इसी लिए हज़रत वालिद साहिब फ़रमाते थे कि भाई! जब कोई शख़्स वअ़ज़ (दीनी तक़रीर) कह रहा हो तो अपने आपको बेनियाज़ न समझो। क्या पता अगर तुम सच्ची तलब लेकर गए तो उसकी ज़बान से अल्लाह ऐसी

बात जारी फरमा दें जो तुम्हारे लिए नफ़े का सामान बन जाए।

कलाम में तासीर अल्लाह की तरफ़ से होती है

एक और बात हज़रत फ़रमाते थे। वह यह कि यह भी अल्लाह तआला की तरफ़ से मामला होता है कि किसी वक़्त किसी बात में अल्लाह तआला ऐसी तासीर फ़रमा देते हैं कि उस बात में दूसरे वक़्त में वह तासीर नहीं होती। वह भी किसी तालिब की बरकत है। किसी ने एक वक़्त में एक जुमला कहा, उसका ऐसा असर हुआ कि दिल पलट गया। वही जुमला कोई दूसरा आदमी किसी दूसरे वक़्त में कह दे तो कभी-कभी उसका वह असर ज़ाहिर नहीं होता। तो क्या पता मैं जिस वक़्त जा रहा हूँ उस वक़्त अल्लाह तआला उसकी ज़बान पर कोई ऐसी बात जारी फ़रमा दें जो उस लम्हे में मेरे लिए असरदार हो।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ का वाकिआ

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि आज हम जिनको औलिया-अल्लाह में शुमार करते हैं। चुनाँचे औलिया-ए-किराम का जो शजरा है उसमें फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रहमतुल्लाहि अलैहि सरे-फ़हरिस्त आते हैं। दर असल यह डाकू थे। डाके डाला करते थे। और ऐसे डाकू थे कि माएँ बच्चों को डराया करती थीं कि बेटा सो जाओ वरना कहीं फ़ुज़ैल न आ जाए। और क़ाफ़िले गुज़रते थे और यह क़ाफ़िलों को लूटते थे और क़ाफ़िले वाले जब कहीं पडाव डालते तो कहते थे कि यह फ़ुज़ैल का इलाक़ा है। कहीं ऐसा न हो कि फ़ुज़ैल या उसके आदमी आकर हमें लूट लें। एक दिन किसी के घर पर डाका डालने के लिए गए। रात का आख़िरी वक़्त था। वहाँ अल्लाह का कोई बन्दा कुरआन पाक की तिलावत कर रहा था। कुरआन करीम की तिलावत करते हुए यह आयत पढ़ी किः

तर्जुमाः क्या ईमान वालों के लिए अब भी वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के आगे पसीज जाएँ और अल्लाह ने जो हक़ बात नाज़िल फ़रमाई है उसके आगे वे अपने आपको (अपने सरों को) झुका दें। क्या अब भी वक़्त नहीं आया। (सूरः हदीद आयत 16)

डाका डालने जा रहे हैं और डाका डालने के लिए कमन्द लगाई हुई है। कान में कुरआन करीम की यह आयत पड़ गयी। बस उस लम्हे में अल्लाह तआला ने क्या तासीर रखी थी। हालाँकि हज़ार बार खुद भी यह आयत पढ़ी होगी। आख़िर को मुसलमान थे। कुरआन पढ़ा ही होगा। लेकिन उस वक़्त में जब उस आदमी की ज़बान से यह आयते करीमा सुनी तो उसने एक इन्क़िलाब बर्पा कर दिया। उसी वक़्त उसी लम्हे दिल में आया कि मैं डाका डालना और सारे ग़लत काम छोड़ता हूँ और वहीं से यह कहते हुए वापस हुए किः

तर्जुमाः बेशक ऐ परवर्दिगार! अब वह वक़्त आ गया।

और सारा डाका छोड़ दिया। फिर अल्लाह तआला ने वह मुक़ाम बख़्शा कि इतने बड़े औलिया में से हैं कि आज सारे औलिया-अल्लाह का शजरा उनसे जाकर मिलता है।

किस लम्हे में किस आदमी की ज़बान से निकली हुई कौनसी बात असर कर जाए, यह इनसान पहले से अन्दाज़ा नहीं कर सकता। इसलिए कभी भी अपने आपको किसी दूसरे की नसीहत से बेनियाज़ न समझें। क्या मालूम अल्लाह तआला किस बात से इस्लाह फ़रमा दें। यही मामला हज़रात सहाबा किराम का था।

अब देखिए कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु बावजूद ऊँचे दर्जे पर होने के अपने मातेहत को ख़त लिख रहे हैं कि मुझे कोई ऐसी बात लिखिए जो आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुनी हो।

जो बात दिल से निकलती है, वह दिल पर असर करती है

उनके जवाब में हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी यह तकल्लुफ़ नहीं किया कि हज़रत! आप तो मुझसे बड़े आलिम हैं। आपको मैं क्या लिखूँ बल्कि मैं ज़्यादा मोहताज हूँ आप मुझे लिखिए। इस क़िस्म के अलफ़ाज़ नहीं लिखे बल्कि यह सोचा कि जो मेरे इल्म में है वह मैं बता देता हूँ। चुनाँचे उन्होंने भी ख़त में लिख दिया। अब सुनिए क्या हदीस लिखीः

हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जो इरशाद ख़त में लिखकर भेजा वह तीन लाईनें भी पूरी नहीं हैं, बल्कि ढाई लाईनों में आया है। आम तौर पर अगर कोई आदमी सोचे कि एक बड़ा आदमी मुझे कह रहा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद मुझे लिखकर भेजो तो यह इतना बड़ा आदमी है उसको छोटी-सी बात लिखकर क्या भेजूँ? कोई लम्बी-चौड़ी तक़रीर हो। कोई लम्बा-चौड़ा बयान हो। कोई लम्बे-चौड़े इरशादात हों। लेकिन उन्होंने ढाई लाईनों में मुख़्तसर-सी बात लिखकर भेज दी कि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह बात सुनी है। और हज़रत मुआविया भी मुत्मईन हो गए। क्यों? इसलिए कि एतिबार इसका नहीं है कि कितनी लम्बी बात कही जा रही है, कितना वक़्त लिया जा रहा है। एतिबार इसका है कि क्या बात कही जा रही है? वह बात मुख़्तसर ही सही लेकिन फ़ायदेमन्द है तो उसको इनसान पल्ले बाँध ले और उस पर अमल करे तो उसकी नजात हो जाएगी। लम्बी-चौड़ी तक़रीरों की ज़रूरत नहीं, लम्बे-चौड़े बयानों की भी ज़रूरत नहीं।

इसलिए अगर पूछने वाले के दिल में तलब हो और कहने वाले के दिल में इख़्लास (नेक-नीयती) हो तो अल्लाह तआला एक जुमले से फ़ायदा पहुँचा देते हैं। और अगर (खुदा न करे) सुनने वाले के दिल में तलब न हो, या कहने वाले के दिल में इख़्लास न हो तो घन्टों तक़रीर करते रहो। एक कान से बात दाख़िल हो जाएगी दूसरे कान से निकल जाएगी। दिल पर असर नहीं डालेगी। लेकिन जब इख़्लास हो तो छोटी बात भी कारामद हो जाती है।

मुख़्तसर हदीस के ज़रिये नसीहत

चुनाँचे हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह छोटी-सी हदीस बतौर नसीहत लिखकर भेज दी कि:

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छह चीज़ों से मना फ़रमाया करते थे। मक़सद यह था इनको अगर पल्ले बाँध लोगे तो इन्शा-अल्लाह

इससे आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद का फ़ायदा पहुँच जाएगा। वे छह चीज़ें क्या हैं, जिनसे मना फ़रमाया?

छह चीज़ें

वे छह चीज़े ये हैं:

1. हुज्जत बाज़ी से और फ़ुज़ूल बहस मुबाहसे से मना फ़रमाते थे।

2. और माल को ज़ाया करने से मना फ़रमाते थे।

3. और सवाल की कसरत से कि हर वक़्त आदमी सवाल ही करता रहे, इससे मना फ़रमाते थे।

4. और इससे मना फ़रमाते थे कि आदमी दूसरों को दे नहीं और खुद माँगता रहे।

5. और माँओं की नाफ़रमानी से मना फ़रमाते थे।

6. और लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न करने से मना फ़रमाते थे।

ये छह चीज़ें लिखकर हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने भेजीं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन छह चीज़ों से मना फ़रमाया है। अब इन छह चीज़ों की थोड़ी-सी तफ़सील सुन लीजिए।

पहली चीज़- फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसा

पहली चीज़ जिससे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है वह हुज्जत बाज़ी है। यानी फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसा जिसका कोई नतीजा बरामद नहीं होता। इसी में फ़ुज़ूल बातचीत भी दाख़िल है। यह ऐसी चीज़ है कि जिससे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया। अब बज़ाहिर तो यह कोई गुनाह की बात नहीं हो रही, वक़्त गुज़ारी हो रही है और फ़ुज़ूल बातचीत हो रही है, बहस मुबाहसा किसी बात पर चल रहा है।

वक़्त की क़द्र करो

लेकिन इसलिए मना फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हमें और आप को जो ज़िन्दगी अता फ़रमाई है, उसका एक-एक लम्हा बड़ी क़ीमती दौलत

है। एक-एक लम्हा उसका बड़ा कीमती है। कुछ पता नहीं कब यह ज़िन्दगी छिन जाए और कब ख़त्म हो जाए। और यह इसलिए मिली है ताकि इनसान इस ज़िन्दगी के अन्दर अपनी आख़िरत की बेहतरी का सामान करे। जिस इनसान के अन्दर ज़रा भी अक़्ल होगी वह अपनी ज़िन्दगी के लम्हात को और इस कीमती दौलत को असल मक़सद के हासिल करने के लिए ख़र्च करेगा और बेकार और फ़ालतू कामों में ख़र्च करने से बचेगा।

अब फ़र्ज़ करो कि अगर किसी ने ऐसा काम कर लिया या वक़्त को ऐसे काम में ख़र्च कर लिया जिसका फ़ायदा न दुनिया में है न दीन में है, तो बज़ाहिर तो लगता है कि कोई गुनाह का काम नहीं किया, लेकिन उसी वक़्त को अगर वह सही मौक़े में ख़र्च करता तो आख़िरत की कितनी नेकियाँ और कितना अज्र व सवाब जमा कर लेता।

बोलने की ताक़त अल्लाह की बड़ी नेमत है

इसी तरह अल्लाह तआला ने हमें और आपको गोयाई (बोलने) की ताक़त अता फ़रमाई है। यह इतनी बड़ी नेमत है कि सारी उम्र इनसान सज्दे में पड़ा रहे तो भी इसका शुक्र अदा न हो। उन लोगों से पूछो जो इस गोयाई की ताक़त से मेहरूम हैं, जो बोलना चाहते हैं मगर बोल नहीं सकते। उनके दिल में जज़्बात पैदा होते हैं, उनके दिल में उमंगें पैदा होती हैं कि अपने जज़्बात के इज़हार के लिए कुछ कह दें मगर कहने से मेहरूम हैं। उनसे पूछो यह कितनी बड़ी नेमत है। अल्लाह तआला ने हमें और आपको यह नेमत अता फ़रमाई है। और यह नेमत ऐसी है कि इनसान अगर इसको सही जगह में ख़र्च करे तो नेकी का पलड़ा भर जाता है और कितना अज्र व सवाब हासिल होता है। और इसी को इनसान अगर ग़लत काम में ख़र्च करे जैसे गुनाह की बात में, झूठ में, ग़ीबत में, किसी का दिल दुखाने में तो यह चीज़ ऐसी है कि इसके बारे में हदीस में आता है कि:

"इनसान को जहन्नम के अन्दर औंधे मुँह गिराने वाली कोई चीज़ इससे ज़्यादा सख़्त नहीं है जितनी इनसान की ज़बान है।"

यह ज़बान सबसे ज़्यादा इनसान को औंधे मुँह गिराएगी। अगर ज़बान काबू में नहीं है, झूठ बात ज़बान से निकल रही है, ग़ीबतें निकल रही हैं, दिल दुखाने वाली बातें निकल रही हैं तो वह इनसान को जहन्नम में ले जाएगी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहत

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जो हम पर माँ-बाप से ज़्यादा शफ़ीक़ व मेहरबान हैं। वह फ़रमाते हैं कि अगर तुमने इस ज़बान को फ़ुज़ूल बहस-मुबाहसे में ख़र्च करना शुरू कर दिया, जिसका न दुनिया में फ़ायदा है न आख़िरत में फ़ायदा है, तो तुम एक बड़ी दौलत को बिना वजह बरबाद करने वाले होगे। क्योंकि जब इनसान बहस व मुबाहसे में पड़ेगा तो कभी झूठ भी निकलेगा, ग़ीबत भी होगी, कभी और भी बातें होंगी और फ़ुज़ूल बातों में लगा होगा तो गुनाह में भी मुब्तला होगा, और इसका नतीजा यह होगा कि इनसान सही जगह पर ज़बान इस्तेमाल करने से मेहरूम होता चला जाएगा। इसलिए हुज्जत बाज़ी और फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसे से बचो।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और बुज़ुर्गाने दीन का तरीक़ा

हज़रात सहाबा किराम में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात की वजह से फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसे का कोई तसव्वुर न था। वह इस बात पर अमल करते थे कि:

"या तो अच्छी बात कहो वरना ख़ामोश रहो।"

चुनाँचे वे फ़ुज़ूल बातों के अन्दर पड़ते नहीं थे। और हमारे जो बुज़ुर्ग औलिया-अल्लाह गुज़रे हैं उनके यहाँ जब कोई इस्लाह (अपना सुधार) कराने जाता था तो इस्लाह के अन्दर पहला क़दम यह होता था कि ज़बान क़ाबू में करो और फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसे से बचो।

इस्लाह का एक वाक़िआ

पहले भी शायद आपको यह वाक़िआ सुनाया था कि हज़रत मिर्ज़ा

मज़हर जाने-जानाँ रहमतुल्लाहि अलैहि जो बड़े दर्जे के औलिया-अल्लाह में से थे। देहली में उनकी बड़ी शोहरत थी। अल्लाह तआला ने उनसे दीन का बड़ा फ़ैज़ फैलाया। दो तालिब इल्म आपकी शोहरत सुनकर हाज़िर हुए। हज़रत से बैअत होने और इस्लाह (अपना सुधार) कराने का इरादा था। जब हज़रत की मस्जिद में पहुँचे तो नमाज़ का वक़्त हो रहा था, तो वुज़ू करने बैठ गए। एक तालिब दूसरे तालिब से कहने लगा कि यह हौज़ जिससे हम वुज़ू कर रहे हैं यह बड़ा है या वह जो हमारे बल्ख़ (शहर) में है? तो दूसरे ने कहा कि वह बल्ख़ वाला बड़ा है। उसने कहा कि मेरे ख़्याल में यह देहली का हौज़ बड़ा है।

अब इस बात पर दोनों के बीच दलीलों का तबादला शुरू हुआ। एक कह रहा है वह बड़ा है दूसरा कह रहा है यह बड़ा है। हज़रत मिर्ज़ा साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि भी वहीं वुज़ू फ़रमा रहे थे। उन्होंने देखा कि ये दोनों आदमी इस तरह बहस कर रहे हैं। जब नमाज़ हो गयी तो ये हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हज़रत ने सवाल किया कि कैसे आना हुआ? उन्होंने कहा कि हज़रत आप से इस्लाही ताल्लुक़ क़ायम करने और बैअत होने के लिए हाज़िर हुए हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि पहले यह तय कर लो कि हमारी मस्जिद का हौज़ बड़ा है या बल्ख़ का हौज़ बड़ा है। यह मसला तय कर लो तो फिर आगे बात चले। अब वे बड़े शर्मिन्दा हुए। लेकिन हज़रत ने फ़रमाया कि जब तक यह अहम मसला तय न हो उस वक़्त तक बैअत करना बेकार है। इसलिए पहले इस हौज़ को नापो, पैमाईश करो और फिर वापस जाकर उस हौज़ को नापो। उसके बाद फ़ैसला करो कि यह बड़ा है या वह बड़ा है। जब यह काम कर लोगे तो फिर तुम्हें बैअत करेंगे।

और फिर फ़रमाया कि तुम्हारी इस बातचीत से दो बातें मालूम हुईं। एक यह कि फ़ुज़ूल बहस मुबाहसा करने की आदत है जिसका कोई मौक़ा नहीं। और दूसरी बात यह कि बात में तहक़ीक़ नहीं। आपने वैसे ही अन्दाज़े से दावा कर लिया कि यह बड़ा है और आपने वैसे ही अन्दाज़े

से दावा कर लिया कि वह बड़ा है। तहकीक किसी ने नहीं की। तो मालूम हुआ कि ज़बान से बात करने में तहकीक नहीं और फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसे की आदत है। इसकी मौजूदगी में अगर आपको कुछ ज़िक्र और वज़ीफ़ा बताऊँगा तो कुछ हासिल नहीं होगा जब तक यह आदत ख़त्म न हो, और यह आदत इस तरह ख़त्म होगी कि एक बार तुम्हें सबक़ मिल जाए कि इसका क्या नतीजा होता है? इसलिए वापस जाओ और पैमाईश करने के बाद फिर वापस आना तो बात चलेगी।

आजकल की पीरी-मुरीदी

आजकल तो पीरी-मुरीदी यह हो गयी है कि कुछ वज़ीफ़े और तस्बीहात बता दिए और कुछ ज़िक्र बता दिए और ख़्वाब की ताबीर बता दी और यह बता दिया कि फ़लाँ मक़सद के लिए यह पढ़ो और फ़लाँ मक़सद के लिए यह पढ़ो। यह पीरी-मुरीदी हो गयी। हालाँकि पीरी-मुरीदी का असल मक़सद था "नफ़्स का सुधार"। अब उनको सारी उम्र के लिए ऐसी नसीहत हो गयी कि अब आईन्दा किसी फ़ुज़ूल बहस में नहीं पड़ेंगे।

अरे भाई! अगर यह पता भी चल जाए कि यह बड़ा है या वह बड़ा है तो क्या हासिल? दुनिया में क्या फ़ायदा हुआ? और आख़िरत में क्या फ़ायदा? इसलिए यह चीज़ इनसान को ख़्वाह-मख़्वाह वक़्त ज़ाया करने की तरफ़ ले जाती है और आख़िरकार गुनाहों में मुब्तला कर देती है। मिर्ज़ा साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने यह ऐसा सबक़ दे दिया कि आईन्दा कभी उम्र भर बहस नहीं की होगी।

मज़हबी बहस व मुबाहसा

कभी-कभी यह बहस व मुबाहसा मज़हब के नाम पर और दीन के नाम पर होता है। ऐसे सवालात जो न क़ब्र में पूछे जाएँगे, न हश्र में और न क़ियामत में। न अल्लाह तआ़ला के यहाँ उसकी पूछ-ताछ होगी। उसके ऊपर लम्बी-चौड़ी बहस चल रही है और मुनाज़रे हो रहे हैं और उसके नतीजे में इधर का भी वक़्त बरबाद हो रहा है और उधर का भी वक़्त

बरबाद हो रहा है। यह बहस और भी ज़्यादा ख़तरनाक है। हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं:

"यह बहस व मुबाहसा इल्म के नूर को ख़त्म कर देता है।"

फ़ालतू अक़्ल वाले

अकबर इलाहाबादी मरहूम कहते हैं:

मज़हबी बहस मैंने की ही नहीं
फ़ालतू अक़्ल मुझ में थी ही नही

मतलब यह है कि फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसे का काम वह करे जिसके पास फ़ालतू अक़्ल हो और फ़ालतू अक़्ल मुझ में थी ही नहीं। जिस मसले का सवाल न क़ब्र में होगा न हश्र में न क़ियामत में, न अल्लाह तआला कभी पूछेंगे और उसके बारे में लम्बी-चौड़ी बहसें कर रहे हैं। उसके अन्दर वक़्त को बरबाद कर रहे हैं। हालाँकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुज्जत बाज़ी से और फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसे से मना फ़रमाया है। और अफ़सोस यह है कि हमारे समाज के अन्दर यह फ़ुज़ूल बहस व मुबाहसा बेइन्तिहा फैल गया है। इसका नतीजा यह है कि जो दीन के ज़रूरी मसाइल और अहकाम थे उनसे तो लोग जाहिल रह गए। उनका पता नहीं और फ़ुज़ूल बहसों के अन्दर पड़े हैं। तारीख़ी बहसों के अन्दर मुब्तला हैं। जैसे अब इसमें बहस हो रही है कि यज़ीद की मग़फ़िरत होगी या नहीं होगी? और फ़ासिक़ था कि नहीं था? भाई! तुम से कोई क़ब्र में उसके बारे में पूछेगा? या तुम से पूछकर अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत करेंगे? या तुम्हारे ऊपर उसके आमाल की ज़िम्मेदारी है कि जिसकी वजह से इस बात पर बहस हो रही है कि उसकी मग़फ़िरत होगी या नहीं होगी?

यज़ीद के फ़ासिक़ होने के बारे में सवाल का जवाब

मेरे वालिद माजिद से किसी ने एक बार सवाल किया कि हज़रत यज़ीद फ़ासिक़ था या नहीं था? वालिद साहिब ने फ़रमाया कि भाई मैं

क्या जवाब दूँ कि फ़ासिक़ था या नहीं, मुझे तो अपने बारे में फ़िक्र है कि पता नहीं मेरा क्या अन्जाम होना है। दूसरों के बारे में मुझे क्या फ़िक्र जो अल्लाह तआला के पास जा चुके हैं। क़ुरआन करीम का इरशाद है:

तर्जुमाः यह उम्मत है जो गुज़र गई। उनके आमाल उनके साथ तुम्हारे आमाल तुम्हारे साथ। उनके आमाल के बारे में तुमसे सवाल नहीं किया जाएगा। (सूरः ब-क़रह् आयत 134)

बहरहाल! क्यों इस बहस के अन्दर पड़कर अपना भी वक़्त बरबाद करते हो और दूसरों का भी वक़्त बरबाद करते हो कि किसकी मग़फ़िरत होगी और किसकी नहीं होगी। इस तरह के अनगिनत मसले हमारे समाज के अन्दर ख़ूब फैले हुए हैं और इस पर हुज्जत बाज़ी हो रही है। बहसें हो रही हैं। मुनाज़रे हो रहे हैं। किताबें लिखी जा रही हैं। वक़्त बरबाद हो रहा है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इन फ़ुज़ूल की बहसों से मना फ़रमाया है।

बिना ज़रूरत ज़्यादा सवालात करने की मनाही

दूसरा लफ़्ज़ भी इसके साथ है। वह है "व कस्रतुस्सवालि" सवालों की कसरत से मना फ़रमाया है। जिस आदमी को इस बात की फ़िक्र नहीं होती कि जो काम की बात है वह करे और फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ करे, उसके दिल में सवालात बहुत पैदा होते हैं और वह कसरत से सवाल करता रहता है। सवाल वह करो जिसका ताल्लुक़ तुम्हारी अ़मली ज़िन्दगी से है। सवाल वह करो जिसके बारे में तुम्हें यह मालूम करना है कि यह हलाल है या हराम? जायज़ है या नाजायज़? यह काम करूँ या न करूँ? बाक़ी गुज़रे ज़माने के बारे में सवालात और फ़ुज़ूल बातों के बारे में दूसरे सवालात! उनका कुछ हासिल नहीं।

अहकाम की हिक्मतों के बारे में सवालात

मैं यहाँ ख़ास तौर पर दो बातों की तरफ़ इशारा करना चाहता हूँ जो हमारे समाज में बहुत ज़्यादा फैली हुई हैं। एक यह कि दीन के अहकाम

की हिक्मतों के बारे में लोग ख़ूब सवालात करते हैं कि यह फ़लाँ चीज़ हराम क्यों है? फ़लाँ चीज़ मना क्यों है? दीन के मामले में यह क्यों है? हमारे समाज में ये सवालात बहुत फैल गए हैं। हालाँकि सहाबा किराम के हालात पढ़ोगे तो यह नज़र आएगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सवालात करते थे लेकिन उसमें "क्यों" का लफ़्ज़ कहीं नहीं मिलेगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से उन्होंने कभी यह नहीं पूछा कि आप जो बात कर रहे हैं यह क्यों कर रहे हैं? या यह हराम कर रहे हैं तो क्यों कर रहे हैं?

एक मिसाल

अब आपको एक मिसाल देता हूँ। वह यह है कि अल्लाह तआ़ला ने सूद हराम किया। यानी क़र्ज़ा देकर उसके ऊपर ज़्यादा पैसे लेना सूद है। क़ुरआन ने इसको हराम कहा और कहा कि जो यह न छोड़े वह अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ से ऐलाने जंग सुन ले। इतनी ज़बरदस्त चेतावनी दी। इसके बारे में तो सहाबा किराम यह सवाल कैसे करते कि यह क्यों हराम है? यहाँ तक कि बाद में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस सूद के हराम होने की तरफ़ ले जाने वाले कुछ मामलात को भी हराम किया। जैसे एक बात यह हराम की कि अगर कोई शख़्स गेहूँ को गेहूँ से बेच रहा है तो चाहे एक तरफ़ गेहूँ आला दर्जे का हो और दूसरी तरफ़ मामूली दर्जे का हो, तब भी दोनों का बराबर होना ज़रूरी है। अगर आला दर्जे का गेहूँ दो सैर हो और अदना दर्जे का चार सैर हो और दोनों को एक-दूसरे के ज़रिये बेचा जाए तो उसको भी आपने हराम और नाजायज़ फ़रमाया।

या मसलन अच्छी खजूर एक सैर और ख़राब खजूर दो सैर अगर आपस में बेची जाएँ तो फ़रमाया कि यह भी हराम है। अब बज़ाहिर तो यह बात अ़क्ल और समझ में नहीं आती कि जब एक अच्छे दर्जे का गेहूँ है तो उसकी क़ीमत भी ज़्यादा है, उसका फ़ायदा भी ज़्यादा है। और जो अदना दर्जे का गेहूँ है उसकी क़ीमत भी कम है और उसका फ़ायदा भी

कम है। तो अदना दर्जे के दो सैर और आला दर्जे का एक सैर मिलाकर बेचा जाए तो इसमें क्या ख़राबी है? लेकिन जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि गेहूँ की ख़रीद व बेच जब गेहूँ से होगी तो बराबर-सराबर होना चाहिए। चाहे आला दर्जे का हो चाहे अदना दर्जे का हो। किसी एक सहाबी ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह हुक्म सुनकर यह नहीं फ़रमाया कि या रसूलुल्लाह क्यों? क्या वजह है? जबकि वह आला है यह अदना है।

वजह यह थी कि लफ़्ज़ 'क्यों' का सवाला सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के यहाँ नहीं था इसलिए कि उन्हें अल्लाह तआ़ला पर और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ऐसा भरोसा था कि जो हुक्म ये दे रहे हैं वह बरहक़ है। हमारी समझ में आए तो बरहक़ है, न आए तो बरहक़ है। हमें हिक्मत (मस्लेहत और वजह) के पीछे पड़ने की हाजत नहीं। जब हमें कह दिया कि हराम है तो हराम है।

यह था सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का तरीक़ा। आज सबसे ज़्यादा "क्यों" का सवाल है। आज जो गेहूँ की बात मैं अ़र्ज़ कर रहा हूँ यह किसी के सामने अ़र्ज़ करके देख लो वह छूटते ही यह कहेगा "क्यों"? यह क्यों नाजायज़ है? सबसे पहले उसका सवाल यही होगा। और इसे तो छोड़ो आजकल जो क़र्ज़ वाला असल सूद है उसके बारे में लोग कहते हैं कि यह हराम क्यों है?

बहरहाल! ज़्यादा सवाल करना एक बड़ी बीमारी है। शरीअ़त के हुक्मों के बारे में यह सवाल करना कि यह क्यों है, यह सवाल ठीक नहीं। अलबत्ता अगर कोई शख़्स वैसे ही अपने इत्मीनान के लिए पूछे तो चलो गवारा है। लेकिन अब तो बाक़ायदा इसी लिए पूछा जाता है कि अगर हमारी समझ में इसकी वजह आ गई तो हराम समझेंगे, अगर नहीं आई तो हराम नहीं समझेंगे। अल्लाह बचाए। यह बात इनसान को कभी-कभी कुफ़्र तक ले जाती है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को महफ़ूज़ रखे। आमीन।

सवाल ज़्यादा करने में एक पहलू और है वह यह है कि ऐसी चीज़ों के बारे में सवाल करना जिनका इनसान के अ़क़ीदे से या उसकी अ़मली ज़िन्दगी से कोई ताल्लुक़ नहीं। या ऐसे ही फ़ुज़ूल सवालात जैसे यह सवाल कि 'यज़ीद' की मग़फ़िरत होगी या नहीं? जंग में कौन बातिल पर था कौन हक़ पर था? तारीख़ी वाक़िआत की तफ़सील पूछना और उनके अन्दर झगड़ा करना। या ऐसे अ़क़ीदों के बारे में सवाल करना जो बुनियादी अ़क़ीदे नहीं हैं। जिनके बारे में आख़िरत और क़ियामत के अन्दर कोई सवाल नहीं होना है, यह ठीक नहीं। बल्कि उनके बारे में सवालात करने के बजाए जो तुम्हारी अ़मली ज़िन्दगी के मामलात हैं, हराम व हलाल के, जायज़ व नाजायज़ के, उनके बारे में सवाल करो। और उनके अन्दर भी जो सवालात ज़रूरी हैं उनके अन्दर अपने आपको सीमित रखो।

हज़रात सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होते तो सवाल बहुत कम किया करते थे। जितनी बात नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सुन ली उस पर अ़मल करते थे। सवाल कम करते थे। लेकिन सवाल जो करते थे वह अ़मली ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ करते थे। अल्लाह तआ़ला हम सब को दीन की सही समझ अ़ता फ़रमाए और इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

क़ुरआन करीम का ख़त्म शरीफ़ और दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا○ اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ○ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ○ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ○ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ○ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ○ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ○ (سورة القدر)

तमहीद

मोहतरम बुज़ुर्गो और अज़ीज़ भाईयो! इस वक़्त कोई लम्बी-चौड़ी तक़रीर करना मक़सद नहीं है लेकिन अल्लाह तआला ने हमें और आपको एक बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है और एक बहुत बड़ा करम फ़रमाया है। इस वक़्त उस इनाम और करम पर शुक्र का इज़्हार करना मक़सूद है और इस मौक़े से फ़ायदा उठाते हुए अल्लाह तआला के सामने अपने मक़ासिद और हाजतों के लिए दुआ करना मक़सूद है।

बहुत बड़े इनाम से नवाज़ा है

वह इनाम यह है कि इस वक़्त अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व

करम से हमें और आपको तरावीह के अन्दर कुरआन करीम मुकम्मल करने की सआदत (सौभाग्य) अता फरमाई है। आज जबकि हमारी निगाहें और हमारे ख़्यालात माद्दा-परस्ती (भौतिकवाद) के माहौल में भटके हुए हैं। इस माहौल में कुरआन करीम की तिलावत और तरावीह की इस नेमत का सही-सही अन्दाज़ा हमें और आपको नहीं हो सकता कि यह अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत हैं। लेकिन जिस वक़्त ये आँखें बन्द होंगी और अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िरी होगी उस वक़्त अन्दाज़ा होगा कि यह कुरआन करीम की तिलावत, यह रोज़ा, यह तरावीह, ये नमाज़ें, यह तस्बीह, ये सब कितनी बड़ी दौलत हैं। इसलिए कि वह दुनिया ऐसी है कि वहाँ की करेंसी रुपया-पैसा नहीं है, बल्कि वहाँ की करेंसी ये नेकियाँ हैं और ये आमाल हैं। ये नमाज़ें, ये रोज़े, ये तस्बीहात, ये तरावीह, ये सज्दे, यह तिलावत, ये चीज़ें वहाँ काम आने वाली हैं। यह रुपया-पैसा वहाँ पर काम आने वाला नहीं।

"तरावीह" एक बेहतरीन इबादत

यूँ तो रमज़ान मुबारक को अल्लाह तआला ने ऐसा बनाया है कि इसका हर-हर लम्हा रहमतों का लम्हा है। बरकतों का लम्हा है। लेकिन रमज़ान मुबारक में जो खुसूसी इबादतें शरीअत ने मुक़र्रर कीं उनमें यह तरावीह की इबादत एक अजीब व ग़रीब शान रखती है। आम दिनों के मुक़ाबले में इन दिनों के अन्दर यह नमाज़ जनाब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सुन्नत क़रार दी है। हदीस शरीफ़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

तर्जुमाः अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए रमज़ान के दिनों में रोज़े फ़र्ज़ किए और मैंने तुम्हारे लिए रमज़ान की रातों में खड़े होकर इबादत करने को सुन्नत क़रार दिया। (निसाई शरीफ़)

यह सुन्नत ऐसी है कि इसके नतीजे में और दिनों के मुक़ाबले में बीस रकअतें ज़्यादा पढ़ने की सआदत हासिल हो रही है, और बीस रकअतों का मतलब यह है कि हर ईमान वाले को रोज़ाना चालीस सज्दे

ज़्यादा करने की तौफ़ीक़ हासिल हो रही है। और अगर पूरे महीने का हिसाब लगाया जाए और महीने को तीस दिन का शुमार किया जाए तो एक महीने में एक ईमान वाले को बारह सौ सज्दे ज़्यादा करने की तौफ़ीक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से अ़ता हो रही है।

"सज्दा" एक बहुत बड़ी नेमत

और यह "सज्दा" ऐसी बड़ी नेमत है कि इस ज़मीन पर इससे ज़्यादा बड़ी नेमत कोई और नहीं हो सकती। हदीस शरीफ़ में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बन्दा अल्लाह से जितना क़रीब सज्दे की हालत में होता है और किसी हालत में इतना क़रीब नहीं होता। कुरआन करीम में सूरः अ़लक़ की आख़िरी आयत जो आयते सज्दा है, उसमें अल्लाह तआ़ला ने इरशाद फ़रमायाः

तर्जुमाः सज्दा करो और मेरे क़रीब आ जाओ। (सूरः अ़लक़ आयत 12)

यह कितना प्यारा और मुहब्बत का जुमला है कि सज्दा करो और मेरे पास आ जाओ। इसलिए अल्लाह तआ़ला की बारगाह में निकटता हासिल करने का इससे बेहतर ज़रिया और कोई नहीं है कि इनसान सज्दे में चला जाए। जिस वक़्त बन्दे ने अल्लाह के सामने सज्दे में पेशानी (माथा) टेक दी तो उस दम सारी कायनात उस पेशानी के नीचे आ गई।

"नमाज़" मोमिन की मेराज है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने "मेराज" अ़ता फ़रमाई जिसमें आपको सातों आसमानों से भी ऊपर "सिद्रतुल्-मुन्तहा" से भी आगे पहुँचाया। जहाँ हज़रत जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम भी आपका साथ न दे सके। उस मुक़ाम तक पहुँचाया। जब आप वापस तशरीफ़ लाने लगे तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ज़बाने हाल से अल्लाह तआ़ला से यह दरख़्वास्त की ऐ अल्लाह! आपने मुझे तो अपनी नज़दीकी का यह मुक़ाम अ़ता फ़रमा दिया लेकिन मेरी उम्मत का क्या होगा? तो उस वक़्त अल्लाह तआ़ला ने आपकी उम्मत के लिए जो तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया वह पाँच नमाज़ों का तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया। और इन

नमाज़ों में सज्दे का तोहफ़ा अ़ता फ़रमाया और यह ऐलान फ़रमा दिया गया कि "नमाज़ मोमिनों की मेराज है" अगरचे हमने आपको यहाँ बुलाकर मेराज अ़ता फ़रमाई लेकिन आपकी उम्मत के लिए यह ऐलान है कि जो बन्दा मेरे नज़दीक होना चाहता है वह जब सज्दे में सर रख देगा तो उसकी मेराज हो जाएगी। जब बन्दे ने सज्दे में अल्लाह तआ़ला के सामने सर रख दिया तो बस इससे बड़ी दौलत और कोई नहीं है।

अल्लाह मियाँ ने मुझे प्यार कर लिया

हमें तो इस दौलत के अ़ज़ीम होने का अन्दाज़ा नहीं है, इसलिए कि दिलों पर ग़फ़लत के पर्दे पड़े हुए हैं। जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला इसकी लज़्ज़त और मिठास अ़ता फ़रमाते हैं उनको पता होता है कि यह सज्दा क्या चीज़ है। हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान साहिब गंज-मुरादाबादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो बड़े दर्जे के औलिया-अल्लाह में से गुज़रे हैं। एक बार हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुए तो वह चुपके से कहने लगे कि मियाँ अशरफ़ अ़ली! क्या बताऊँ जब सज्दा करता हूँ तो ऐसा लगता है कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे प्यार कर लिया। उनको सज्दे के अन्दर यह दौलत नसीब होती थी।

यह पेशानी एक ही चौखट पर टिकती है

हज़रत ख़्वाजा अ़ज़ीज़ुल् हसन साहिब मजज़ूब रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी के ख़ास ख़लीफ़ा थे, उनका एक शे'र है:

अगर सज्दे में सर रख दूँ ज़मीन को आसमाँ कर दूँ

बहरहाल! यह सज्दा मामूली चीज़ नहीं है। यह पेशानी किसी और जगह पर नहीं टिकती। यह पेशानी सिर्फ़ एक ही बारगाह में, एक ही चौखट पर, एक ही आस्ताने पर टिकती है। और उस आस्ताने पर टिकने के नतीजे में उसको जो निकटता की दौलत हासिल होती है उस दौलत के आगे सारी दुनिया की दौलतें हेच (बे-हक़ीक़त) हैं।

अल्लाह तआ़ला अपने कलाम की तिलावत सुनते हैं

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआ़ला ने हमें और आपको रोज़ाना अपनी नज़दीकी के चालीस मुक़ामात ज़्यादा अ़ता फ़रमाए हैं। हर ईमान वाले को इस तरावीह की बदौलत रोज़ाना अल्लाह की निकटता के चालीस मुक़ामात ज़्यादा हासिल हो रहे हैं। यह मामूली दौलत नहीं।

फिर इस तरावीह में ये अल्लाह की नज़दीकी के मुक़ामात तो थे ही साथ-साथ यह हुक्म दे दिया कि इस तरावीह में मेरा कलाम पढ़कर इसको पूरा करो। हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह तआ़ला किसी चीज़ को इतनी तवज्जोह के साथ नहीं सुनते जितनी तवज्जोह के साथ अपने कलाम की तिलावत को सुनते हैं। इसलिए तरावीह के मौक़े पर अल्लाह तआ़ला की रहमत मुतवज्जह होती है। अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी हासिल हो रही होती है।

क़ुरआन शरीफ़ के ख़त्म के मौक़े पर दो काम करें

आज अल्हम्दु लिल्लाह क़ुरआन करीम पूरा हो गया। हमने ग़फ़लत के आ़लम में सुनकर पूरा कर लिया। हदीस शरीफ़ में है कि एक-एक हर्फ़ पर दस-दस नेकियाँ लिखी जाती हैं। इसलिए यह मामूली नेमत नहीं है जो आज ख़त्मे क़ुरआन के मौक़े पर हमें और आपको हासिल हो रही है। इस नेमत का शुक्र अदा करो।

जब भी अल्लाह तआ़ला किसी इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएँ तो बुज़ुर्गाने दीन का कहना है कि उस मौक़े पर दो काम करने चाहिएँ। एक यह कि उस इबादत की तौफ़ीक़ मिलने पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए और यह कहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! मैं तो इस क़ाबिल नहीं था मगर आपने अपने फ़ज़्ल से मुझे इस इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दी। दूसरे यह कि इस्तिग़फ़ार करो और यह कहो कि ऐ अल्लाह! आपने तो मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई थी लेकिन इस इबादत

का जो हक़ था वह मुझसे अदा न हो सका। इस इबादत के जो हुक़ूक़ और आदाब थे वह मैं पूरे न कर सका। इसमें मुझसे कोताहियाँ और ग़लतियाँ हुईं। ऐ अल्लाह! इस पर मुझे माफ़ फ़रमा।

इबादत से इस्तिग़फ़ार

क़ुरआन करीम ने "सूरः ज़ारियात" में अल्लाह के बन्दों की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। चुनाँचे फ़रमायाः

"यानी अल्लाह तआला के नेक बन्दे रात के वक़्त बहुत कम सोते हैं बल्कि रात के अकसर हिस्से में अल्लाह की इबादत में खड़े रहते हैं। और जब सेहरी का वक़्त हो जाता है तो उस वक़्त इस्तिग़फ़ार करते हैं और अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करते हैं।" (सूरः ज़ारियात आयत 17, 18)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा या रसूलल्लाह! यह इस्तिग़फ़ार (मग़फ़िरत और माफ़ी माँगने) का क्या मौक़ा है? इस्तिग़फ़ार तो उस वक़्त होता है जब किसी से कुछ गुनाह हुआ हो। कोई ग़लती हुई हो। यह तो सारी रात इबादत में अल्लाह तआला के सामने खड़े रहे तो अब सुबह के वक़्त इस्तिग़फ़ार क्यों कर रहे हैं? जवाब में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ये लोग अपनी इबादत से इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं कि या अल्लाह! हमने इबादत तो की लेकिन इबादत का जो हक़ था वह हम से अदा न हुआ। इसलिए अपनी इस कोताही और ग़फ़लत पर इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं।

इबादत का हक़ कौन अदा कर सकता है?

इसलिए जिस इबादत की तौफ़ीक़ हो जाए उस तौफ़ीक़ पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो और अपनी कोताही पर इस्तिग़फ़ार करो कि या अल्लाह! इबादत का हक़ हमसे अदा न हो सका। और कौन शख़्स है जो इबादत का हक़ अदा कर सके? जबकि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह हाल था कि सारी रात इस तरह खड़े होकर इबादत करते थे कि पाँव पर वरम (सूजन) आ जाता था। इसके बावजूद आप

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे कि:

"हम इबादत का हक़ अदा न कर सके।"

इसलिए हर इबादत के मौक़े पर शुक्र भी करो और उसके साथ-साथ इस्तिग़फ़ार भी करो।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल

मैंने अपने शैख़ हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का एक क़ौल सुना कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जब कोई बन्दा इबादत करने के बाद यह कहता है "अल्हम्दु लिल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह" तो शैतान कहता है कि इसने मेरी कमर तोड़ दी।

वजह इसकी यह है कि शैतान का हमला दो ही तरह से होता है, या तो इस तरह हमला करता है कि इबादत के नतीजे में इनसान के दिल में गुरूर पैदा कर देता है कि मैंने बड़ी इबादत कर ली। मुझसे बड़ा काम हो गया और मैं तो आला मुक़ाम तक पहुँच गया।

जब दिल में यह गुरूर पैदा हुआ तो सारी इबादत बेकार हो गयी। इस गुरूर का रास्ता लफ़्ज़ "अल्हम्दु लिल्लाह" से बन्द हो गया। और इसके ज़रिये यह इक़रार कर लिया कि जो इबादत मैंने अदा की वह असल में मेरे बाज़ू की कुव्वत का करिश्मा नहीं है, बल्कि ऐ अल्लाह! यह इबादत आपके करम और तौफ़ीक़ से अन्जाम पाई है।

रमज़ान की इबादतों पर शुक्र अदा करो

कितने लोग ऐसे हैं कि रमज़ान मुबारक आया और चला गया लेकिन इसके बावजूद उनके घर में पता नहीं चला कि कब रमज़ान मुबारक आया था और कब चला गया। लेकिन अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल व करम है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें उन लोगों में से नहीं बनाया। अल्लाह तआ़ला का करम है कि उसने हमारी सलाहियत के अनुसार हमीं जैसी-तैसी इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। रोज़े रखने की, तरावीह पढ़ने की,

तिलावत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इस पर शुक्र अदा करो और कहो "अल्हम्दु लिल्लाह" ऐ अल्लाह! आपका करम और शुक्र है कि आपने हमें यह इबादत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

बहरहाल! शैतान का एक हमला तो दिल में घमण्ड पैदा करने के ज़रिये होता है।

अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करो

शैतान का दूसरा हमला यह होता है कि वह इनसान के दिल में यह ख़्याल डालता है कि तेरी नमाज़ क्या? तेरा रोज़ा क्या? तूने नमाज़ क्या पढ़ी, तूने टक्करें मारीं और ग़फ़लत के आलम में नमाज़ पढ़ ली और रोज़ा रख लिया। तूने इबादत का हक़ अदा नहीं किया। यह ख़्याल डालकर उसके अन्दर मायूसी पैदा कर देता है। इस मायूसी का तोड़ "अस्तग़्फ़िरुल्लाह" है। यानी बेशक इबादत के अदा करने में मेरी तरफ़ से कोताही हुई लेकिन मैं तो कोताहियों का पुलिन्दा हूँ। ऐ अल्लाह! इन कोताहियों की तरफ़ से मैं आपके सामने इस्तिग़फ़ार करता हूँ। और इस्तिग़फ़ार की ख़ासियत यह है कि जिस कोताही से इस्तिग़फ़ार किया जाए अल्लाह तआला उस कोताही को नामा-ए-आमाल से मिटा देते हैं। इसलिए जो शख़्स इस्तिग़फ़ार करने का आदी हो उसकी कोताहियाँ और गुनाह नामा-ए-आमाल से मिटते रहते हैं।

इसलिए फ़रमाया कि जो शख़्स इबादत करने के बाद ये दो कलिमात ज़बान से अदा कर ले- एक "अल्हम्दु लिल्लाह" और दूसरे "अस्तग़्फ़िरुल्लाह"। ऐ अल्लाह! आपकी तौफ़ीक़ पर शुक्र है और मेरी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार है। तो उसके बाद वह इबादत अल्लाह तआला की बारगाह में इन्शा-अल्लाह क़बूल हो जाएगी और शैतान की कमर टूट जाएगी।

उनकी रहमत पर नज़र रहनी चाहिए

अल्लाह का शुक्र है! अल्लाह तआला ने हमें अपने फ़ज़्ल व करम से

रमज़ान मुबारक में इबादत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई। हमारी तरफ़ से ग़फ़लत ही ग़फ़लत है। कोताही ही कोताही है। लेकिन बक़ौल हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब के, हम अपनी ग़फ़लत और कोताही को देखें या उनकी रहमत को देखें। अरे उनकी रहमत ऐसी बड़ी और ज़बरदस्त है कि जिसकी कोई हद व सीमा नहीं। उसके मुक़ाबले में हम अपनी कोताहियों को क्यों लेकर बैठ जाएँ और इसका मुराक़बा क्यों करें? अरे हम अल्लाह की रहमत का मुराक़बा (ध्यान) करें।

बहरहाल! आज हम यहाँ दो काम करने के लिए जमा हुए हैं- एक उसकी तौफ़ीक़ पर शुक्र अदा करने के लिए और दूसरे अपनी कोताहियों पर इस्तिग़फ़ार करने के लिए। इन्शा-अल्लाह अगर हमने ये दो काम कर लिए तो फिर अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआ़ला ने जो अनवार व बरकतें, जो तजल्लियात, जो रहमतें और जो अज्र व सवाब इस तरावीह में और क़ुरआन करीम की तिलावत में रखा है इन्शा-अल्लाह हमें और आपको उससे मेहरूम नहीं फ़रमाएँगे।

दुआ़ की क़बूलियत के मौक़े जमा हैं

आज की रात रमज़ान मुबारक की रात है। अ़श्रा-ए-अख़ीरा (आख़िरी दशक) की भी रात है और अ़श्रा-ए-अख़ीरा की भी 'ताक़' रात है (ताक़ रात उसको कहते हैं जो बे-जोड़ हो जैसे इक्कीस, तैईस, पच्चीस, सत्ताईस वग़ैरह) जिसमें शबे क़द्र होने की भी उम्मीद है, और क़ुरआन करीम के ख़त्म का मौक़ा भी है। इसलिए अल्लाह तआ़ला की रहमत से उम्मीद है कि इस मौक़े पर जो दुआ़ की जाएगी इन्शा-अल्लाह तआ़ला ज़रूर क़बूल होगी। हदीस शरीफ़ में आता है कि कभी-कभी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत की हवाएँ चलती हैं और उन हवाओं के चलने के दौरान जो बन्दा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करता है तो अल्लाह तआ़ला की रहमत उसको ढाँप लेती है। उम्मीद है कि ये लम्हे भी अल्लाह तआ़ला की रहमत की हवाओं के लम्हे हैं। इन्शा-अल्लाह जो दुआ़ की जाएगी वह दुआ़ क़बूल होगी।

ख़ास तवज्जोह से दुआ करें

अब हम सब मिलकर एहतिमाम (ख़ास तवज्जोह और ध्यान) के साथ अल्लाह तआला से दुआ करते हैं और इस दुआ के अन्दर अपनी ज़ाती हाजतों को भी अल्लाह तआला से माँगें, अपने यार-रिश्तेदारों के लिए भी दुआ करें। अपने दोस्त व अहबाब के लिए भी दुआ करें। अपने मुल्क व क़ौम के लिए भी दुआ करें। पूरी मुस्लिम दुनिया इस समय दुश्मनों से घिरी हुई है इसके लिए दुआ करें कि अल्लाह तआला इन दुश्मनों से इस्लाम को बचाए। जितने लोग हैं जो इस वक़्त मुख़्तलिफ़ मुल्कों में अल्लाह तआला के रास्ते में दीन की ख़िदमत और इस्लाम के लिए कोशिश कर रहे हैं, उनके लिए दुआएँ फ़रमाएँ कि अल्लाह तआला उनकी मुश्किलों को दूर फ़रमाए और उनको कामयाबी अ़ता फ़रमाए। आमीन।

सामूहिक दुआ भी जायज़ है

दुआ में अफ़ज़ल यह है कि हर आदमी व्यक्तिगत तौर पर दुआ करे। बस वह हो और उसका अल्लाह हो। तीसरे आदमी का बीच में वास्ता न हो, और इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ सुन्नत नहीं है। लेकिन जहाँ मुसलमान जमा हों और वहाँ सब मिलकर इकट्ठे दुआ कर लें तो यह भी कोई नाजायज़ बात नहीं है, इसलिए कि कभी-कभी आदमी के दिल में बहुत-सी दुआएँ नहीं आतीं तो वह दूसरे की दुआ पर "आमीन" कह देता है तो अल्लाह तआला उसको भी उस दुआ की बरकतें अ़ता फ़रमा देते हैं। इसलिए इस वक़्त इज्तिमाई (सामूहिक) दुआ की जा रही है, इसमें पहले वे दुआएँ की जाएँगी जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित हैं, उसके बाद उर्दू में अपनी हाजतों की दुआएँ होंगी, उसके बाद हर शख़्स अपनी-अपनी हाजत अल्लाह तआला से माँगेगा।

दुआ से पहले दुरूद शरीफ़

सब हज़रात पहले तीन-तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लें।

अल्लाहुम्-म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलि मुहम्मदिन् कमा

सल्ले-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम्-म सल्लि अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अल्लाहुम्-म सल्लि अला मुहम्मदिंव्-व अला आलि मुहम्मदिन् कमा सल्लै-त अला इब्राही-म व अला आलि इब्राही-म इन्न-क हमीदुम् मजीद।

अ़रबी में दुआएँ

रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-सना व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन। रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल् आख़ि-रति ह-स-नतंव्-व क़िना अ़ज़ाबन्नार। रब्बना ला तुज़िग़् कुलूबना बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्-लदुन्-क रह्मतन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब।

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्तईनु-क अ़ला ताअ़ति-क। अल्लाहुम्-म अ-इन्ना अ़ला ज़िक्रि-क व शुक्रि-क व हुस्नि इबादति-क। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क तमामल् आ़फ़ियति व नस्अलु-क दवामल् आ़फ़ियति व नस्अलुकश्शुक्-र अ़लल् आ़फ़ियति। अल्लाहुम्मक्फ़िना बि-हलालि-क अ़न् हरामि-क, व अग़्निना बिफ़ज़्लि-क अ़म्मन् सिवा-क या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलुकत्तौफ़ी-क़ लिमहाब्बि-क मिनल् आमालि व सिद्क़त्तवक्कुलि अ़लै-क व हुस्नज़्ज़न्नि बि-क। अल्लाहुम्मफ़्तह् मसामि-अ़ कुलूबिना लिज़िक्रि-क वर्ज़ुक़्ना ताअ़-त-क व ताअ़-त रसूलि-क व अ़-मलन् बिकिताबि-क। अल्लाहुम्मज्अ़ल्ना नख़्शा-क क-अन्ना नरा-क अ-बदन् हत्ता नल्क़ा-क व अस्इद्ना बितक़्वा-क व ला तुश्क़िना बिमअ़्सियति-क या अर्हमर्राहिमीन।

अल्लाहुम्मक़्सिम् लना मिन् ख़श्यति-क मा तहूलु बिही बैनना व बै-न मआ़सी-क। व मिन् ताअ़ति-क मा तुबल्लिग़ुना बिही जन्नत-क। व मिनल् यक़ीनि मा तुहव्विनु बिही अ़लैना मसाइबद्दुन्या। व मत्तिअ़्ना बिअस्माअ़िना व अब्सारिना व क़ुव्वातिना मा अह्यैतना। वज्अ़ल्हुल् वरि-स मिन्ना। वज्अ़ल् सारना अ़ला मन् ज़-ल-मना। वन्सुर्ना अ़ला मन् आ़दाना। व ला

तज्अल् मुसीब-तना फ़ी दीनिना व ला तज्अलिद्दुन्या अक्ब-र हम्मिना व ला मब्ल-ग़ इल्मिना व ला ग़ाय-त रग़्बतिना व ला तुसल्लितु अ़लैना मन् ला यर्हमुना।

अल्लाहुम्-म ज़िद्ना व ला तन्क़ुस्ना व अक्रिम्ना व ला तुहिन्ना व अअ्तिना व ला तह्रिम्ना व आसिर्ना व ला तुअ्सिर् अ़लैना। व अर्ज़िना वर्-ज़ अ़न्ना या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म आनिस् वह्श-तना फ़ी क़ुबूरिना। अल्लाहुम्मर्हम्ना बिल्-क़ुरआनिल् अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु लना इमामंव्-व नूरंव्-व हुदंव्-व रह्मतन्। अल्लाहुम्-म ज़क्किर्ना मिन्हु मा नसीना व अ़ल्लिम्ना मिन्हु मा जहिल्ना वर्ज़ुक़्ना तिलाव-तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि वज्अ़ल्हु लना हुज्जतंय्-या रब्बल् आ़लमीन।

अल्लाहुम्मज्अ़ल् क़ुरआनल् अ़ज़ी-म रबी-अ़ क़ुलूबिना व जिला-अ अह्ज़ानिना या अर्हमर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क अन् तुख़ल्लितल् क़ुरआ-न बिलुहूमिना व दिमाइना व अस्माइना व अब्सारिना व तस्तअ्मिलु बिही अज्सादना बिहौलि-क व क़ुव्वति-क या अर्हमर्राहिमीन।

या अल्लाहु या अर्हमर्राहिमी-न, या ग़यासल् मुस्तग़ीसी-न, या अमानल् मुस्तजीरी-न, या मुजी-ब दअ्वतिल् मुज़्तरी-न, रहमानद्दुन्या व रहीमहा, इर्हम्हा बिरह्मतिन् तुग़्नीना बिहा अ़न् रह्मति मन् सिवा-क।

अल्लाहुम्-म ला तज्अ़ल्ना बिदुआइ-क शक़िय्या। व कुन् लना रऊफ़न् रहीमन्। या ख़ैरल् मस्ऊली-न, व या ख़ैरल् मुअ्ती-न इलै-क नश्कू ज़ुअ्-फ क़ुव्वतिना व क़िल्ल-त हीलतिना। रब्बना तक़ब्बल् दअ्व-तना वग़्सिल् हौब-तना व अजिब् दअ्व-तना व सब्बित् हुज्ज-तना व सद्दिद् लिसानना या अर्हमर्राहिमीन।

अल्लाहुम्-म इन्ना नस्अलु-क मिन् ख़ैरि मा स-अ-ल-क मिन्हु अ़ब्दु-क व नबिय्यु-क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्ल-म व नऊज़ु बि-क मिन् शर्रि मस्तआज़-क मिन्हु अ़ब्दु-क व नबिय्यु-क मुहम्मदुन् सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। व सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। आमीन। बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन।

उर्दू में दुआएँ

या अर्हमर्राहिमीन! अपने फ़ज़्ल व करम से और अपनी रहमत से हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमारी तमाम ख़ताओं को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारी तमाम कोताहियों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे तमाम अगले-पिछले, छोटे-बड़े, खुले-छुपे, हर तरह के गुनाहों को माफ़ फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमको और हमारे घर वालों को और हमारे मुताल्लिक़ीन और अहबाब सबको अपनी मग़फ़िरते कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! आपने रमज़ान मुबारक के महीने में जिन बेशुमार इनसानों की मग़फ़िरत के वायदे फ़रमाए हैं, ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से हमें भी उनमें शामिल फ़रमा। ऐ अल्लाह! हमारे इस्तेहक़ाक़ (पात्रता) पर नज़र न फ़रमा, अपनी रहमत पर नज़र फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपने फ़ज़्ल व करम से मग़फ़िरते कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! रमज़ान के आख़िरी दशक में जिन लोगों को आप जहन्नम से रिहाई का परवाना अ़ता फ़रमाते हैं, ऐ अल्लाह! हम सबको और हमारे घर वालों को और मुताल्लिक़ीन और अहबाब को उनमें शामिल फ़रमा। या अर्हमर्राहिमीन! जो अनवार और बरकतें आपने इस मुबारक महीने में रखी हैं वे सब हमें अ़ता फ़रमा और उनसे मेहरूम न फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस मुबारक महीने में जिन-जिन इबादतों की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई यह सब आपका करम व इनाम है। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से उनको क़बूल फ़रमा। और जो कोताहियाँ हो गईं अपनी रहमत से उनको माफ़ फ़रमा।

ऐ अल्लाह! हमारी तरावीह को क़बूल फ़रमा, तिलावते क़ुरआने करीम को अपनी रहमत से क़बूल फ़रमा और जो ज़िक्र की तौफ़ीक़ हुई अपनी रहमत से उसको क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! रमज़ान की जो बाक़ी घड़ियाँ हैं उनसे सही मायने में फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। उन घड़ियों

में गुज़रे हुए की तलाफ़ी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपने फ़ज़्ल व करम से तमाम मौजूद हज़रात को उनके तमाम जायज़ मक़ासिद में कामयाबी अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो लोग अपनी-अपनी हाजतें लेकर आए हैं अपनी रहमत से उन सबको पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! हम में और हमारे मुताल्लिक़ीन और अहबाब में जो-जो बीमार हैं उन सबको अपनी रहमत से शिफ़ा-ए-कामिला अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! उनको तन्दुरुस्ती अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो तंगदस्त हैं उनकी तंगदस्ती को दूर फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो मोहताज और ज़रूरत-मन्द हैं उनकी ज़रूरत और मोहताजी दूर फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो क़र्ज़ में फंसे हुए हैं उनके क़र्ज़ों की अदायगी का सामान फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो बेरोज़गार हैं उनको रोज़गार अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो बे-औलाद हैं उनको नेक औलाद अ़ता फ़रमा।

या अर्हमर्राहिमीन! जो-जो दुआएँ इस मुबारक महीने में माँगने की तौफ़ीक़ हुई अपनी रहमत से उन सारी दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस रमज़ान के दिनों में और रातों में जो दुआएँ करने की हमें तौफ़ीक़ हुई ऐ अल्लाह! उन सब दुआ़ओं को क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! जो हाजतें हमारे दिलों में थीं और हम उनको आप से नहीं माँग सके उनको क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस रमज़ान के महीने में आपके नेक बन्दों ने जहाँ कहीं जो दुआएँ माँगीं और वे दुआएँ हमारे हक़ में मुनासिब और बेहतर हों ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से उनको भी हमारे हक़ में क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! किसी रहमत से मेहरूम न फ़रमा।

या अर्हमर्राहिमीन! अपने फ़ज़्ल व करम से इस क़ुरआन करीम को जिन-जिन लोगों ने पढ़कर ख़त्म किया उनको दुनिया व आख़िरत में बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। उनको इस क़ुरआन करीम के अनवार व बरकतें अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! सुनने वालों को भी इसकी बरकतों से नवाज़ दे।

ऐ अल्लाह! अपने कलिमे को सरबुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह! आ़लमे

इस्लाम दुश्मनों के जिस शिकन्जे में है अपनी रहमत से उस शिकन्जे को तोड़ दे। ऐ अल्लाह! मुसलमानों को सरबुलन्दी अ़ता फ़रमा, इज़्ज़त व शौकत अ़ता फ़रमा। अपने दीन की तरफ़ लौटने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से दिलों को फेर दे, दिलों में दीन की बड़ाई और मुहब्बत पैदा फ़रमा और दीन पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।

ऐ अल्लाह! सब कुछ आपके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है। दिल भी और दिमाग़ भी आपके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है। आमाल भी आपके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में हैं। हमारे दिलों हमारे दिमाग़ों और हमारे आमाल को दीन के रुख़ पर डाल दे। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से इस्लाम को सरबुलन्द फ़रमा। मुसलमानों को सरबुलन्द फ़रमा। ऐ अल्लाह! तमाम मौजूद हज़रात की हाजतों को पूरा फ़रमा। उनकी दिली मुरादों को पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! जिन-जिन लोगों ने हमसे दुआ के लिए कहा है उन सब की दिली मुरादों को पूरा फ़रमा।

ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से इस दारुल उलूम को ज़ाहिरी और बातिनी तरक़्क़ी अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम को दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! यहाँ के उस्तादों और तालिब-इल्मों और मुलाज़िमीन को सच्चाई और इख़्लास अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम को दीन की ख़िदमत के लिए क़बूल फ़रमा। ऐ अल्लाह! यहाँ से आपके दीन के ख़ादिम और अल्लाह वाले पैदा फ़रमा। दीन पर अ़मल करने वाले पैदा फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के तमाम मन्सूबों को आ़फ़ियत और सहूलियत के साथ पर्दा-ए-ग़ैब से पूरा फ़रमा। ऐ अल्लाह! इसकी मुश्किलों को आसान फ़रमा।

ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के बानी (संस्थापक) हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि को जन्नतुल् फ़िरदौस में बुलन्द मुक़ामात अ़ता फ़रमा। ऐ अल्लाह! इस दारुल उलूम के साथ सहयोग करने वालों को दुनिया और आख़िरत में बेहतरीन बदला अ़ता फ़रमा। आमीन सुम्-म आमीन।

ऐ अल्लाह हमारी इन सब दुआओं को क़बूल फ़रमा। आमीन।

रब्बना तक़ब्बल् मिन्ना इन्न-क अन्तस्समीउल् अ़लीम। व तुब् अ़लैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम। व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन। आमीन। बिरह्मति-क या अर्हमर्राहिमीन।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ